wKZve` `Av

kvqLj nv`xm
gdZx Rmxg Ïxb ivngvbx

cKvkbvq
Avj nv`x` cvewj ‡KkÝ
‡g‡Uv nvDwRs, ewQjv †ivW, †gvnv¤§`ci, XvKv|
www.jumuarkhutba.wordpress.com
www.furqanmedia.wordpress.com

wKZve` `Av

kvqLj nv`xm

gdZx gnv¤§` RmxgÏxb ivngvbx

c_g cKvk: †g 2012 Bs
wØZxq cKvk: A‡±vei 2012 Bs
(me¯Ë msiw¶Z)

gj¨: 60 (lvU) UvKv gvÎ|

Kitabud Dua
Shaikh Mufti Jashimuddin Rahmani
Al Hadid Publications
Price: 60.00 Tk. US.$3.00

wKZve` `Av 3

Dcnvi

Avgvi

k‡×q/†m‡ni.................................†K

ÔwKZve` `AvÕ eBwU Dcnvi w`jvg|

Dcnvi`vZv

Avcbvi msM‡n ivLvi gZ †jL‡Ki Ab¨vb¨ wKZve

1) wKZvej Cgvb
2) wKZveZ ZvInx`
3) wKZvej AvKvC`
4) wKZvem mvIg
5) wKZveh hvKvZ
6) wKZvej n¾
7) ZvInx‡`i gj wk¶v
8) evBAvZ I mxiv‡Z g¯—vwKg
9) gi‡bi Av‡M I c‡i
10) wKZve` `Av
11) Øxb Kv‡q‡gi mwVK c_
12) wmqvg I C`: weke¨vcx GKB Zvwi‡L cvjb Kiv m¤e wK?

wKZve` `Av 5

mPxcÎ

c_g Aa¨vq

wØZxq Aa¨vq:

we‡kl mgq I we‡kl ¯’v‡b cvV Kivi `Av

wKZve` `Av 8

wKZve` `Av 9

wKZve` `Av 10

ZZxq Aa¨vq

mKvj mÜ¨vi `Av

PZ_ Aa¨vq
mvjv‡Zi `Av

cÂg Aa¨vq

wewfb wec‡`-আপদে আল্লাহর নিকট পানাহ চাIqv

wKZve` `Av 15

Iô Aa¨vq

mßg Aa¨vq
i“KBqv (Svo-dK)

Aóg Aa¨vq

KiAvb gvRx‡` ewYZ KwZcq ¸i“ZcY© `Av

wKZve` `Av 18

wKZve` `Av 19

wemmিল্লাহির
ivngvwbi
ivnxg

wKZve` `Av 21

c_g Aa¨vq

`Avi A_:

اَلدُّعَاءُ (`Av) k‡ãi A_ WvKv, Avnevb Kiv, Av‡e`b Kiv| Bmjv‡gi cwifvlvq `Av ejv nq: আল্লাহ (সুবঃ) কে ডাকা তাঁর কাছে কোন কিছু Pvlqv, Av‡e`b Kiv, cv_Yv Kiv| `Av ïa আল্লাহর জন্যই খাস। অন্য কারো কাছে দুআ করা যাবে না। আল্লাহর কাQ hv cv_Yv Kiv nq Ges আল্লাহ ছাড়া অন্য কারো পক্ষে তা পূরণ করা সম্ভবপর নয়, এমন জিনিষ আল্লাহ ছাড়া অন্য কারো Kv‡Q Pvlqv, cv_Yv Kiv nvivg| †`e-†`ex, gZx-cwZgv, P›`-mh, Mn-b¶Î, cxi-Ijx, bex-ivmj, `viMvnIqvjv-gvRviIqvjv, dKxi-nvKxi Kv‡iv Kv‡QB †Kvb wKQ PvIqv hv‡e bv| G cm‡½ cweÎ KiAv‡b Bikv` n‡q‡Q:

قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُم مِّن دُونِهِ فَلَا يَمْلِكُونَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنكُمْ وَلَا تَحْوِيلًا

Ò†n bex! আপনি তাদেরকে বলুন, ‘আল্লাহ ছাড়া †ZvgivÐ hv‡`i‡K (Dcvm¨) g‡b Ki Zv‡`i‡K Avnevb Ki| Zviv †Zv †Zvgv‡`i `:L-``kv `i Kivi I cwieZb Kivi ¶gZv iv‡L bv|Ó (miv Bmiv 17:56)

GB আয়াতে পরিস্কারভাবে বলা হয়েছে যে, আল্লাহ Qvov †KD Kv‡iv wec`-Avc`, `:L-``kv `i Ki‡Z cv‡i bv| †m †hB †nvK bv †Kb| Avi cvi‡eB ev wK K‡i? †Kbbv mwóK‡ji mK‡jB dKxi I Afvex| ïagvÎ আল্লাহর কাছে যা আছে Zvi cwZB gLv‡c¶x| Aার আল্লাহ (সুবঃ) অভাব g³| wZwb abx| wZwb Kv‡iv Kv‡Q gLv‡c¶x নন। এ প্রসঙ্গে আল্লাn (me:) cweÎ KiAv‡b Bikv` K‡i‡Qb:

يَـا أَيُّهَا النَّاسُ أَنْتـُـمُ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللَّـهِ وَاللَّـهُ هُوَ الْغَـنِـيُّ الْحَمِيدُ

"হে মানুষ, তোমরা আল্লাহর প্রতি মুখাপেক্ষী আর আল্লাn AgLv‡c¶x I ckswmZ|Ó (miv dwZi 35:15)

GB আয়াতে স্পষ্টভাবে আল্লাহ (সুবঃ) সম¯— gvbe RwZ‡K dKxi e‡j †NvlYv K‡i‡Qb| cxi dKxi, gix` dKxi| Bgvg dKxi, g³v`x dKxi| ivRv dKxi, cRv dKxi| `iMv Iqvjv dKxi, `Mv Iqvjv dKxi| bex-ivmj dKxi| Ijx-AvIjxqv dKxi| gvRvi Iqvjv dKxi, evRvi Iqvjv dKxi| mK‡jB dKxi| abx n‡"Qb ïaমাত্র আল্লাহ (সুবঃ)। মানুষের শান হলো wf¶v Kiv| Avi Aআল্লাহর শান হলো ভিক্ষা †`Iqv| gvb‡li kvb n‡jv Zvi Kv‡Q PvB‡j ‡m bv‡Lvk nq| ZvQvov আল্লাহর পরিবর্তে যাদের Kv‡Q `Av-প্রার্থণা করা হয় তারাও তো আল্লাহর

ev›`v| Zv‡`i †Kvb wKQ †`Iqvi ¶gZv †bB| cweÎ KiAv‡b Bikv` n‡q‡Q:

إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ عِبَادٌ أَمْثَالُكُمْ

"আল্লাহ ছাড়া যাদেরকে তোমরা ডাক তারা †Zvgv‡`i gZB ev›`v|Ó (Avivd 7:194)

Aciw`‡K আল্লাহর শান হলো তার কাছে না চাইলে অসন্তুষ্ট হন। তাই আল্লাহ (সুব:) তার ev›`v‡`i Dci Avek¨K K‡i w`‡q‡Qb Zviv Zvi Kv‡Q `Av Ki‡e, cv_Yv Ki‡e| Avi wZwb বান্দাদের চাহিদা পূরণ করবেন। এজন্য আল্লাহ (me:) cweÎ KiAv‡b Bikv` K‡i‡Qb:

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ

Ò‡Zvgv‡`i ie e‡jb: †Zvgiv Avgv‡K WvK, Avwg †Zvgv‡`i Rb¨ mvov w`e|Ó (miv Mvwdi 40:60)

GB Avqv‡Z আল্লাহ (সুবঃ) তাঁর কাছে সরাসwi Av‡e`b Kivi Rb¨ ûKg K‡i‡Qb| †Kvb fvqv gva¨g MnY Ki‡Z e‡jbwb| hviv Avল্লাহ (সুবঃ) Gi Kv‡Q mivmwi `Av-cv_Yv K‡i bv Zv‡`i cwZ আল্লাহ (সুবঃ) অসন্তুষ্ট হন। রাসূলুল্লাহ (সাঃ) Bikv` K‡i‡Qb:

مَنْ لَمْ يَسْأَلِ اللهَ يَغْضَبْ عَلَيْهِ

Ò‡h e¨w³ আল্লাহর কাছে চায় না তিনি তার প্রতি ivM K‡ib|Ó (wZiwgwh 3372)

ivmj (mv:) Gi mvnvexMY G welqwU Abaveb করেছিলেন তাই তুচ্ছ বিষয় হলেও আল্লাহর কাছে PvB‡Zb| mwóK‡ji Kv‡iv Kv‡Q mvnvexMY cv_bvi n¯‡K mgcmwwiZ Ki‡Zb bv| GUv G Kvi‡YB m¤e n‡qwQj †h, তাঁরা আল্লাহর সাথে wbweo m¤úK M‡owQ‡jb, Zvi ‰bKU¨ jvf K‡iwQ‡jb Ges wZwbI Zv‡`i‡K ‰bKU¨ c`vb

করেছিলেন। কেননা তাঁদের দৃষ্টি ছিল আল্লাহর এই evYxi cwZ | wZwb Bikv` K‡ib:

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ

ÒAvi hLb Avgvi ev›`vMY †Zvgv‡K Avgvi m¤ú‡K wRÁvmv Ki‡e, Avwg †Zv wbðq wbKUeZx| Avwg AvnŸvbKvixi Wv‡K mvov †`B, hLb †m Avgv‡K Wv‡K| mZivs Zviv †hb Avgvi Wv‡K mvov †`q Ges Avgvi cwZ Cgvb Av‡b| Avkv Kiv hvq Zviv mwVK c‡_ Pj‡e|Ó (miv evKviv 2:186)

আল্লাহর নিকট দুআ করার we‡kl GKwU ghv`v আছে; বরং দুআ আল্লাহর কাছে সর্বাধিক সম্মানিত বিষয়। দুআর মাধ্যমে কখনো আল্লাহর dvqmvjv‡K cwieZY Kiv nq| nv`x‡m Bikv` n‡q‡Q:

wKZve` `Av 27

عَنْ سَلْمانَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ سَلَّمَ لاَ يَرُدُّ الْقَضَاءَ إِلَّا الدُّعَاءُ

Òmvjgvb (iv:) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বলেছেনঃ দুআ ছাড়া অন্য কিছু আল্লাহর ফয়সালাকে wdiv‡Z cv‡i bv|Ó (wZiwgwR 2139)

`Av Kej nIqvi KviY cvIqv †M‡j Ges Kej bv nIqvi evav `ifxZ n‡j gmwjg e¨w³i `Av গ্রহণ করা হয়। রাসূলুল্লাহ (সাঃ) Bikv` K‡i‡Qb `AvKvix wZbwU wel‡qi †h †Kvb GKwU Aek¨B cv‡e| nv`xmwU n‡jv:

مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَدْعُو بِدَعْوَةٍ لَيْسَ فِيهَا إِثْمٌ وَلاَ قَطِيعَةُ رَحِمٍ إِلاَّ أَعْطَاهُ اللَّهُ بِهَا إِحْدَى ثَلاَثٍ: إِمَّا أَنْ تُعَجَّلَ لَهُ دَعْوَتُهُ ، وَإِمَّا أَنْ يَدَّخِرَهَا لَهُ فِي الآخِرَةِ وَإِمَّا أَنْ يَصْرِفَ عَنْهُ مِنَ السُّوءِ مِثْلَهَا، قَالُوا: إِذًا نُكْثِرُ؟ قَالَ: اللَّهُ أَكْثَرُ.

“যে মুসলিম আল্লাহর কাছে এমন কোন দুআ Ki‡e, †h `Avq †Kvb ¸bv‡ni welq m¤ú³ _vK‡e bv| †Kvb AvZxqZvi m¤úK wQb Kiv n‡e না; আল্লাহ (me:) Zv‡K wbg wjwLZ wZbwUi †h †Kvb GKwU `vb Ki‡eb: 1. Zvi `Av `wbqv‡ZB Kej Kiv n‡e| 2.A_ev Av‡Liv‡Z Zvi Rb¨ Dnv mÂq K‡i ivLv n‡e| 3. A_ev Zvi `Avi Abi/c GKwU wec` †_‡K Zv‡K g³ Kiv n‡e| Zviv (mvnvevMY) ej‡jb, Zvn‡j Avgiv †ekx †ekx `Av Kie| wZwb (mv:) বললেন, আল্লাহ Av‡iv †ekx `vbKvix|Ó (Av`vej gdiv` 710; wZiwgwR 3575)

`Avi cKvi‡f`:

`Av `ÖcKvi: 1. Bev`‡Zi `Av| †hgb: mvjvZ, mvIg BZ¨vw` Av`vq Kivi mgq |

2. wbw`óƒfv‡e †Kvb e¯‘ PvIqvi Rb¨ `Av Kiv| †hgb: رَبِّ هَبْ لِي مِنَ الصَّالِحِينَ Ò‡n Avgvi ie! Avgv‡K GKwU †bK mšÍvb `vb Ki|Ó

m‡evÜg Avgj:

m‡evÜg Avgj n‡"Q cweÎ KziAvb †ZjvIqvZ, তারপর উত্তম হচ্ছে যিকির ও আল্লাহর প্রশংসা gjK K_v, Zvici n‡"Q `Av I cv_bv| Z‡e ¯^vb I mgq †f‡` KL‡bv wbg ghv`vi KvR D"P ghv`vi Kv‡Ri †P‡q †ekx DËg| †hgb AvivdvZ w`e‡m (Avivdv‡Zi gq`v‡b) KziAvb cv‡Vi †P‡q `Av Kiv DËg| dih mvjv‡Zi ci KziAvb †ZjvIqv‡Zi PvB‡Z nv`x‡m cgwYZ whwKi-AvhKvi cvV KivB DËg|

`Avi Av`e:

†h mKj Kvi‡Y `Av Kej nIqvi †ekx †ekx Avkv Kiv hvq Zv `B fv‡M wef³:

1.Rv‡nix (cKvk¨) KviY| 2. ev‡Zbx (AcKvk¨) KviY|

1. `Av Kej nIqvi Rv‡nix KviY mgn:

(K) `Avi c‡e wKQ †bK Avgj Kiv| †hgb: mv`vKv, mvjvZ BZ¨vw`| wKejvgLx n‡q nvZ উঠিয়ে দুআ করা। প্রথমে আল্লাহর উপযু³ cksmv Kiv| †h wel‡q `Av Ki‡e Zvi mv‡_ mvgÄm¨ রেখে আল্লাহর নাম ও গুণাবলী চয়ন করে তার Dwmjv Ki‡e| hw` RvbvZ cv\_bv Ki‡Z Pvq Z‡e Zvi AbMn I Ki"Yv wf¶vi gva¨‡g `Av Ki‡e| hw` Rv‡jg ev AZ¨vPvixi Dci e` `Av করতে চায় তবে আল্লাহর গুণবাচক নাম রাহমান, ivnxg, কারীম ইত্যাদি শব্দ উল্লেখ করবে না; বরং

Avj RveŸvi (gnv¶gZvevb) Avj Kvnnvi (gnv cZvckvjx), Avj ÔAvhxh (gnv civµgkvjx) ইত্যাদি শব্দ উল্লেখ করবে। (খ) দুআ কবূল হওয়ার আরো উল্লেখযোগ্য কারণ হচ্ছে : দুআর প্রথমে, g‡a¨ I †k‡l ivmj (mv:) Gi cwZ `i“` cvV Kiv| (M) wb‡Ri cv‡ci ¯xKv‡iwv³ †`qv| (N) আল্লাহ (সুবঃ) যে সমস্ †bÔAvgZ `vb K‡i‡Qb Zvi ïKwiqv Av`vq Kiv| (O) †h mg¯ mg‡q `Av Kej n‡e e‡j cgwYZ n‡q‡Q Zv wbevPb K‡i Kv‡R jvMv‡bv| †hgb: iv‡Zi GK ZZxqvsk অবশিষ্ট থাকতে আল্লাহ দুনিয়ার আকাশে †b‡g Av‡mb| Avhvb I BKvg‡Zi ga¨eZx mg‡q, Ihi ci, wmR`vq wM‡q, mvjv‡Z mvjvg †divi‡bvi c‡e, mvjv‡Zi †k‡l, KiAvb LZg Kivi mgq, †gvi‡Mi WvK †kvbvi mgq, mdive¯vq| gvhjg Gi `Av, wec`M‡¯i `Av,

mšv‡bi Rb¨ wcZv-gvZvi `Av| †Kvb gmwjg fvB‡qi Abcw¯‡Z Zvi Rb¨ we‡kl `Av, h‡×i mgq kÎ“i m¤§LeZx nIqvi mgq `Av| RgÔAvi w`b, we‡kl K‡i G w`‡bi (AvQ‡ii ci) †kl mg‡q `Av Kej nq| ivgv`vb gv‡mi BdZv‡ii mgq, †kl iv‡Z mvnix LvIqvi mgq, jvBjvZj K`‡i Ges AvivdvZ w`e‡m| mvavi Yfv‡e mKj gmwR‡`, KvÔevi wbK‡U-we‡kl K‡i gjZwh‡gi Kv‡Q, gvKv‡g Beivnx‡gi wbKU, Qvdv I gviIqv cvnv‡o, n‡¾i mgq AvivdvZ, gh`wjdv I wgbvi gv‡V| hghg cwb cvb Kivi mgq|

2. `Av Kej nIqvi ev‡Zbx KviY mgn:

`Avi c‡e LwUfv‡e ZvIev Kiv, Kv‡iv m¤ú` AvZ¥mvr K‡i _vK‡j Zv †diZ †`qv| cvbvnvi, †cvlvK, evm¯vb cfwZ nvjvj KvgvB †_‡K

nIqv| †ekx †ekx †bKKvR Kiv, nvivg welq †_‡K `‡i _vKv, m‡›`n I Lv‡nkv‡Zi welq †_‡K cZ-cweÎ _vKv| `Av Ae¯vq Aši উপস্থিত রাখা। আল্লাহর প্রতি দৃঢ় বিশ্বাস রাখা। দুআ কবূল হওয়ার দৃঢ় আশা পোষন করা। আল্লাহর kiYvcb nIqv I Zvi Kv‡Q KvKwZ-wgbwZ Kiv| একই কথা বারবার উল্লেখ করা। বিষয়টিকে তাঁর Kv‡Q †mvc` Kiv| wZwb Qvov Kv‡iv cwZ å“‡¶c bv Kiv Ges `Av Kej n‡e Gic `p wekvm ivLv|

†h mKj Kvi‡Y `Av Kej nq bv:

gvbl KL‡bv `Av K‡i wKš Zv Kej Kiv nqbv ev †`ix‡Z Kej Kiv nq| Zvi A‡bK KviY Av‡Q| †hgb : Aআল্লাহর কাছে দুআ করে আবার গাইরুল্লাহর কাছেও দুআ করে। দুআয় খুটি নাটি বিষয় উল্লেখ করা: যেমন জাহান্নামের গরম থেকে,

msKxYZv †_‡K, AÜKvi †_‡K...Avkq cv_bv Kiv| eis ïagvÎ Rvnvbvg †_‡K Avkq Kvgbv KivB h‡_ó| gmwjg e¨w³ wb‡Ri Dci ev Ab¨ Kv‡iv Dci Ab¨vqfv‡e e``Av Kiv| ¸bv‡ni Kv‡R I AvZ¥xqZvi m¤úK wQ‡bi Rb¨ `Av করা। আল্লাহর ইচ্ছার সাথে দুআকে সম্পর্ক করা। যেমনঃ হে আল্লাহ! তুমি যদি চাও তবে আমাকে মাফ কর ইত্যাদি। বরং দৃঢ়ভাবে আল্লাহর কাছে PvB‡e| `Av Kej nIqvi Rb¨ Zvovûov Kiv| †hgb e‡j : GZ `Av Kijvg wKš‘ Kej nj bv| Kvš I wei³ n‡q `Av Kiv †Q‡o †`qv| Mv‡dj I D`vm Aš‡ii `Av Kiv। আল্লাহর সামনে `Avi Av`e i¶v bv Kiv| ivmj (mv:) R‰bK †jvK‡K mvjv‡Zi g‡a¨ `Av Ki‡Z ïb‡jb, †m ivmj (mv:) Gi Dci `i“` c‡owb| ZLb ivmj (mv:) ej‡jb :

عَجِلَ هَذَا ثُمَّ دَعَاهُ فَقَالَ لَهُ أَوْ لِغَيْرِهِ إِذَا صَلَّى أَحَدُكُمْ فَلْيَبْدَأْ بِتَحْمِيدِ رَبِّهِ جَلَّ وَعَزَّ وَالثَّنَاءِ عَلَيْهِ ثُمَّ يُصَلِّي عَلَى النَّبِيِّ صلى الله عليه وسلم ثُمَّ يَدْعُو بَعْدُ بِمَا شَاءَ

ÒG †jvKwU Le Zvovûov Kij| Zvici Zv‡K †W‡K ej‡jb : †Kvb gvbl hLb `Av Ki‡Z Pvq †স যেন প্রথমে আল্লাহর প্রশংসা ও গুণকীর্তন করে, Zvici ivmj (mv:) Gi Dci `i“` cvV K‡i Gici hv B”Qv †hb `Av K‡i|Ó (Ave `vD` 1483) †Kvb Am¤e e¯i Rb¨ `Av Kiv| †hgb wPiKvj `wbqv‡Z †e‡P _vKvi `Av Kiv| `Avq KwÎgfv‡e KweZv AvIov‡bv। আল্লাহ (me:) Bikv` K‡ib :

ادْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ

Ò†Zvgiv †Zvgv‡`i ie‡K WvK Abbq-webq K‡i I Pwcmv‡i| wbðq wZwb cQ›` K‡ib bv

mxgv j•NbKvix‡`i ‡K|Ó (miv Avʻivd 7:55)
Be‡b Ave¨vm (iv:) e‡jb, KweZv †gjv‡bvi gZ K‡i `Av co‡e bv| Awg †`‡LwQ, ivmj (mv:) I Zvi mvnvexMY Gi †_‡K †e‡P _vK‡Zb| দুআয় অতিরিক্ত চিৎকার করা। আল্লাহ (me:) Bikv` K‡ib :

وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذَٰلِكَ سَبِيلًا

ÒZwg †Zvgvi mvjv‡Z ¯^i DPP K‡iv bv Ges Zv‡Z g`I K‡iv bv; eis Gi gvSvgwS c_ Aej¤^b Ki|Ó (miv evbx BmivCj 17:110)
`Avi †¶‡Î c_gZ: আল্লাহর প্রশংসা Kiv| wØZxqZ: ivmj (mv:) Gi Dci `i“` cvV Kiv| ZZxqZ: ZvIev Kiv I wb‡Ri ¸bv‡ni K_v ¯^xKvi Kiv| PZ_Z: আল্লাহ যে নেআমত দান K‡i‡Qb Zvi KZÁZv Av`vq Kiv|

wØZxq Aa¨vq:

we‡kl mgq I we‡kl ¯'v‡b cvV Kivi `Av

weQvbvq Mg‡bi ci `Av:

c_g `Av:

اللَّهُمَّ أَسْلَمْتُ وَجْهِي إِلَيْكَ وَفَوَّضْتُ أَمْرِي إِلَيْكَ وَأَلْجَأْتُ ظَهْرِي إِلَيْكَ رَغْبَةً وَرَهْبَةً إِلَيْكَ لَا مَلْجَأَ وَلَا مَنْجَا مِنْكَ إِلَّا إِلَيْكَ اللَّهُمَّ آمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِي أَنْزَلْتَ وَبِنَبِيِّكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ

D"PviY: "আল্লাহুম্মা আস্‌লামতু অজ্‌হী ইলাইকা, Iqv dvIqvRZ Avgix BjvBKv, Iqv AvjRvÕZ hvnix BjvBKv ivMevZvI Iqv ivnevZvb BjvBKv, jv- gvjRvAv Iqv jv- gvbRvAv wgbKv ইল্লা ইলাইকা, আল্লাহুম্মা আ-gvbZ wewKZv- বিকাল্লাযী আন্‌যালতা ওয়া বি নাবিয়্যিকাল্লাযী AvimvjZv|Ó

“হে আল্লাহ! আমি নিজেকে তোমার প্রতি স‡c w`jvg, Avi Avgvi mg¯— Kvhµg †Zvgvi D‡Ï‡k¨B wb‡e`b Kijvg, Avgvi gLgÛj †Zvgvi w`‡K ¯vcb Kijvg, Avgvi cô‡`k‡K †Zvgvi w`‡KB SwK‡q w`jvg, Avi Gme wKQB Kijvg †Zvgvi ing‡Zi Avkvq Ges †Zvgvi kw¯—i f‡q| †Kvb Avkq bvB Ges gw³i †Kvb Dcvq bvB GKgvÎ †Zvgvi Avkq Ges Dcvq Qvov, Awg wekvm ¯vcb K‡iwQ †Zvgvi †mB wKZv‡ei cwZ hv Zwg bvwhj K‡i‡Qv Ges †Zvgvi ivmj (mv:) Gi cwZ hv‡K Zwg †ciY K‡iQ|Ó

nv`xm: Òeviv Be‡b Av‡he (iv:) †_‡K ewYZ তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ (সv:) e‡j‡Qb, Zwg Ngv‡bvi D‡Ï‡k¨ weQvbvq hvIqvi c‡e mvjv‡Zi ARi b¨vq AR Ki Ges Wvb Kv‡a kqb Ki I

Dc‡iv³ `AvwU cvV Ki| hw` Zwg †mB iv‡Z gviv hvI Zvn‡j Bmjv‡gi Dci gviv †M‡j Ges Ngv‡bvi c‡e GB K_wUB †hb nq †Zvgvi †kl K_v| Ó (eLvix 247)

wØZxq `Av:

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِى أَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَكَفَانَا وَآوَانَا فَكَمْ مِمَّنْ لاَ كَافِىَ لَهُ وَلاَ مُؤْوِىَ

D”PviY: “আল্‌হামদু লিল্লা-হিল্লাযী আত্বআ’মানা- Iqv mvKv-bv- Iqv Kvdv-bv- Iqv Av-Iqv-bv-, dvKvg wg¤§vb jv- Kv-wdqv jvû Iqv jv- gÔweqv|Ó

Òmকল প্রশংসা সেই আল্লাহর জন্য যিনি Avgv‡`i‡K Avnvi Kwi‡q‡Qb, cvb Kwi‡q‡Qb, Avgv‡`i c‡qvRb cY K‡i‡Qb Ges Avgv‡`i Avkq c`vb K‡i‡Qb| A_P Ggb eû‡jvK

i‡q‡Q hv‡`i cwiZß Kivi †KD †bB, hv‡`i Avkq `vbKvix †KD †bB|Ó

**nv`xm:** Avbvm (iv:) †_‡K ewYZ wZwb e‡jb, ivmjল্লাহ (সাঃ) যখন বিছানায় যেতেন তখন Dc‡iv³ `AvwU cvV Ki‡Zb| (gmwjg 7069)

ZZxq `Av:

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبِّى بِكَ وَضَعْتُ جَنْبِى وَبِكَ أَرْفَعُهُ إِنْ أَمْسَكْتَ نَفْسِى فَاغْفِرْ لَهَا وَإِنْ أَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهِ عِبَادَكَ الصَّالِحِينَ

D"PviY: Òmenv-নাকাল্লা-û¤§v ieŸx weKv IhvÕAvZ hv¤x Iqv weKv AvidvÕD Bb AvgmvKZv bvdmx, dvMwdi jvnv- Iqv Bb AvimvjZvnv- dvndvhnv- wegv Zvndvh wenx ÕBev-`vKvm mv‡jnxb|Ó

“হে আল্লাহ! আপনার পবিত্রতা বর্ণনা করছি। Avcbvi bv‡gB Awg Avgvi cvk‡`k‡K kh¨vq ¯vcb KiwQ| Avi Avcbvi bvg wb‡qB Awg Dnv †_‡K DVv‡ev| hw` Avcwb Avgvi cvY KeR K‡ib, Z‡e Avcwb Zv‡K ¶gv Ki‡eb| Avi hw` †Q‡o †`b (ewwP‡q iv‡Lb) Zvn‡j Zvi †ndvRZ Ki‡eb †hfv‡e Avcwb Avcbvi mrKgkx j ev›`v‡`i †ndvRZ K‡i _v‡Kb|Ó

**nv`xm:** “আবু হুরাইরা (রাঃ) বলেন, রাসূলুল্লাহ (mv:) e‡j‡Qb, †Zvgiv (Ngv‡bvi c‡e) weQvbv †S‡o wb‡e †Kbbv †Zvgiv Rvbbv, nq‡Zv weQvbvq †Kvb ¶wZKi e¯ _vK‡Z cv‡i| Ges বিসমিল্লাহ পাঠ করবে। এবং নিদ্রার পূর্বে ডান Kv‡a ïi‡q Dc‡iv³ `AwU cvV Ki‡e|Ó (gmwjg 7067)

PZ_© Avgj: 33 evi menv-নাল্লা-n 33 evi আলহামদুলিল্লা-হ এবং ৩৪ বার আল্লা-û AvKevi co‡Z co‡Z Nyg‡q hvIqv|

**nv`xm:** Avjx (iv:) †_‡K ewYZ, wZwb e‡jb, ফাতেমা (রাঃ) রাসূলুল্লাহ (সাঃ) এর নিকট গেল একজন খাদেমা চেয়ে আনার জন্য। রাসূলুল্লাহ (mv:) Zv‡K ej‡jb, Avwg wK †Zvgv‡K GKRb Lv‡`gv †_‡KI DËg wRwbl `vb Ki‡ev? (Zvn‡jv) Zwg Ngv‡bvi c‡e 33 evi menv-নাল্লা-n ৩৩ বার আলহামদুলিল্লা-n Ges 34 evi আল্লা-û AvKevi co‡e| Avjx (iv:) e‡jb, Gici GB Avgj Avwg KL‡bv cwiZ¨vM Kwi bvB| GgbwK wmddx‡bi h‡×i iv‡ZI Avgj K‡iwQ|Ó (eLvix 5362)

Ngv‡bvi c‡e cvV Kivi `Av:

اللَّهُمَّ بِاسْمِكَ أَمُوتُ وَأَحْيَا

D”PviY: “আল্লা-û¤§v wemwgKv AvgZ Iqv AvnBqv-|Ó

“হে আল্লাহ! †Zvgvi bv‡g gZ¨ eiY KiwQ, †Zvgvi bv‡gB RxweZ ne|Ó

Ng †_‡K †R‡M covi `Av:

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُورُ

D”PviY: আল্হামদু লিল্লা-হিল্লাযী আহ্ইয়া-bv-evÕ`v gv- Avgv-Zvbv- Iqv BjvBwnb bki|Ó

Òmg¯— প্রশংসা সেই আল্লাহর জন্য যিনি Avgv‡`i‡K gZ¨i ci RxweZ K‡i‡Qb|Ó

nv`xm: Òûhvqdv (iv:) †_‡K ewYZ, wZwb e‡jb রাসূলুল্লাহ (সাঃ) যখন বিছানায় শুতেন তখন হাতকে গালের নিচে রাখতেন এবং (উল্লেখিত

`Av¸‡jv) co‡Zb Ges wb`v n‡Z †R‡M GB `AvwU cvV Ki‡Zb|Ó (eLvix 6314)

wb`v Ae¯vq fxZ n‡j cvV Kivi `Av:

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ غَضَبِهِ وَعِقَابِهِ وَشَرِّ عِبَادِهِ وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ وَأَنْ يَحْضُرُونِ

D"PviY: ÒAvÕEh weKwjgv-তিল্লা-wnZ Zv-¤§wZ wgb Mvhwenx Iqv ÕBKv-wenx Iqv kviwi ÕBev-w`nx Iqv wgb nvgvhv-wZk kvqv-Zxwb Iqv AvB Bqvnhi/b|Ó

“আল্লাহর পরিপূর্ণ বাণী সমূহ দ্বারা আশ্রয় প্রার্থনা KiwQ Zvi †µva I kw¯- †_‡K | Zvi ev›`v‡`i Awbó †_‡K| kqZv‡bi IqvmIqvmv †_‡K I Zvi Dcw¯wZ †_‡K|Ó

**nv`xm:** ÒAvgi Be‡b ïAvBe (iv:) Zvi wcZv †_‡K wZwb Zvi `v`v †_‡K eYbv K‡ib,

রাসূলুল্লাহ (mv:) e‡j‡Qb, hw` †Zvgv‡`i †KD N‡gi wfZ‡i fq cvI Zvn‡j Dc‡iv³ `AvwU cvV Ki‡e|Ó (wZiwgwh 3528)

iv‡Z wb`v †_‡K RvMZ n‡j cvV Kivi `Av:

لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَلاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ

D"PviY: jv- Bjv-হা ইল্লাল্লা-û Iqvn`vû jv kvixKv jvû, jvûj gjK Iqv jvûj nvg`, Iqv ûqv ÔAvjv- কুল্লি শাইয়্যিন ক্বাদীর। সুবহা-নাল্লা-wn ওয়াল হাম্‌দুলিল্লা-wn Iqv jv- Bjv-হা ইল্লাল্লা-û ওয়াল্লা-û AvKevi, Iqvjv- nvIjv Iqvjv- কুওয়্যাতা ইল্লা- বিল্লা-n|

"আল্লাহ ব্যতিত কোন ইলাn †bB, wZwb GKK, Zvi †Kvb kixK †bB, mg¯— KZZ Zvi Ges

mKj cksmvi AwaKvix GKgvÎ wZwb, wZwb সবকিছু করতে সক্ষম। আল্লাহ (সুবঃ) মহা পবিত্র, সকল প্রশংসা আল্লাহর জন্যই। আল্লাn e¨wZZ কোন ইলাহ নেই। আল্লাহ সব ‡_‡K eo| mKj ¶gZv I kw³ ZviB|Ó

nv`xm:** Dev`v Be‡b mv‡gZ (i**v:) e‡jb, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বলেছেন, যেই ব্যি³ i iv‡Z Ng †f‡½ †Mj Ges GB `AwU cvV Ki‡jv †m †hB দুআ করবে আল্লাহ (সুবঃ) তা কবুল করবেন। সে যদি অজু করে (নফল) সালাত আদায় করে আল্লাহ (me:) Zvi mvjvZ‡K Kej Ki‡eb|Ó (Ave `vD` 5062)

¯‡c Lvivc wKQ †`L‡j KiYxq:

ÒAাবু কাতাদা (রাঃ) থেকে বর্ণিত, তিনি রাসূলুল্লাহ (সাঃ) থেকে বর্ণনা করেন, ভাল স্বপ্ন আল্লাহর পক্ষ †_‡K Avi g›` ¯c kqZv‡bi c¶ †_‡K| hLb

†Kvb e¨w³ Lvivc ¯^c¦ †`L‡e †m †hb evg w`‡K থুথু নিক্ষেপ করে এবং আল্লাহর কাছে পানাহ চায়। Zvn‡j kqZvb Zvi †Kvb ¶wZ Ki‡Z cvi‡e bv|Ó (eLvix 6986)

LvIqvi c‡ei `Av:

بِسْمِ اللَّهِ

D”PviY: বিস্‌মিল্লা-n|

Òআল্লাহর নামে শুরু করছি।Ó

ïi“‡Z `Av f‡j †M‡j GB `Av cvV Ki‡e:

بِسْمِ اللَّهِ أَوَّلَهُ وَآخِرَهُ

D”PviY: বিস্‌মিল্লা-wn AvIqvjvû Iqv Av-wLivn|

“আল্লাহর নামেই খাওয়া শুরু করছি এবং শেষ Ki‡ev|Ó

nv`xm: ÒAv‡qkv (iv:) †_‡K ewYZ, wZwb e‡jb,

রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বলেছেন, তোমরা খাওয়ার পূর্বে ‘বিসমিল্লাহ’ বলবে আর যদি বলতে ভূলে যাও Zvn‡j (hLbB g‡b co‡e) ZLbB বিসমিল্লা-wn AvD Iqvjvû Iqv Av-wLivûÕ GB `Av cvV Ki‡e|Ó (Ave `vD` 3869)

Lvev‡ii gvSLv‡b cvV Kivi `Av:

اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيهِ وَأَطْعِمْنَا خَيْرًا مِنْهُ

D”PviY: “আল্লা-û¤§v ev-wiK jvbv- dxwn, Iqv AvZÕBgbv- LvBivg wgbû|Ó

“হে আল্লাহ! তুমি আমাদের এই খাদ্যে বরকত দাও Ges Gi †P‡q DËg Lvevi LvIqvi e¨e¯v K‡i `vI|Ó

`a cvb Kivi `Av:

اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيهِ وَزِدْنَا مِنْهُ

উচ্চারণঃ “আল্লা-û¤§v ev-wiK jvbv- dxwn Iqv

wh`bv- wgbû|Ó

"হে আল্লাহ! তুমি আমাদের এই খাদ্যে বরকত দাও Ges Bnv Av‡iv †ekx K‡i `vI|Ó

**nv`xm:** ÒBe‡b AveŸvm (iv:) †_‡K ewYZ, wZwb বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বলেছেন, তোমরা খাবার LvIqvর সময় এই দুআ পাঠ করবে "আল্লা-û¤§v ev-wiK jvbv- dxwn Iqv AvZÔBgbv- LvBivg wgbûÓ Avi `a cvb Ki‡j GB `AwU cvV Ki‡e "আল্লা-û¤§v ev-wiK jvbv- dxwn Iqv wh`bv- wgbûÓ| (Ave `vD` 3732)

Lvevi †kl K‡i †h `Av cvV Ki‡Z nq:

c_g `Av:

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِى أَطْعَمَنِى هَذَا الطَّعَامَ وَرَزَقَنِيهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِنِّى وَلَا قُوَّةٍ

D”PviY: “আল্হাম্দু লিল্লা-হিল্লাযী আত্ব‘আমানী nv-hvZ ZÔqv-gv Iqv ihvK bxwn wgb MBwi nvIwjg wgbx Iqv jv- KI IqwwZb|Ó

“সকল প্রশংসা সেই আল্লাহর জন্য যিনি আমাকে GB cvbvnvi Kiv‡jb Ges Dnvi mvg_© c`vb Ki‡jb, hv‡Z wQjbv Avgvi c¶ †_‡K †Kvb Dcvq-D‡`¨vM, wQjbv †Kvb kw³ mvg_©|Ó

**nv`xm:** Òmvnvj Be‡b gÔAvR Be‡b Avbvm (iv:) তার পিতা থেকে বর্ণনা করেন, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) e‡j‡Qb, †Zvgiv Lvevi †kl K‡i Dc‡iv³ `AvwU cvV Ki‡j †Zvgv‡`i Av‡Mi c‡ii mKj গুনাহ আল্লাহ (সুবঃ) ক্ষমা করে দিবেন।” (Ave `vD` 4025)

wØZxq `Av

الْحَمْدُ لِلَّهِ كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ غَيْرَ مَكْفِيٍّ وَلاَ مُوَدَّعٍ وَلاَ مُسْتَغْنًى عَنْهُ رَبَّنَا

D”PviY: আল্‌হাম্‌দুলিল্লা-wn KvQxivb Zwwq¨evb gev-iKvb dxwn, MBiv gvKwdqwq¨b Iqv jv-gIqvÏvÔwqb Iqv jv- gmZvMbvb ÔAvbû ieŸvbv-|

ÒcvK cweÎ, eiKZgq A‡bK A‡bK cksmv সেই আল্লাহর জন্য। †n Avgv‡`i ie! GB Lv`¨ n‡Z wbwjß n‡Z cviebv, Zv KLbI wPiZ‡i we`vq w`‡Z cvibv, Avi Zv n‡Z AgLv‡cw¶I bv|Ó

**nv`xm:** ÒAve Dgvgv (iv:) †_‡K ewYZ, wZwb বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) hLb `¯‘iLvbv DVv‡Zb ZLb Dc‡iv³ `Avw U co‡Zb|Ó (eLvix 5458)

†gRev‡bi Rb¨ †gngv‡bi `Av:

اللَّهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِيمَا رَزَقْتَهُمْ وَاغْفِرْ لَهُمْ وَارْحَمْهُمْ

D”PviY: আল্লা-û¤§v ewiK jvûg dxgv-ihvKZvûg AMwdi jvûg Iqvi nvgûg|

“হে আল্লাহ! Zwg Zv‡`i‡K †h wiwhK c`vb K‡i‡Qv Zv‡Z Zv‡`i Rb¨ eiKZ c`vb K‡iv, Zv‡`i ¸bvn gvd K‡iv Ges Zv‡`i cwZ AbMn K‡iv|Ó

**nv`xm:** “বনী সুলাইম গোত্রের আবদুল্লাহ বিন বুসর (রাঃ) বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) আমার পিতার wbK‡U Avm‡jb| Lvevi †ck Kiv n‡j wZwb ÔnvBmÕ (†LRi, wN, QvZ †gkv‡bv Lvevi) Avb‡Z ej‡j Zv Avbv n‡jv| Gici cwb Avbv n‡j wZwb cvb K‡i Zvi Wvbcv‡ki e¨w³‡K দিলেন।....খাবারের শেষে আল্লাহর রাসূল (সাঃ) Dc‡iv³ `Av Ki‡jb|Ó (Ave `vD` 3831)

wØZxq `Av:

اللَّهُمَّ أَطْعِمْ مَنْ أَطْعَمَنِى وَأَسْقِ مَنْ أَسْقَانِى

D”PviY: “আল্লা-û¤§v AvZBg gvb AvZÔAvgvbx IqvmwK gvb AvmKv-bx|Ó

অর্থঃ “হে আল্লাহ! Avgv‡K †h Avnvi Kiv‡jv Zwg Zv‡K Avnvi KivI, †h Avgv‡K cvb Kiv‡jv Zv‡K Zwg cvb KivI|Ó

**nv`xm:** ÒwgK`v` (iv:) †_‡K ewYZ wZwb e‡jb, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) (এক মজলিশে খাবার-`vevi Kivi ci) Dc‡iv³ `Av Ki‡jb|Ó (gmwjg 5483)

BdZv‡ii mgq `Av:

ذَهَبَ الظَّمأُ وَابْتَلَّتِ الْعُرُوقُ وَثَبَتَ الأَجْرُ إِنْ شَاءَ اللَّهُ

D”PviY: “যাহাবায্ যমা’উ ওয়াব্ তাল্লাতিল্ ÔDi/K Iqv QvevZvj AvRi“ Bbkv-আল্লা-û|Ó

ÒwccvmV `ifxZ n‡q‡Q, agbx-¸wj wm³ n‡q‡Q, সওয়াব প্রতিষ্ঠিত হয়েছে ইনশাল্লাহ।”

**nv`xm:** ÒBe‡b Igi (iv:) †_‡K ewYZ wZwb বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) যখন ইফতার করতেন ZLb Dc‡iv³ `AwU Ki‡Zb|Ó (Ave `vD` 2359)

Kv‡iv N‡i BdZvi Kivi ci `Av:

أَفْطَرَ عِنْدَكُمُ الصَّائِمُونَ وَأَكَلَ طَعَامَكُمُ الأَبْرَارُ وَصَلَّتْ
عَلَيْكُمُ الْمَلاَئِكَةُ

D”PviY: ÒAvdZviv ÔBb`vKgm mv-ÕBgbv, Iqv AvKvjv ZÔAvgvKgj Aveiv-র, ওয়া সাল্লাত ÔAvjvBKgj gvjv-BKvn|Ó

ÒmIgAv`vqKvixMY †Zvgv‡`i wbKU BdZvi Ki“K, mr†jvKMY †Zvgv‡`i Avnvi MnY Ki“K Ges gvjv‡qKvMY †Zvgv‡`i Rb¨ `Av Ki“K|Ó

**nv`xm:** ÒAvbvm (iv:) †_‡K ewYZ wZwb e‡jb, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) (সাওম অবস্থায়) সাআ’দ ইবনে Dev`v (iv:) Gi wbKU †M‡jb| mvAv` (iv:) i“wU Ges hvBZ‡bi †Zj wb‡q Avm‡jb| রাসূলুল্লাহ (সাঃ) খাবাi ci GB `Av Ki‡jb|Ó (Ave `vD` 3856)

N‡i †_‡K †ei nIqvi `Av:

بِسْمِ اللَّه تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّه لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّه

D"PviY: "বিস্মিল্লা-হি তাওআক্কাল্তু 'আলাল্লা-wn, jv- nvI jv Iqvjv- কুউওয়াতা ইল্লা- বিল্লা-wn|Ó "আল্লাহর নাম নিয়ে তাঁরই উপর ভরসা করে বের হলাম। আল্লাহর অনুগ্রহ ব্যতীত প্রকৃতপক্ষে কোন kw³ mvg_ †bB|Ó

**nv`xm:** ÒAvbvm Be‡b gv‡jK (iv:) e‡jb, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বলেছেন, যখন কোন ব্যি³ Zvi Ni †\_‡K †ei nq Ges wb‡gi `AvwU cvV K‡i ZLb Zvi e¨vcv‡i †NvlYv nq, Ô‡Zvgv‡K †n`vqvZ †`Iqv n‡q‡Q, †Zvgvi c‡qvRb ciY Kiv n‡q‡Q Ges mKj cKvi Awbó †_‡K †Zvgv‡K i¶v Kiv n‡q‡Q| Gici mg¯- kqZvb Zvi †_‡K `‡i m‡i hvq|Ó (Ave `vD` 5097)

wØZxq `Av:

اللَّهُـمَّ إِنِّـى أَعُـوذُ بِـكَ أَنْ أَضِـلَّ أَوْ أُضَـلَّ أَوْ أَزِلَّ أَوْ أُزَلَّ أَوْ أَظْلِـمَ أَوْ أُظْلَـمَ أَوْ أَجْهَلَ أَوْ يُـجْهَلَ عَلَـىَّ

D"PviY: "আল্লা-û¤§v Bbx AvÔE-h weKv Avb আদ্বিল্লা আও উদ্বাল্লা আও আযিল্লা আও উযাল্লা আও Avhwjgv AvI Dhjvgv AvI AvRnvjv AvI BDRnvjv ÔAvjvBq¨v|Ó

"হে আল্লাহ! আমি তোমার কাছে আশ্রয় চাই আমি KvD‡K weåvš— Kwi ev Avgv‡K †KD weåvš— Ki"K ev Awg KvD‡K c`P¨Z Kwi ev Avgv‡K †KD c`P¨Z Ki"K ev Awg Kv‡iv cwZ AZ¨vPvi Kwi ev †KD Avgv‡K AZ¨vPvi Ki"K ev Awg gLZv mjf †Kvb KvR Kwi ev †KD Avgvi Dci A‡kvfbxq wKQ Ki"K Gi †_‡K|Ó

**nv`xm:** ÒD‡¤§ mvjvgv (**iv:**) †_‡K ewYZ wZwb বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) যখনই ঘর থেকে বের n‡Zb Avmgv‡bi w`‡K ZwK‡q GB `Av cvV Ki‡Zb|Ó (Ave `vD` 5096)

N‡i c‡e‡ki `Av:

بِسْمِ اللَّهِ وَلَجْنَا وَبِسْمِ اللَّهِ خَرَجْنَا وَعَلَى اللَّهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا

D”PviY: Òwemmমিল্লা-wn IqvjvRbv- ওয়া বিস্‌মিল্লা-হি খরাজ্‌না ওয়া ‘আলাল্লা-wn ieŸvbv- ZvIqvK Kvjbv-|Ó

“আল্লাহর নামে আমরা প্রবেশ করি, আল্লাহর নামেই Avgiv †ei nB Ges Avgাদের রব আল্লাহর উপরই fimv Kwi| AZ:ci cwievi e‡Mi mvjvg ej‡e|Ó

nv`xm: ÒAve gv‡jK Avj AvkAvix (**iv:**) †_‡K বর্ণিত তিনি বলেন রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বলেছেন, যখন

†Kvb e¨w³ Zvi N‡i c‡ek K‡i ZLb †hb D³ †`vqwU cvV K‡i|Ó (Ave `vD` 5098)

gmwR‡` hvIqvi c‡_ cvV Kivi `Av:

اللَّهُمَّ اجْعَلْ فِي قَلْبِي نُورًا وَاجْعَلْ فِي لِسَانِي نُورًا وَاجْعَلْ فِي سَمْعِي نُورًا وَاجْعَلْ فِي بَصَرِي نُورًا وَاجْعَلْ خَلْفِي نُورًا وَأَمَامِي نُورًا وَاجْعَلْ مِنْ فَوْقِي نُورًا وَمِنْ تَحْتِي نُورًا اللَّهُمَّ وَأَعْظِمْ لِي نُورًا

D”PviY: “আল্লা-û¤§v ÔAvj dx Kvjex biv I IqvR ÔAvj dx wjmv-bx biv I IqvR ÔAvj dx QvgÔqx biv I IqvR ÔAvj dx evmvix biv I IqvR ÔAvj Ljdx biv I Iqv ÔAvgv-gx biv I IqvR ÔAvj wgb dvIKx biv I Iqv wgb ZvnZx bivb, আল্লা-û¤§v Iqv AvÕwRg jx bivb|Ó

“হে আল্লাহ! তুমি আমার অন্‡i bi mwó K‡i `vI, Avgvi hev‡b bi mwó K‡i `vI, Avgvi

keY kw³‡Z I `kb kw³‡Z †R¨vwZ mwó K‡i `vI, Avgvi mvg‡b, Avgvi wcQ‡b, Avgvi Dc‡i, আমার নিচে, আলো সৃষ্টি করে দাও। হে আল্লাহ! Avgv‡K eo AvKv‡ii bi `vb Ki|Ó

**nv`xm:** ÒBe‡b Ave¦vm (iv:) †\_‡KewYZ, wZwb বলেন.... এরপর রাসূলুল্লাহ (সাঃ) সালাতের D‡Ï‡k¨ †ei n‡jb| wZwb ZLb Dc‡iv³ `AvwU cvV Ki‡Q‡jb|Ó (Ave `vD` 1355)

gmwR‡` c‡ek Kivi `Av:

بِسْمِ اللهِ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَي رَسُوْلِ اللهِ اللَّهُمَّ افْتَحْ لِي أَبْوابَ رَحْمَتِكَ

D"PviY: "বিস্‌মিল্লা-wn Iqvm mvjv-Z Iqvm mvjv-g ÔAvjv- রাসূলিল্লাহি, আল্লা-û¤§vd Zvnjx AveIqv-ev ingwZK|Ó

“আল্লাহর নামে প্রবেশ করাছি, দুরুদ ও সালাম বর্ষিত হোক আল্লাহর রাসূল (সাঃ) এর উপর, †n আল্লাহ! আপনি আমার জন্য আপনার রহমতের `iRv¸‡jv L‡j w`b|Ó

‡bvU: mnxn nv`x‡mi gva¨‡g gmwR‡` c‡e‡ki mgq cvPwU mbv‡Zi K_v Rvbv hvq †h¸‡jv n‡jv: 1. Wvb cv w`‡q c‡ek Kiv| 2. ই‘তেকাফের নিয়ত করা। ৩.বিসমিল্লাহ বলা। ৪. রাসূলুল্লাহ (সাঃ) এ প্রতি সালাত ও সালাম পেশ Kiv| 5. gmwR‡` c‡e‡ki `Av cov| †k‡li wZbwU Av`e Dc‡iv³ `AvwU cvV Ki‡jB Av`vq n‡q hv‡e|

gmwR` †_‡K †ei nIqvi `Av:

بِسْمِ اللهِ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَي رَسُوْلِ اللهِ اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ

D”PviY: “বিস্মিল্লা-wn Iqvm mvjv-Z Iqvm mvjv-g ÔAvjv- রাসূলিল্লা-হি, আল্লা-û¤§v Bbx AvmAvjKv wgb dvØwjK|Ó

“আল্লাহর নামে †ei nw”Q `i“` I mvjvg ewIZ হোক আল্লাহর রাসূল (সাঃ) এর উপর। হে আল্লাহ! Awg Avcbvi AbMn Kvgbv KiwQ|Ó

‡bvU: mnxn nv`x‡mi gva¨‡g gmwR` †_‡K †ei nIqvi mgq cvPwU mbv‡Zi K_v Rvbv hvq †h¸‡jv n‡jv: 1. evg cv w`‡q †ei nIqv| 2. nvjvj i“wR DcvR‡Yi wbq‡Z †ei nIqv| 3. বিসমিল্লাহ বলা। ৪. রাসূলুল্লাহ (সাঃ) এর প্রতি mvjvZ I mvjvg cov| 5. gmwR` †_‡K †ei nIqvi `Av cvV Kiv| †k‡li wZbwU Av`e Dc‡iv³ `AvwU cvV Ki‡jB Av`vq n‡q hv‡e|

**`jxj:** mbv‡b Be‡b gvRvn 771 bs nv`x‡m بِسْمِ اللّٰهِ ejvi কথা উল্লেখ রয়েছে। সুনানে আবু দাউদের ৪৬৫ নং হাদীসে রাসূলুল্লাহ (সাঃ) এর উপর দুরুদের কথা উল্লেখ করা হয়েছে। মুসলিম ki‡di 1685 bs nv`x‡m `Av `‡Uvi K_v উল্লেখ করা হয়েছে।

gmwdi‡K we`vq †`qvi `Av:

أَسْتَوْدِعُ اللّٰهَ دِينَكُمْ وَأَمَانَتَكُمْ وَخَوَاتِيمَ أَعْمَالِكُمْ

D"PviY: "আস্ তাওদি'উল্লা-nv `xbvKg Iqv Avgv-bvZvKg Iqv LvIqv-Zxgv AvÔgv-wjKg|

ÒAwg †Zvgv‡`i Øxb, †Zvgv‡`i AvgvbZmgn এবং তোমাদের আমলের সমাপ্তি পর্যায়কে আল্লাহর Dci †Q‡o w`w"Q|Ó

nv`xm: "কা'আব ইবনে আবদুল্লাহ (রাঃ) থেকে বর্ণিত রাসূলুল্লাহ (সাঃ) যখন কোন সৈন্যদলকে

we`vq Rvbv‡Zb ZLb GB `AwU c‡o we`vq Rvbv‡Zb|Ó (Ave `vD` 2603)

gmwdi DË‡i ej‡e:

اَسْتَوْدِعُ كُمُ اللَّهَ الَّذِي لا تَضِيعُ وَدَائِعُهُ

D”PviY: আস্‌তাওদি‘উকুমুল্লা-হাল্লাযী লা- ZvØxÔD A`v-wqÔDn|

ÒAvwg †Zvgv‡`i †mB আল্লাহর হেফাযতে রেখে hw”Q hvi †ndvh‡Z Ae¯’vbKvix †KDB ¶wZM¯Í nq bv|Ó

**nv`xm:** ÒAve ûivBiv (iv:) †_‡K ewYZ wZwb বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) আমার থেকে বিদায় wb‡jb Ges GB `AwU cvV Ki‡jb|Ó (Be‡b gvRvn 2825)

hvb-evn‡b Av‡ivnb Kivi ci `Av:

c_‡g wZbevi اَللّٰهُ اَكْبَرُ ‘আল্লা-û AvKevi Ó ej‡e AZci cvV Ki‡e:

سُبْحَانَ الَّذِى سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ وَإِنَّا إِلَى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ فِى سَفَرِنَا هَذَا الْبِرَّ وَالتَّقْوَى وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضَى اللَّهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هَذَا وَاطْوِ عَنَّا بُعْدَهُ اللَّهُمَّ أَنْتَ الصَّاحِبُ فِى السَّفَرِ وَالْخَلِيفَةُ فِى الأَهْلِ اللَّهُمَّ إِنِّى أَعُوذُ بِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ وَكَآبَةِ الْمَنْظَرِ وَسُوءِ الْمُنْقَلَبِ فِى الْمَالِ وَالأَهْلِ ».

D"PviY: Òmenv-নাল্লাযী ছাখ্খারা লানা- nvhv- Iqvgv- Kbv- jvn gKwibxb, Iqv Bbv- Bjv- iweŸbv- লামুন্ক্বলিবূন, আল্লা-û¤§v Bbv- bvQÔAvjKv dx Qvdwwibv- nv-hvj weiiv IqvZ ZvKIqv-, Iqv wgbvj ÔAvgwwj gv-ZviØv-, আল্লা-û¤§v nvfwfb ÔAvjvBbv- Qvdvivbv- nv-hv-, AZwf ÔAvbv- বু'দাহ্, আল্লা-û¤§v AvŠvm Qv-wne ফিস্ ছাফারি ওয়াল খালীফাতু ফিল্ আহ্লি, আল্লা-

û¤§v Bwb AvÔDhweKv wgb AÕQv-BQ Qvdwi Iqv KvAv-ewZj gvbhwi Iqv QBj gbKvjwe wdj gv-wj Iqvj Avnwj|Ó

“পবিত্রতা বর্ণনা করছি সেই আল্লাহi whwb GUv Avgv‡`i Rb¨ ekxfZ K‡i w`‡q‡Qb hw`I Dnv‡K ekxfZ Ki‡Z Avgiv m¶g wQjvg bv| Avi Avgiv Aek¨B Avgv‡`i cvjbKZvi w`‡K প্রত্যাবর্তন করব। হে আল্লাহ! নিশ্চয় আমরা Avgv‡`i GB md‡i Avcbvi Kv‡Q cY¨ I ci‡nRMvixZv PvB Ges Ggb Avg‡ji ZvIdxK PvB hv‡Z Avcwb mšó| †হ আল্লাহ আমাদের এই mdi‡K mnR K‡i `vI, Zvi `iZ‡K Avgv‡`i জন্য কমিয়ে দাও। হে আল্লাহ সফরে তুমিই Avgv‡`i mv_x Ges M‡n †i‡L Avmv cwiev‡ii রক্ষণাবেক্ষণকারী। হে আল্লাহ! আমরা আপনার Kv‡Q md‡ii Kwš, Kó`vqK †Kvb `k¨ `kb

n‡Z Ges mdi †_‡K wd‡i G‡m cwievi I m¤ú‡`i †Kvb ¶q-¶wZi `kb n‡Z Avkq cv_bv KiwQ|Ó

**nv`xm:** ÒBe‡b Igi (iv:) †\_‡K ewYZ wZwb বলেন, রাসূলুল্লাহ (সা:) যখন সফরের উদ্দেশ্যে Zvi Mvavi Dci Av‡ivnb Ki‡Zb ZLb wZb evi আল্লাহু আকবার পাঠ করতেন এবং উপরো³ `AwU cvV Ki‡Zb|Ó (gmwjg 3339)

bZb †Kvb ¯v‡b †M‡j cvV Kivi `Av:

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

D"PviY: ÒAvÔEh weKwjgv-তিল্লা-wnZ Zv-¤§wZ wgb kvi wi gv- LjvK|Ó

"আমি আল্লাহর পরিপূর্ণ কালেমাসমূহের মাধ্যমে আল্লাহর আশ্রয় প্রার্থণা করছি, তাঁর সৃষ্টি বস্তুর mg`q Awbó †_‡K|Ó

**nv`xm:** ÒLvI jv web‡Z nvKxg Avm mjwgq¨vZv (রাঃ) থেকে বর্ণিত তিনি বলেন, আমি রাসূলুল্লাহ (mv:) †K ej‡Z ï‡bwQ, †h e¨w³ bZb †Kvb ¯v‡b Avm‡jv Ges wb‡gi `AvwU cvV Ki‡jv †m †mLvb †_‡K wd‡i hvIqvi AvM chš †Kvb wRwbl Zvi ¶wZ Ki‡Z cvi‡e bv|Ó (gmwjg 7053)

mdi †_‡K wd‡i Avmvi mg‡qi †`vAv:

md‡i hvIqvi Ges wd‡i Avmvi `Av GKB Z‡e wd‡i Avmvi †¶‡Î †k‡l wb‡æi AskUK msh³ Ki‡Z n‡e:

آيِبُونَ تَائِبُونَ عَابِدُونَ لِرَبِّنَا حَامِدُونَ

D”PviY: ÔAv-Bebv Zv-Bebv ÔAv-we`bv wjiweŸbv- nv-wg`b|Ó

ÒAvgiv GLb mdi †_‡K cZ¨veZY KiwQ Zv Iev Ki‡Z Ki‡Z, Bev`ZiZ Ae¯vq Ges Avgv‡`i i‡ei cksmv Ki‡Z Ki‡Z|Ó

**nv`xm:** Òmd‡i hvIqv Ges mdi †_‡K wd‡i Avmvi `Av GKB Z‡e wd‡i Avmvi `Avi g‡a¨ †k‡li AskwU ms‡hvRb n‡e|Ó (gmwjg 3339)

cvqLvbvq c‡e‡ki `Av:

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ

D"PviY: "আল্লা-û¤§v Bbx AvEhweKv wgbvj LewQ Iqvj Lvev-BQ|Ó

"হে আল্লাহ! তোমার নিকট আশ্রয় কvgbv Kwi-hveZxq `ó Rxb I wRbx †_‡K|Ó

**nv`xm:** ÒAvbvm Be‡b gv‡jK (iv:) †_‡K ewYZ তিনি বলেন, রাসূলুল্লাহ (সা:) যখন টয়লেটে †h‡Zb ZLb GB `AwU cvV Ki‡Zb|Ó (eLvix 6322)

cvqLvbv †_‡K †ei nIqvi †`vqv:

غُفْرانَكَ

D”PviY: Ò¸div-bvKv|Ó

Ò†Zvgvi ¶gv PvB|Ó

**nv`xm:** Avqkv (iv:) †_‡K ewYZ wZwb e‡jb, রাসূলুল্লাহ (সা:) যখন টয়লেট থেকে বের হতেন ZLb Dc‡iv³ `Av cvV Ki‡Zb| (Ave `vD` 30) GLv‡b Av‡iKwU `Av gvb‡li gv‡S eûj cPwjZ Av‡Q| †mwU n‡jv:

غُفْرانَكَ، الحَمْدُ لِلَّهِ الَّذي أَذْهَبَ عَنِّي الأَذَى وَعافَانِي

“হে আল্লvn †Zvgvi ¶gv PvB| mKj cmskv †mB আল্লাহর যিনি আমার থেকে কষ্টদায়ক বস্তু দূর করে w`‡jb Ges Avgv‡K m¯’ K‡i w`‡jb|Ó

nv`x‡mi c_g AskwU mnxn| wKš‘ wØZxq AskwU Be‡b gvRvq `ej mb‡` ewYZ n‡q‡Q| (Be‡b gvRvn 301)

Kvco cwiav‡bi `Av:

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِى كَسَانِى هَذَا الثَّوْبَ وَرَزَقَنِيهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِنِّى وَلاَ قُوَّةٍ

D”PviY: “আল্‌হাম্‌দুলিল্লা-হিল্লাযী কাসা-bx nv-hvQ Qv Iev Iqv ivhvKvbxwn wgb MvBwi nvIwjg wgbx Iqv jv- KDIqwZb|Ó

“সকল প্রশংসা আল্লাহর জন্য যিনি আমাকে ইহা cwiavb Kwi‡q‡Qb Ges Avgvi kw³ I mvg_¨ QvovB wZwb Avgv‡K Bnv `vb K‡i‡Qb|Ó

**nv`xm:** Òmvnvj Be‡b gAvÕh (iv:) Zvi wcZv থেকে বর্ণনা করেন, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বলেছেন, যে e¨w³ Kvco cwiavb K‡i Dc‡iv³ `AwU cvV করলো আল্লাহ (সুবঃ) তার আগের-c‡ii mKj ¸bvn ¶gv K‡i w`‡eb|Ó (Ave `vD` 4025)

bZb Kvco cwiav‡bi `Av:

اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ كَسَوْتَنِيهِ أَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِهِ وَخَيْرِ مَا صُنِعَ لَهُ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهِ وَشَرِّ مَا صُنِعَ لَهُ

D"PviY: "আল্লা-û¤§v jvKvj nvg`, Avšv KvmvIZvbxwn, Avm AvjKv wgb LvBwinx Iqv LvBwi gv- mwbÔAv jvû, Iqv AvÔEhweKv wgb kviwinx Iqv kviwi gv- mwbAvÕ jvû|Ó

"হে আল্লাহ ! তোমারই জন্য সকল প্রশংসা। তুমিই G Kvco Avgv‡K cwi‡qQ| Awg †Zvgvi Kv‡Q Gi g‡a¨ wbwnZ Kj¨vY I GwU †h Rb¨ ‰Zix Kiv n‡q‡Q †mme Kj¨vY cv_bv Kwi| Awg Gi Awbó Ges GwU ˆZixi Awbó †_‡K †Zvgvi Avkq cv_bv KiwQ|Ó

**nv`xm:** ÒAve mvC` L`ix (iv:) †_‡K ewYZ, তিনি বলেনঃ রাসূলুল্লাহ (সাঃ) যখন কোন নতুন

Kvco cwiavb Ki‡Zb ZLb GB `Av cvV Ki‡Zb|Ó (Ave `vD` 4022)

bZb Kvco cwiavbKvix‡K †`‡L covi `Av:

تُبْلِى وَيُخْلِفُ اللَّهُ تَعَالَى

D”PviY: “তুব্লী ওয়া ইউখ্লিফুল্লা-û ZvÔAv-jv-|Ó

যথাসময়ে পুরাতন হয়ে বিনষ্ট হবে এবং আল্লাহ এর ¯jwfwl³ Ki“K|Ó

**nv`xm:** ÒAve mvB` L`ix (iv:) †_‡K ewYZ wZwb বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) এর সাহাবীরা যখনই KvD‡K bZb Kvco cwiavb Kiv Ae¯vq †`L‡Zb ZLbB Zv‡K D‡Ïk¨ K‡i GB `Av cvV Ki‡Zb|Ó (Ave `vD` 4022)

ARi ïi“‡Z cvV Kivi `Av:

Ave ûivBiv (iv:) †_‡K ewYZ wZwb e‡jb, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বলেছেন, যে ব্যি³ AR Ki‡jv bv

Zvi mvjvZ mwVK n‡e bv| Avi †h e¨w³ AR‡Z 'বিসমিল্লাহ' পাঠ করলো না তার অজুও mwVK n‡e bv|Ó (Ave `vD` 101; Be‡b gvRvn 397)

AR †kl K‡i cvV Kivi `Av:

إِلَهَ إِلاَّ اللَّـهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

D"PviY: Òjv-Bjv-হা ইল্লাল্লা-û Iqvn`vû jv-kixKvjvû, Iqv Avbv gnv¤§v`vb ÔAve`û Iqv ivmjû|Ó

"আল্লাহ ব্যতিত কোন ইলাহ নেই, তিনি একক, Zvi †Kvb kixK †bB| Ges gnv¤§` (mv:) Zvi ev›`v I ivmj|Ó

nv`xm: ÒDKev Be‡b Av‡gi (iv;) †_‡K ewYZ তিনি বলেন, আমরা রাসূলুল্লাহ (সাঃ) এর সাথে ছিলাম।....অতপর রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বললেন অজু

†kl K‡i Dc‡iv³ `AwU cvV Ki‡e Zvi Rb¨ RvbvZi AvUwU `iRvB L‡j †`Iqv n‡e| †m †hUv w`‡q B"Qv c‡ek Ki‡e|Ó (gmwjg 577; Ave `vD` 169; wZiwgwh 55)

Av‡iKwU `Av:

Igi (iv:) Gi nv`x‡mi g‡a¨ Dc‡iv³ `Avi mv‡_ Avil GKU †hvM Kiv n‡q‡Q| Avi Zv n‡jv:

اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ التَّوَّابِينَ وَاجْعَلْنِي مِنَ الْمُتَطَهِّرِينَ

উচ্চারণ: আল্লা-û¤§vR ÔAvjbx wgbvZ ZvIIqv-exbv IqvR ÔAvjbx wgbvj gZvZnwnixb|

"হে আল্লাহ আমাকে তাওবাকারী এবং পবিত্র e¨w³‡`i mv‡\_ AšÍf³ K‡i w`b|Ó (wZiwgwh 55)

bZb ei‡K j¶ K‡i cvV Kivi `Av:

بَارَكَ اللَّهُ لَكَ وَبَارَكَ عَلَيْكَ وَجَمَعَ بَيْنَكُمَا فِي خَيْرٍ

D"PviY: Òev-রকাল্লা-û jvKv, Iqv ev-ivKv ôAvjvBKv, Iqv RvgvôAv evBbvKgv- dx LvBwib|Ó

"আল্লাহ আপনাকে বরকত দান করুন এবং Avcbv‡`i (¯vgx ¯xi) g‡a¨ eiKZ, HK¨gZ I wgj- gneŸ‡Zi mv‡\_ Rxeb hvc‡bi mvg\_© c`vb Ki"b |Ó

**nv`xm:** ÒAve ûivBiv (iv:) †\_‡K ewYZ wZwb বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) যখন বিবাহের পর কাউকে Awfb›`b Rvbv‡Zb Zvi Rb¨ GB `Av cvV Ki‡Zb|Ó (Ave `vD` 2132, Be‡b gvRvn 1905, wZiwgwR 1091)

bZb ¯xi Kcv‡j nvZ †i‡L covi `Av:

١ للَّهُمَّ إِنِّى أَسْأَلُكَ خَيْرَهَا وَخَيْرَ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَمِنْ شَرِّ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ

D”PviY: “আল্লা-û¤§v Bbx AvmAvjKv LvBinv-
Iqv LvBiv gv- RvevjZvnv- AvjvBwn, Iqv
AvEhweKv wgb kviwinv- Iqv wgb kviwi gv-
RvevjZvnv- ÔAvjvBwn|Õ

“হে আল্লাহ! তোমার নিকট উহার (স্ত্রীর বা
µxZ`v‡mi) Kj¨v‡bi cv_bv RvbvB Ges cv_Yv
RvbvB Zvi †mB Kj¨vYgq ¯fv‡ei hvi Dci
Zwg Zv‡K mwó K‡i‡Qv| Avi Awg †Zvgvi Avkq
PvB Zvi Awbó n‡Z Ges Zvi Av`xg cewËi
AKj¨vY n‡Z hvi Dci Zwg Zv‡K mwó
K‡i‡Qv|Ó

nv`xm: ÒAvgi Be‡b ïAvBe (iv:) Zvi wcZv
†_‡K wZwb Zvi `v`v †_‡K eYbv K‡ib,
রাসূলুল্লাহ (সা:) বলেছেন: যখন তোমাদের কেউ
weevn K‡i ZLb Zvi Kcv‡j nvZ †i‡L GB
`AwU cvV Ki‡e|Ó (Ave `vD` 2162)

¯¿x mnevm‡mi †`vqv:

بِاسْمِ اللَّهِ اللَّهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطَانَ وَجَنِّبْ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْتَنَا

D”PviY: “বিস্মিল্লা-হি আল্লা-û¤§v Rvwbebvk kvBZv-bv, Iqv Rvwbwek kvBZv-bv gv-ivhvKZvbv-|

“আল্লাহর নামে (আমরা মিলন করছি) হে, আল্লাহ! Zwg Avgv‡`i wbKU †_‡K kqZvb‡K `‡i ivL, Avi Avgv‡`i‡K Zwg (G wgj‡bi d‡j) †h mš—vb `vb Ki‡e Zv n‡Z kqZvb †K `‡i ivL|Ó

**nv`xm:** ÒBe‡b Ave¦vm (iv:) †_‡K ewYZ wZwb e‡jb, †Zvgv‡`i †KD hLb (mnevm‡mi D‡Ï‡k¨) ¯¿xi wbKU Mgb K‡i Ges Dc‡iv³ `AvwU cvV K‡i ZLb Zvi mšvb n‡j †KD †Kvb ¶wZ Ki‡Z cvi‡e bv|Ó (eLvix 141)

‡bK mšÍvb PvIqvi `Av:

رَبِّ هَبْ لِي مِنَ الصَّالِحِينَ

D”PviY: Ò iweŸ nve jx wgbvm mv-wjnxb|Ó

Ò‡n Avgvi ie! Avcwb Avgv‡K GKwU †bK mšÍvb `vb Ki“b|Ó (myiv mvddvZ 27:100)

رَبِّ لَا تَذَرْنِي فَرْدًا وَأَنْتَ خَيْرُ الْوَارِثِينَ

D”PviY: Òiwe Ÿ jv-Zvhvibx dvi`vI Iqv AvšÍv LvBi“j Iqv-wiQxb|Ó

Ò†n Avgvi ie! Avgv‡K GKv ivL‡eb bv, Avcwb †Zv †kô Iqvwim|Ó (myiv Avw¤qv 21:89)

†bK ¯¿vgx/¯¿x Ges mšÍvb PvIqvi `Av:

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا

D”PviY: Ò ieŸvbv- nve jvbv- wgb Avh Iqv-wRbv

Iqv hiwiq¨v- wZbv- KiivZv AvÔqwbI ARÔAvjbv- wjj gËvKxbv Bgv-gv|Ó

Ò†n Avgv‡`i ie, Avcwb Avgv‡`i‡K Ggb ¯x I mšÍvbw` `vb Ki“b hvi Avgv‡`i P¶ kxZj Ki‡e| Avi Avcwb Avgv‡`i‡K gËvKx‡`i †bZv ewb‡q w`b|Ó (miv diKvb 25:74)

†KD hw` Avcbv‡K e‡j †h †স আল্লাহর উদ্দেশ্যে Avcbv‡K fvjev‡m Zvi DË‡i Avcwb wK ej‡eb:

Avbvm Be‡b gwjK (iv`:) †_‡K ewYZ, R‰bK ব্যক্তি রাসূলুল্লাহ (সাঃ) এর নিকট উপস্িZ wQj| Ggb mgq Zv‡`i wbKU w`‡q GKRb †jvK †n‡U †Mj| ZLb †স বললঃ হে আল্লাহর রাসূল (সাঃ) Awg GB †jvKwU‡K fvjewm| ivmj (mv:) Zv‡K ej‡jb Zwg Zv‡K GK_v Rwb‡q‡Qv? †m ejj bv| wZwb ej‡jb, Zv‡K Rwb‡q `vI| †jvKwU

Zvi wcQ‡b wcQ‡b wM‡q Zv‡K ejj : Awg আল্লাহর জন্য আপনাকে ভালবাসি। জবাবে সে ejj: hvi Rb¨ Avcwb Avgv‡K fvjev‡mb, wZwbI †hb Avcbv‡K fvjev‡mb|

‡gvU K_v c_g e¨w³ ej‡e:

إِنِّى أُحِبُّكَ فِى اللَّه

D"PviY: "ইন্নী উহিব্বুকা ফিল্লা-wn|Ó

"আমি আল্লাহর জন্য আপনাকে ভালবাসি।"

DË‡i wØZxq e¨w³ ej‡e:

أَحَبَّكَ الَّذِى أَحْبَبْتَنِى لَهُ

D"PviY: "আহাব্বা কাল্লাযী আহ্বাবZvbx jvû|Ó Òhvi Rb¨ Avcwb Avgv‡K fvjev‡mb, wZwbI †hb Avcbv‡K fvjev‡mb|Ó (Ave `vD` 5127)

‡ivMx †`L‡Z wM‡q Zvi Rb¨ `Av:

أَسْأَلُ اللّٰهَ الْعَظِيمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ أَنْ يَشْفِيَكَ

D”PviY: “আস্আলুল্লা-nvj ÕAvhxg, iveŸvj ÕAvikxj ÕAvhxg, AvB BqvkdxqvKv|Ó

ÒAvwg †Zvgvi †ivM gy³i Rb¨ Avi‡k Avhx‡gi gnvb ie আল্লাহ (সুবঃ) এর নিকট প্রার্থনা করছি।”

**nv`xm:** ÒBe‡b AveŸvm (iv:) †_‡K ewYZ: wZwb বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বলেছেন, যে ব্যক্তি mvaviY (hvi gZ¨ Avmb bq) †Kvb †ivMx‡K †`L‡Z †Mj Ges †mLv‡b †m mvZevi GB `AvwU পাঠ করলো আল্লাহ (সুবঃ) তাকে সেই রোগ থেকে m¯’ K‡i w`‡eb|Ó (Ave `vD` 3108)

Av‡iKwU `Av:

لَا بَأْسَ طُهُورٌ إِنْ شَاءَ اللّٰهُ

D”PviY: Òjv- evÕQv, Zvûi“b Bbkv-আল্লা-û|Ó

“কিছুই না! আরোগ্য লাভ করবে আল্লাহ ইচ্ছা Ki‡j|Ó

**nv`xm:** ÒBe‡b AveŸvm (iv:) †_‡K ewYZ wZwb বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) যখন কোন রোগীর শুশ্রুসা Kivi Rb¨ †h‡Zb ZLb GB `AvwU cvV Ki‡Zb|Ó (eLvix 5656)

gZ¨ g‡L cwZZ n‡j covi `Av:

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي وَأَلْحِقْنِي بِالرَّفِيقِ الْاَعْلَي

D”PviY: “আল্লা-û¤§vMwdi jx Iqvi nvgbx Iqv AvjwnKbx wei ivdxwKj AvÕjv-|Ó

অর্থ :‘‘হে আল্লাহ! আমাকে ক্ষমা কর আমার প্রতি `qv K‡iv Ges Avgv‡K gnvb eÜzi mv‡_ wgwjq `vI|Ó

**nv`xm:** ÒAv‡qkv (iv:) †_‡K ewYZ wZwb e‡jb, মৃত্যুর পূর্বমূহুর্তে রাসূলুল্লাহ (সাঃ) আমার গায়ে †njvb w`‡q e‡m wQ‡jb| Awg g‡bv‡hvM w`‡q

ïbjvg wZwb GB `Av cvV Ki‡Qb|Ó (Be‡b gvRvn 1619; eLvix 4440; gmwjg 6446; wZiwgwh 3496)

gZ e¨w³i †PvL eÜ Kivi ci cvV Kivi `Av:

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِفُلَانٍ وَارْفَعْ دَرَجَتَهُ فِي الْمَهْدِيِّينَ وَاخْلُفْهُ فِي عَقِبِهِ فِي الْغَابِرِينَ وَاغْفِرْ لَنَا وَلَهُ يَا رَبَّ الْعَالَمِينَ وَافْسَحْ لَهُ فِي قَبْرِهِ وَنَوِّرْ لَهُ فِيهِ

D”PviY: আল্লা-û¤§vM wdi wj (Zvi bvg ej‡Z n‡e) IqvidvÔ `vivRvZvû wdj gvnw`q¨xb, IqvLjdû wd ÔAvwKwenx wdj Mv-weixb, IqvMwdi jvbv- Iqv jvû Bqv- iveŸvj ÔAvjvgxb, IqvdQvn jvû dx Kvewinx, Iqv bvfwfi jvû dxwn|

“হে আল্লাহ! তুমি অমুকের (মৃতব্যি³i bvg a‡i) gvMwdivZ `vb K‡iv, hviv †n`v‡qZ jvf K‡i‡Q Zv‡`i gv‡S Zvi ghv`v DP K‡i `vI Ges hviv

i‡q †M‡Q Zv‡`i gvS †_‡K Zvi Rb¨ cwZwbwa evbv I| †n mgM RM‡Zi cwZcvjK! Avgv‡`i I Zvi ¸bvn gvd K‡i `vI Ges Zvi Kei‡K ck¯— K‡iv Avi Zvi Rb¨ Dnv Av‡jvKgq K‡i `vI|Ó

**nv`xm:** ÒD‡¤§ mvjvgv (iv:) e‡jb, Ave mvjvgv gvi‡ যাওয়ার পর রাসূলুল্লাহ (সাঃ) তার নিকটে আসলেন। তার চোখগুলো খোলা ছিল রাসূলুল্লাহ (mv:) †m¸‡jv eÜ K‡i w`‡jb|.....Gici Dc‡iv³ `AwU cvV Ki‡jb|Ó (gmwjg 2169)

Rvbvhvi mvjv‡Z gZ e¨w³i Rb¨ `Av:

اَللَّهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا, وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا, وَصَغِيرِنَا, وَكَبِيرِنَا, وَذَكَرِنَا وَأُنْثَانَا, اَللَّهُمَّ مَنْ أَحْيَيْتَهُ مِنَّا فَأَحْيِهِ عَلَى الْإِسْلَامِ, وَمَنْ تَوَفَّيْتَهُ مِنَّا فَتَوَفَّهُ عَلَى الْإِيمَانِ, اَللَّهُمَّ لَا تَحْرِمْنَا أَجْرَهُ, وَلَا تُضِلَّنَا بَعْدَهُ

D"PviY: "আল্লা-û¤§vMwdi wj nvwq¨bv-, Iqv gvBwq¨wZbv-, Iqv kv-wnw`bv-, Iqv Mv-wqwebv-, Iqv mvMxwibv-, Iqv Kvexwibv-, Iqv hvKwibv-, Iqv DbQvbv-, আল্লা-û¤§v gvb AvnBqvBZvû wgbv- dvAvnwqnx ÔAvjvj Bmjv-g, Iqv gvb ZvIqvddvBZvû wgbv- dvZvIqvddvû ÔAvjvj ঈমান, আল্লা-û¤§v jv-Zvnwigbv ÔAvRivû, Iqvjv- তুদ্বিল্লানা- evÔ`vû|

"হে আল্লাহ ! আমাদের জীবিত ও মৃত উপস্থিত, Abcw¯Z, †QvU, eo, bi I bvix‡`i ¶gv K‡i দাও, হে আল্লাহ ! আমাদের মাঝে যাদের তুমি RxweZ †i‡L‡Qv Zv‡`i‡K Bmjv‡gi Dci RxweZ iv‡Lv, Avi hv‡`i‡K gZ¨ `vb K‡iv Zv‡`i‡K Cgv‡bi mv‡\_ gZ¨ `vb K‡iv| †n আল্লাহ!আমাদেরকে তাহার সাওয়াব থেকে বঞ্চিত

K‡ivbv Ges Zvi gZ¨i ci Avgv‡`i‡K c_fó K‡iv bv|Ó

**nv`xm:** Ò Ave ûivBiv (iv:) †_‡K ewYZ, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) যখন জানাযার সালাত পড়াতেন ZLb GB †`vwU cvV Ki‡Zb|Ó (Be‡b gvRvn 1498)

ev"Pvi Rvbvhvi mvjv‡Z covi `Av:

اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَسَلَفًا وَأَجْرًا

D"PviY: আল্লাহুম্মাজ্ ‘আলহু লানা- dvivZvI Iqv mvjvdvI Iqv AvRiv-|

“হে আল্লাহ! তাকে আমাদের জন্য অগ্রবর্তী নেকী ও mIqv‡ei Amxjv evbvI|Ó

**nv`xm:** nvmvb (iv:) ev"Pv‡`i Rvbvhvq miv dwZnv I D³ `AvwU cvV Ki‡Zb| (eLvix, Rvbvhvi mvjv‡Z miv dwZnv cvV cm‡½i Aa¨v‡qi wk‡ivbvg)

gZ e¨w³‡K `vdb Kivi ci `Av:

اَللَّهُمَّ اغْفِرْ لَهُ اَللَّهُمَّ ثَبِّتْهُ

D"PviY: "আল্লা-হুম্মাগ্ ফির লাহু, আল্লা-û¤§v QwweŸZû|Ó

"হে আল্লাহ! তাকে ক্ষমা করুন, হে আল্লাহ! তাকে `pZv `vb Ki"b|Ó

**nv`xm:** ÒDmgvb Be‡b Avddvb (iv:) †\_‡K বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) মৃতব্যি³‡K `vdb Kivi ci Zvi Ke‡ii cv‡k `vov‡Zb Ges ej‡Zb, †Zvgv‡`i fvB‡qi Rb¨ B‡¯Mdvi c‡ov Ges Zvi Rb¨ `pZvi cv\_Yv Ki, †Kbbv GLb Zv‡K ck Kiv n‡e|Ó (Ave `vD` 3223)

Ke‡i jvk ivLvi `Av:

بِسْمِ اللَّهِ وَعَلَى مِلَّةِ رَسُولِ اللَّهِ

D"PviY: "বিস্‌মিল্লাহি ওয়া 'আলা- মিল্লাতি রাসূলিল্লা-n|Ó

"আমরা এই লাশ আল্লাহর নামে এবং রাসূলুল্লাহ (mv:) Gi Av`‡ki Dci ivLwQ|Ó

**nv`xm:** ÒBe‡b Igi (iv:) †_‡K ewYZ wZwb বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) যখন কোন লাশ কবরে ivL‡Zb ZLb GB `Av cvV Ki‡Zb|Ó (Be‡b gvRvn 1550)

Kei whqvi‡Zi `Av:

السَّلَامُ عَلَى أَهْلِ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُسْلِمِينَ يَرْحَمُ اللَّهُ الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنَّا وَالْمُسْتَأْخِرِينَ وَإِنَّا إِنْ شَاءَ اللَّهُ بِكُمْ لَاحِقُونَ

D”PviY: ÒAvmmvjv-g ÔAvjv- Avnwj` w`qv-wi, মিনাল্ মু’মিনীনা ওয়াল মুস্লিমীন, ইয়ার্হামুল্লা-ûj gmZvKw`gxbv wgbv Iqvj gmZvÕwLixb, Iqv Bbv- Bbkv-আল্লা-û weKg jv-wnKb|Ó

ÒgÕwgb Ges gmwjg Keievmx‡`i Dci kvwš- বর্ষিত হোক! আল্লাহ (সুবঃ) আমাদের মধ্য থেকে hviv Av‡M P‡j †M‡Q Zv‡`i Dci Ges hviv c‡i

Avm‡Q Zv‡`i Dci `qv Ki“K| wbðq Avgiv wkNB †Zvgv‡`i mv‡_ wgwjZ n‡ev|Ó

**nv`xm:** ÒAv‡qkv (iv:) †_‡K ewYZ wZwb e‡jb, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) আমাকে জান্নাতুল বাকীকে গিয়ে gZe¨w³‡`i Rb¨ B‡¯Mdvi Kivi Av‡`k w`‡jb| Awg wR‡Ám Kijvg, †n আল্লাহর ivmj! Awg †mLv‡b wM‡q wK cvV Ki‡ev? রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বললেন তুমি সেখানে গিয়ে Dc‡iv³ `AwU cvV Ki‡e|Ó (bvmvqx 2036)

wØZxq `Av:

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُسْلِمِينَ، وَإِنَّا إِنْ شَاءَ اللَّهُ بِكُمْ لَاحِقُونَ ، نَسْأَلُ اللَّهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَافِيَةَ

D"PviY: ÒAvmmvjv-g ÔAvjvBKg! Avnjv` w`qv-wi wgbvj gÕwgbxbv Iqvj gmwjgxb, Iqv Bbv-

Bbkv-আল্লা-û weKg jv-হিকূন, নাস্’আলুল্লা-nv jvbv- IqvjvKgj ÔAv-wdqvn|Õ
Ò†n Ke‡ii Awaevwm gÔwgb I gmwjg MY! †Zvgv‡`i cwZ mvjvg ewlZ †nvK, Avgiv I তোমাদের সাথে মিলিত হচ্ছি। আমরা আল্লাহর wbKU Avgv‡`i Rb¨ Ges †Zvgv‡`i Rb¨ wbivcËv cv_bv KiwQ|Ó
**nv`xm:** ÒmjvBgvb Be‡b eivB`v (iv:) Zvi wcZv থেকে বর্ণনা করেন, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) কবর whqvi‡Zi Rb¨ GB `AvwU wk¶v w`‡q‡Qb|Ó
(Be‡b gvRvn 1547)

ewó cv_bvi `Av mgn:

اللَّهُمَّ اسْقِنَا غَيْثًا مُغِيثًا مَرِيئًا نَافِعًا غَيْرَ ضَارٍّ عَاجِلاً غَيْرَ آجِلٍ

D”Pvib: “আল্লা-û¤§v AvmwKbv- MvBQvb gMxQvb gvixAvb bv-wdÔAvb MvBiv Øv-iwib, ÔAv-wRjvb MvBiv Av-wRwjb|Ó

“হে আল্লাহ! আমাদের জন্য এমন বৃষ্টি বর্ষণ করুন hv Avgv‡`i Rb¨ Kj¨vYKi I g½jRbK nq, djgj I dmjw` Drcv`‡b mnvqK nq, hv Avgv‡`i Rb¨ AcKvix bv n‡q DcKvix nq Ges Zv wej‡¤i cwie‡Z Awej‡¤ `vb Ki“b|Ó

**nv`xm:** ÒRv‡ei (iv:) †_‡K ewYZ wZwb e‡jb, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) এর নিকটে কিছু লোক বৃষ্টি না nIqvi Kvi‡Y µ›`biZ Ae¯vq AvMgb K‡i (ewói Rb¨ `AvÕ Ki‡Z e‡j)| ZLb wZwb Dc‡iv³ `AvwU Ki‡jb mv‡_ mv‡_ Avmgvb †gNv”Qvb n‡q ewócvZ ïi“ n‡q †Mj|Ó (Ave `vD` 1171)

ewó cv_Yvi Av‡iKwU `Av:

اللَّهُمَّ أَغِثْنَا اللَّهُمَّ أَغِثْنَا اللَّهُمَّ أَغِثْنَا

D"PviY: "আল্লা-û¤§v AvwMQbv-, আল্লা-û¤§v আগিছ্না, আল্লা-û¤§v AvwMQbv|Ó

"হে আল্লাহ! আমাদেরকে বৃষ্টি দান কর, হে আল্লাহ! আমাদেরকে বৃষ্টি দান কর, হে আল্লাহ! Avgv‡`i‡K ewó `vb Ki|Ó

**nv`xm:** ÒAvbvm Be‡b gv‡jK (iv:) †\_‡K ewYZ, GK e¨w³ RgAvÕi w`b `vi"j Kvhv (wePvi KvR mgvavi ¯'vb) Gi w`‡Ki `iRv w`‡q gmwR‡` প্রবেশ করল। রাসূলুল্লাহ (সাঃ) দাঁড়িয়ে খুতবা দিচ্ছিলেন। লোকটি রাসূলুল্লাহ (সাঃ) এর দিকে মুখ করে দাঁড়িয়ে বলল, ইয়া রাসূলুল্লাহ! ধন-m¤ú` bó n‡q †Mj Ges iv¯-vNvU eÜ n‡q †Mj| Avcwb আল্লাহর নিকট দুআ করুন যেন তিনি বৃষ্টি দান করেন। তখন রাসূলুল্লাহ (সাঃ) উপরো³ `AvwU

cvV Ki‡j jvMvZvi Qq w`b ewó n‡jv Ges mh †`Lv †Mj bv| Ó (eLvix 1014)

ewó cv_Yvi Av‡iKwU `Av:

اللَّهُمَّ اسْقِ عِبَادَكَ وَبَهَائِمَكَ وَانْشُرْ رَحْمَتَكَ وَأَحْيِ بَلَدَكَ الْمَيِّتَ

D”PviY: “আল্লা-û¤§vmwK ÔBev-`vKv Iqv evnv-BgvKv, Iqvbïi ivngvZvKv, Iqv Avnwq evjv`vKvj gvBwq¨Z|Ó

“হে আল্লাহ! তুমি তোমার বান্দাদেরকে এবং PZ®ú` Rš¸wj‡K cwb cvb KivI, †Zvgvi ingZ cwiPvjbv K‡iv, Avi †Zvgvi gZ kni‡K mRxe K‡iv|Ó

nv`xm: ÒAvgi Be‡b ïAvBe Zvi wcZv †_‡K তিনি তার দাদা থেকে বর্ণনা করেন, রাসূলুল্লাহ

(mv:) hLb ewói Rb¨ cv_Yv Ki‡Zb ZLb GB `AvwU Ki‡Zb|Ó (Ave `vD` 1178)

ewó el‡bi mgq `Av:

اللَّهُمَّ صَيِّبًا هَنِيئًا نَافِعًا

D”PviY: “আল্লা-û¤§v mvBwq¨evb nvbxAvb bv-wdÔAvb|Ó

“হে আল্লাহ! আপনি মুষলধারায় উপকারী বৃষ্টি বর্ষণ Ki“b|Ó

**nv`xm:** ÒAv‡qkv (iv:) †_‡K ewYZ, ewó n‡j রাসূলুল্লাহ (সাঃ) এই দুআ পাঠ করতেন।” (eLvix 1032; Ave `vD` 5101)

ewó el‡bi ci `Av:

مُطِرْنَا بِفَضْلِ اللَّهِ وَرَحْمَتِهِ

D”PviY: ÒgwZibv- বিফাদ্লিল্লা-wn Iqv ivngwZnx|Ó

“আল্লাহর ফযল ও রহমতে আমাদের উপর বৃষ্টি ewlZ n‡q‡Q|Ó

**nv`xm:** Òhv‡q` Be‡b Lv‡j` Avj Rnvbx (iv:) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) হুদাইবিয়ার w`b¸‡jvi GKw`b iv‡Z ewó nIqvi ci mKv‡j GB `AvwU cvV Ki‡jb|Ó (eLvix 846)

ewó e‡Üi `Av:

اللَّهُمَّ حَوَالَيْنَا وَلَا عَلَيْنَا اللَّهُمَّ عَلَى الْآكَامِ وَالْجِبَالِ

وَالْآجَامِ وَالظِّرَابِ وَالْأَوْدِيَةِ وَمَنَابِتِ الشَّجَرِ

D”PviY: “আল্লা-û¤§v nvIqv-jvBbv Iqvjv-ÔAvjvBbv-, আল্লা-û¤§v ÔAvjvj Av-Kv-wg Iqvj wRev-wj Iqvj Av-Rv-wg Iqvh whiv-we Iqvj AvIw`qwZ Iqv gvbv-wewZk kvRwi|Ó

“হে আল্লাহ ! আমাদের পাশ্বর্তী এলাকায় বর্ষণ করো, আমাদের উপত্যকায় নয়। হে আল্লাহ! উঁচু

fwg‡Z I cvnvo ce‡Z, DcZ¨Kv AÂ‡j Ges ebvÂ‡j elY K‡iv|Ó

**nv`xm:** ÒAvbvm Be‡b gv‡jK (iv:) †_‡K ewYZ, একবার রাসূলুল্লাহ (সা:) বৃষ্টি প্রার্থণা করলে jvMvZvi Qq w`b ewó n‡jv| †jv‡Kiv G‡m Awf‡hvM Ki‡j cbivq ewó e‡Üi Rb¨ Dc‡iv³ `AwU Ki‡j mv‡_ mv‡_ m‡hi Av‡jv †ei n‡q Av‡m|Ó (eLvix 1013)

‡g‡Ni MR‡Y cvV Kivi `Av:

سُبْحَانَ الَّذِي يُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهِ وَالْمَلَائِكَةُ مِنْ خِيفَتِهِ

D”PviY: Òmenv-নাল্লাযী ইউসাব্বিহুর্ রা‘দু wenvgw`nx Iqvj gvjv-BKvZ wgb LxdwZn|Ó

ÒcvK cweÎ †mB gnvb mËv hvi cweÎZvi gwngv eYbv K‡i Zvi cksmvi mv‡_ †g‡Ni MRb Ges †d‡ikZvMYI Zvi gwngv eYbv K‡i Zvi f‡q fxZ n‡q|Ó

**nv`xm:** "আবদুল্লাহ ইবনে যুবাইর (রাঃ) যখন †g‡Ni MRY ïb‡Zb ZLb K_v ejv eÜ K‡i w`‡Zb Ges GB `AvwU cvV Ki‡Zb|Ó (gAvËv‡q Bgvg gv‡jK 3641| mnxn mb‡` ewYZ)

bZb Pv` †`‡L †h `Av co‡Z nq:

اللَّـهُ أَكْبَرُ، اللَّهُـمَّ أَهِلَّـهُ عَلَيْنا بالأَمْنِ والإِيمانِ والسَّلامَة والإِسلامِ والتَّوْفِيقِ لِما تُحِبُّ وَتَرْضَى، رَبُّنا وَرَبُّكَ اللَّهُ

D"PviY: "আল্লা-হু আক্‌বার, আল্লা-হুম্মা আহিল্লাহু ÔAvjvBbv wej Avgwb Iqvj Cgv-b, IqvQ Qvjv-gwZ Iqvj Bmjv-g, IqvZ ZvIdxwK wjgv-ZwneŸ Iqv ZviØv-, রব্বুনা ওয়া রব্বুকাল্লা-n|Ó

"আল্লাহ সবচেয়ে বড়! হে আল্লাহ! এই নতুন Pv`‡K Avgv‡`i wbivcËv, Cgvb, kvwšÍ I Bmjv‡gi mv‡_ Dw`Z Ki Ges hv Zwg fvjevm Ges hv‡Z Zwg mšó nI †mUvB Avgv‡`i Kivi

ZvIdxK `vI| Avgv‡`i ie Ges †Zvgvi (Pv`) রব একমাত্র আল্লvn|Ó

**nv`xm:** “ইবনে ওমর (রাঃ) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (mv:) hLb bZb Pv` †`L‡Zb ZLb GB †`vAwU cvV Ki‡Zb| (`vigx 1687; Be‡b wneŸvb 888)

Kv‡di nwwP w`‡q Avjnvg`wলল্লাহ বললে তার Rev‡e hv ejZ n‡e:

يَهْدِيكُمُ اللَّهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ

D"PviY: “ইয়াহ্‌দীকুমুল্লা-û Iqv Bqmwjû ev-jvKg|Ó

“আল্লাহ তোমাদের সৎপথ প্রদর্শণ করুন এবং Ae¯v fvj Ki“b|Ó

**nv`xm:** ÒAve ei`v (iv:) Zvi wcZv †_‡K eYbv করেন, এক ইয়াহুদী রাসূলুল্লাহ (সাঃ) এর নিকটে nwwP w`j GB Avkvq †h, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) তার জন্য রহমতের দুআ করবেন। কিন্তু রাসূলুল্লাহ

(mv:) Zv‡K Dc‡iv³ DËi w`‡jb|Ó (Ave `vD` 5040)

nvwP w`‡j ej‡e:

الْحَمْدُ لِلَّه عَلَى كُلِّ حَالٍ

D”PviY: “আল্হাম্দুলিল্লা–হি ‘আলা কুল্লি হা-wjbj|Ó

ÒmKj Ae¯vq mg¯ প্রশংসা আল্লাহর জন্য।”

nvwPi DË‡i gmwjg fvB ej‡e:

يَرْحَمُكَ اللَّهُ

D”PviY: “ইয়ার্হামুকাল্লা-n|Ó

“আল্লাহ আপনার উপর রহমত (অনুগ্রহ) বর্ষণ Ki“K|Ó

Gi DË‡i nvwP`vZv ej‡e:

يَهْدِيكُمُ اللَّهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ

D”PviY: “ইয়াহদীকুমূল্লা-û Iqv Bqmwjû ev-jvKg|Ó

“আল্লাহ তোমাদের সৎপথ প্রদশY Ki“b Ges Ae¯’v fvj Ki“b|Ó

**nv`xm:** ÒAve ûivBiv (iv:) †_‡K ewYZ, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বলেছেনঃ যখন তোমাদের কোন e¨w³ nvwP w`‡e ZLb الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ co‡e| Gi DË‡i Zvi fvB ev Zvi mv_x يَرْحَمُكَ اللَّهُ cvV Ki‡e Gi DË‡i nvwP`vZv cvV Ki‡e يَهْدِيكُمُ اللَّهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ|Ó (Ave `vD` 5035)

`wðšÍv I gQxe‡Zi mgq GB `Av cvV Ki‡e:

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الْعَظِيمُ الْحَلِيمُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَرَبُّ الْأَرْضِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ

D”PviY: Òjv-Bjv-হা ইল্লাল্লা-ûj ÔAvhxgj nvjxg, jv-Bjv-হা ইল্লাল্লা-û iveŸj ÔAviwkj ÔAvhxg, jv-Bjv-হা ইল্লাল্লা-û iveŸm mvgv-Iqv-wZ Iqv iveŸj AviwØ Iqv iveŸj ÔAviwkj Kvixg|Ó

“আল্লাহ ছাড়া কোন ইলাহ নেই। তিনি সুমহান gnvসহিঞ্চু। আল্লাহ ব্যতিত কোন ইলাহ নেই তিনি সুমহান আরশের রব। আল্লাহ ব্যতিত কোন ইলাহ †bB wZwb Avmgvbmgn, hwgb Ges gnv m¤§wbZ Avi‡ki ie|Ó

**nv`xm:** Be‡b AveŸvm (iv:) †_‡K ewYZ, রাসূলুল্লাহ (সা:) কোন দু:খ বা কষ্টের সময় এই `AwU cvV Ki‡Zb| (eLvix 6346)

wØZxq †`vqv:

اللَّهُمَّ رَحْمَتَكَ أَرْجُو فَلاَ تَكِلْنِى إِلَى نَفْسِى طَرْفَةَ عَيْنٍ
وَأَصْلِحْ لِى شَأْنِى كُلَّهُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ

D"PviY: "আল্লা-û¤§v ingvZvKv AviR, dvjv ZvwKjbx Bjv- bvdmx Zidvzv ÔAvBwbb, Iqv আস্‌লিহ্‌লী শা'নী কুল্লাহু, লা-Bjv-হা ইল্লv Avšv|Ó

"হে আল্লাহ! আমি আপনার রহমত প্রার্থণা করছি। GK gû‡Zi Rb¨I Avgv‡K Avgvi wbR `wq‡Z †Q‡o w`‡eb bv| Ges Avgvi civ Ae¯v Avcwb ms‡kvab K‡i †`b| Avi Avcwb Qvov †Kvb Bjvn †bB|Ó

**nv`xm:** Ave`i ingvb Be‡b Avex evKivn †_‡K বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বলেছেন `:L I wec`M¯‡`i `Av n‡"Q Dc‡iv³ `AvwU| (Ave `vD` 5094)

Av‡iKwU `Av:

اللَّهُ اللَّهُ رَبِّى لاَ أُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا

D"PviY: "আল্লা-হু আল্লা-û ieŸx jv- DkwiK wenx kvBAv-|Ó

“আমার রব একমাত্র আল্লাহই, আমি তাঁর সাথে †Kvb wKQ kixK KiwQ bv|Ó

**nv`xm:** ÒAvmgv web‡Z Dgv‡qm (iv:) e‡jb, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বিপদ-Avc‡` covi Rb¨ Avgv‡K GB †`vqvwU wk¶v w`‡q‡Qb|Ó (Ave `vD` 1527)

†h †Kvb wec‡` cwZZ e¨w³i `Av:

إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ اللَّهُمَّ أْجُرْنِي فِي مُصِيبَتِي وَأَخْلِفْ

لِي خَيْرًا مِنْهَا

D”PviY: Bbv- লিল্লা-wn Iqv Bbv- BjvBwn রাজি‘উন, আল্লা-û¤§v AvRibx dx gmxevZx, Iqv AvLwjd jx LvBivg wgbnv-|

“নিশ্চয়ই আমরা সকলেই আল্লাহর এবং Avgv‡`i‡K ZviB w`‡K wd‡i †h‡Z n‡e| †n আল্লাহ! আমাকে আমার বিপদের বিনিময়ে সওয়াব

`vI Ges Dnv A‡c¶v DËg ¯jwfwl³ c`vb K‡iv|Ó

**nv`xm:** “রাসূলুল্লাহ (সাঃ) এর স্ত্রী উম্মে সালামা (iv:) †_‡K ewYZ, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বলেছেন Ô‡Kvb e¨w³ wec‡` cwZZ n‡q Dc‡iv³ `AvwU পাঠ করলে, আল্লাহ (সুবঃ) তাকে উ³ gwme‡Zi cwZ`vb Ges DËg wewbgq `vb Ki‡eb| D‡¤§ mvjvgv (iv:) e‡jb, Ave mvjvgv (Zvi ¯vgx) B‡šKv‡ji ci Awg †দাআটি পাঠ করলে আল্লাহ (me:) Avgv‡K Ave mvjvgv †_‡K DËg ¯vgx অর্থাৎ রাসূলুল্লাহ (সাঃ) কে দান করেছেন।” (gmwjg 2166)

Av‡iKwU `Av:

لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ

D”PviY: Ò jv-B jv-হা ইল্লা- Avšv menv-bvKv Bbx KbZ wgbvh hwjgxb|Ó

ÒAvcwb Qvov †Kvb (mZ¨) Bjvn †bBÕ| Avcwb cweÎ gnvb| wbðq Awg wQjvg hvwjg|Ó

**nv`xm:** "রাসূলুল্লাহ (সাঃ) ইরশাদ করেছেনঃ কোন gmwjg e¨w³ সত্য মনে এই দুআ করলে আল্লাহ (me:) Zvi `Av Aek¨B Kej Ki‡eb|Ó (wZiwgwR 3505)

wec`-Avc` M¯ e¨w³‡K †`‡L covi `Av:

الحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي عافانِي مِمَّا ابْتَلاكَ بِهِ وَفَضَّلَنِي على كَثِيرٍ مِمَّنْ خَلَقَ تَفضِيلاً

D"PviY: "আল্‌হাম্‌দুলিল্লা-হিল্লাযী 'আফা-bx wg¤§veZvjv-Kv wenx Iqv dvØ Øvjvbx ÔAvjv-KvQxwig wg¤§vb LvjvKv ZvdØxjv-|Ó

Òmg¯ প্রশংসা সেই আল্লাহর জন্য যিনি তোমাকে †h wec` Øviv cix¶vq wbcwZZ K‡i‡Qb Zv n‡Z Avgv‡K wbivc‡` †i‡L‡Qb Ges Zvi mwói

A‡b‡Ki †P‡q Avgv‡K AwaK AbMnxZ K‡i‡Qb|Ó

**nv`xm:** “ইবনে ওমর (রা:) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (mv:) e‡j‡Qb: Ò †Kvb e¨w³‡K wec‡` co‡Z দেখে এই দুআ পাঠ করলে আল্লাহ (সুব:) তাকে †mB wec` †_‡K i¶v Ki‡eb|Ó (Be‡b gvRvn 3892)

kÎ“i wei“‡× e` `Av:

اللَّهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتَابِ سَرِيعَ الْحِسَابِ اهْزِمِ الأَحْزَابَ اللَّهُمَّ اهْزِمْهُمْ وَزَلْزِلْهُمْ

D”PviY: “আল্লা-û¤§v gbwhjvj wKZv-e, mvixÔAvj wnmv-e, Bnwhwgj Avnhv-ব, আল্লা-û¤§vnwhg ûg Iqv hvjwhjûg|Ó

“হে আল্লাহ! তুমি মেঘমালা চালনাকারী, wKZve bwhjKvix, `“Z wnmve MnYKvix, kÎ“`j‡K

পরাজিত করো। হে আল্লাহ! তাদেরকে পরাজিত K‡iv Ges Zv‡`i gv‡S K¤úb mwó K‡i `vI|Ó

**nv`xm:** “আবদুল্লাহ ইবনে আবী আওফা (রাঃ) থেকে বর্ণিতঃ রাসূলুল্লাহ (সাঃ) খন্দকের যুদ্ধে Kv‡di‡`i mw¤§wjZ ewnbxi wei/‡× D³ e`-`Av K‡i‡Qb|Ó (eLvix 4115)

kÎ“ I cfvekvjx e¨w³i wei/‡× `Av:

اللَّهُمَّ إِنَّا نَجْعَلُكَ فِي نُحُورِهِمْ وَنَعُوذُ بِكَ مِنْ شُرُورِهِمْ

D”PviY: “আল্লা-û¤§v Bbv- bvRÔAvjKv dx bûwiwng Iqv bEhweKv wgb ïi“wiwng|Ó

“হে আল্লাহ! আমি শত্রুদের শত্রুতা ও তাদের ¶wZmva‡bi gKwejvq †Zvgv‡K ¯vcb KiwQ Ges Zv‡`i Awbó n‡Z †Zvgvi wbKU Avkq cv_bv KiwQ|Ó

nv`xm: “আবু বুরদা ইবনে আবদুল্লাহ বলেন যে তাঁর পিতা বর্ণনা করেছেন যে, রাসূলুল্লাহ (সাঃ)

hLb †Kvb †Mv‡Îi e¨vcv‡i fxwZRbK †Kvb ZrciZvi msev` Rvb‡Z cvi‡Zb ZLb Dc‡iv³ `AwU cvV Ki‡Zb|Ó (Ave `vD` 1539)

cfvekvjx kÎ“i wei“‡× Av‡iKwU `Av:

اللَّهُمَّ أَنْتَ عَضُدِى وَنَصِيرِى بِكَ أَحُولُ وَبِكَ أَصُولُ وَبِكَ أُقَاتِلُ

D"PviY: "আল্লা-û¤§v AvbZv ÔAvØ`x Iqv bvmxix, weKv Avûj, IqweKv AvQj, IqweKv DKv-wZj|Ó

"হে আল্লাহ! আপনি আমার শ³, Avcwb Avgvi mvnvh¨Kvix, Avcbvi mvnv‡h¨ Awg kÎ"i g‡LvgwL nB, AvcbviB mvnv‡h¨ Awg h× Kwi|Ó

**nv`xm:** "আনাস (রাঃ) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (mv:) h‡×i ce gû‡Z GB `Av cvV Ki‡Zb|Ó (Ave `vD` 2634)

cfvekvjx kÎ“i wei“‡× Av‡iKwU `Av:

حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ

D”Pvib: “হাস্‌বুনাল্লা-û Iqv wbÔgvj IqvKxj|Ó
“আল্লাহই আমাদের জন্য যথেষ্ট এবং তিনি কতইনা DËg KgweavqK|Ó

**nv`xm:** ÒBe‡b AveŸvm (iv:) †_‡K ewYZ, Beivnxg (Av:) Av¸‡b wbw¶ß nIqvi ci Ges রাসূলুল্লাহ (সাঃ) ওহুদের যুদ্ধের পর যখন শুনলেন †jv‡Kiv Avevi Avµg‡bi Rb¨ GKwÎZ n‡”Q ZLb Dc‡iv³ `AvwU cvV K‡iwQ‡jb|Ó (eLvix 4563)

Cgv‡bi Dci AUj _vKvi `Av:

يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوبِ ثَبِّتْ قَلْبِي عَلَى دِينِكَ رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ

D”PviY: “ইয়া মুক্বাল্লিবাল কুলূব! ছাব্বিত ক্বাল্বী ÔAvjv ØxwbK, ieŸvbv jv- ZwhM Kjevbv evÔ`v BR nv`vBZvbv- Iqv nvejvbv- wgj jv`bKv ingvn, BbvKv Avšv j Iqvnnv-e|Ó

Ò‡n Avš‡ii cwieZYKvix! Avgv‡`i Avši‡K Avcbvi Øx‡bi Dci AUj ivLb| †n Avgv‡`i ie, Avcwb wn`vqvZ †`qvi ci Avgv‡`i Avš imgn eµ Ki‡eb bv Ges Avcbvi c¶ †_‡K Avgv‡`i‡K ingZ `vb Ki“b| wbðq Avcwb gnv`vZv|Ó

nv`xm: ÒD‡¤§ mvjvg (iv:) †_‡K ewYZ, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) এই দুআটি বেশী বেশী পাঠ Ki‡Zb|Ó (wZiwgwR 3522)

Av‡iKwU `Av:

اللَّهُمَّ مُصَرِّفَ الْقُلُوبِ صَرِّفْ قُلُوبَنَا عَلَى طَاعَتِكَ

D”PviY: আল্লাহুম্মা মুসার্‌রিফাল কুলূব সার্‌রিফ Kjevbv- ÔAvjv- Zv-ÔAwZK|

“হে আল্লাহ! আপনিই অন্‌‡ii cwieZYKvix| Avgv‡`i Aši‡K Avcbvi AvbM‡Z¨i w`‡K wdwi‡q w`b|Ó

**nv`xm:** আবদুল্লাহ ইবনে আgi Be‡b Avm †_‡K বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) হেদায়াতের উপর অটল _vKvi Rb¨ GB `Av wk¶v w`‡q‡Qb| (gmwjg 6921)

wcZv-gvZvi Rb¨ `Av:

رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيَانِي صَغِيرًا

D”PviY: iweŸi nvg ûgv- Kvgv- ieŸvBqv-bx QMxiv|

Ò‡n Avgvi ie! Zwg Zv‡`i (wcZv-gvZv) cwZ `qv Ki †hfv‡e Zviv Df‡q Avgvi cwZ `qv K‡iwQj wkï Ae¯’vq|Ó (miv ewb BmivBj 17:24)

FY cwi‡kv‡ai `Av:

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَنِ وَالْكَسَلِ وَالْبُخْلِ وَالْجُبْنِ وَضَلَعِ الدَّيْنِ وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ

D”PviY: ÒAvjøv-û¤§v Bbx AvEhyweKv wgbvj nvg¥¤§ Iqvj nvhwb Iqvj Kvmwj Iqvj eLwj Iqvj Rewb Iqv ØvjvÔB` `vBwb Iqv MvjvewZi wiRv-wj|Ó

“হে আল্লাহ! আপনার কাছে আশ্রয় প্রার্থনা করছি `wðšv I `fvebv †_‡K, AcviMZv I AjmZv †_‡K, KcYZv I KvcilZv †_‡K, F‡Yi fvi I gvb‡li AZ¨vPvi †_‡K|Ó

**nv`xm:** ÒAvbvm Be‡b gv‡jK (iv:) †_‡K ewYZ, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) ঋণগ্রস্থ ব্যি³‡K FY cwi‡kva mnR Kivi Rb¨ Dc‡iv³ `Av wk¶v w`‡q‡Qb|Ó (bvmvqx 5491)

†h †Kvb gRwj‡k covi `Av:

رَبِّ اغْفِرْ لِى وَتُبْ عَلَىَّ إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ

D”PviY: ÒiweŸM wdijx IqvZe ÔAvjvBq¨v BbvKv AvšvZ ZvDIqv-ei ivnxg|Ó

Ò†n Avgvi ie! Zwg Avgv‡K gvd K‡iv, Avi Avgvi ZvIev Kej K‡iv, wbðq Zwg ZvIev KejKvix ¶gvkxj|Ó

**nv`xm:** ÒBe‡b Igi (iv:) †_‡K ewYZ, Avgiv এক বৈঠকে রাসূলুল্লাহ (সাঃ) কে একশত বার Dc‡iv³ `AvwU cvV Ki‡Z MYbv Kijvg|Ó (Ave `vD` 1518)

†KD †Kvb DcKvi Ki‡j cvV Kivi `Av:

جَزَاكَ الله خَيْرًا

D”PviY: ÒRvhv-কাল্লা-û LvBivb|Ó

“আল্লাহ আপনাকে প্রতিদান দান করুন।”

**nv`xm:** ÒDmvgv Be‡b hv‡q` (iv:) †_‡K ewYZ, †KD DcKvi Ki‡j hw` Zvi cwZ`vb ¯^iƒc Dc‡iv³ `AwU cvV Kiv nq Zvn‡j †mUvB n‡e m‡ev”P cksmv|Ó (wZiwgwh 2035)

cQ›`bxq wKQ †`L‡j ev †Kvb KvR m›`i fv‡e m¤úb n‡j cvV Kivi `Av:

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي بِنِعْمَتِهِ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ

D”PviY: আল্হাম্দুলিল্লা-হিল্লাযী বিনি‘মাতিহী ZwZ¤§m mv-wjnv-Z|

“প্রশংসা সেই আল্লাহর যার অনুগ্রহে সকল কাজ mgcb nq|Ó

AcQ›`bxq wKQ †`L‡j cvV Kivi `Av:

الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ

D”PviY: আল্হাম্দু লিল্লা-wn ÔAvjv- কুল্লিহা-wjb|Ó

Òmeve¯vq আল্লাহর প্রশংসা ।”

**nv`xm:** “আয়েশা (রাঃ) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (mv:) hLb †Kvb cQ›`bxq wel q †`L‡Zb ZLb “আল্‌হাম্‌দুলিল্লা-হিল্লাযী বিনি‘মাতিহী তাতিম্মুস্‌ সা-wjnv-ZÓ co‡Zb| Avi hLb AcQ›`bxq †Kvb বিষয় দেখতেন তখন “ আল্‌হাম্‌দু লিল্লা-wn ÔAvjv-কুল্লিহা-wjbÓ co‡Zb|Ó (Be‡b gvRvn 3803)

‡gvi‡Mi AvIqv‡Ri `Av:

“আবু হুরাইরা (রাঃ) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) e‡j‡Qb: hLb †Zvgiv †gvi‡Mi AvIqvR ï‡bv তখন আল্লাহর অনুগ্রহ কামনা কর কারণ মোরগ †d‡ikZv‡`i †`‡L| Avi hLb Mvavi AvIqvR শুনো তখন শয়তান থেকে আল্লাহর আশ্রয় প্রার্থণা Ki †Kbbv Mvav kqZvb‡K †`‡L|Ó (Ave `vD` 5104)

`wðšZxq `i Kivi `Av:

اَللَّهُمَّ إِنِّي عَبْدُكَ وَابْنُ أَمَتِكَ نَاصِيَتِي فِي يَدِكَ مَاضٍ فِيَّ حُكْمُكَ عَدْلٌ فِيَّ قَضَائُكَ أَسْأَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَ لَكَ سَمَّيْتَ بِهِ نَفْسَكَ أَوْ أَنْزَلْتَهُ فِي كِتَابِكَ أَوْ عَلَّمْتَهُ أَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ أَوِ اسْتَأْثَرْتَ بِهِ فِي عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ أَنْ تَجْعَلَ الْقُرْآنَ رَبِيعَ قَلْبِي وَجَلَاءَ حُزْنِي وَذَهَابَ هَمِّي

D”PviY: “আল্লা-û¤§v Bbx ÔAve`Kv Iqv Beb AvgvwZK, bv-wmqvZx dx Bqvw`K, gv-wØb wdq¨v ûKgK, ÔAv`jb wdq¨v KvØv-DK, AvmAvjKv বিকুল্লি ইস্‌মিন হুওয়া লাকা সাম্‌ মাইতা বিহী bvdmvK, AvI AvbhvjZvû dx wKZvweK, AvI ‘আল্লামতাহু আহাদাম্‌ মিন্‌ খল্‌ক্বিক্‌, AvwemZvÕQvivZv wenx dx ÔBjwgj MvBwe ÔBb`vK, Avb ZvRÔAvjvj KiAv-bv ivexÔAv Kvjex, Iqv wRjv-Av ûhbx, Iqv hvnv-ev nv¤§x| Ó

“হে আল্লাহ! আমি আপনার বান্দা, আপনারই ev›`vi mšÍvb Ges GK ev›`xi †Q‡j, Avgvi fvM¨ Avcbvi nv‡Z, Avgvi e¨vcv‡i Avcbvi ûKg KvhKi, Avgvi cwZ Avcbvi dvqmvjv BbmvdcY©| Awg cv_bv KiwQ, Avcbvi †mB mKj cwZwU bv‡gi gva¨‡g hv Øviv Avcwb wb‡Ri bvg †i‡L‡Qb A_ev Avcbvi wKZv‡e Dnv bvwhj K‡i‡Qb A_ev mwóK‡ji KvD‡K Avcwb Zv wkwL‡q‡Qb A_ev Avcbvi A`k¨ Ávb‡b Dnv mwÂZ K‡i †i‡L‡Qb-Awg cv_bv KiwQ †h, KiAvb‡K Avgvi Aš‡ii ckwš- Ges Avgvi mKj `wðšv-`fvebv `i nIqv I D‡×M-DrKÉv AcmviY nIqvi gva¨g ewb‡q w`b|Ó

**nv`xm:** “আবদুল্লাহ ইবনে মাসউদ (রাঃ) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বলেছেন, কোন ব্যি³ `wðšvq c‡o Dc‡iv³ দুআটি পাঠ করলে আল্লাহ

(me:) Zvi `wðšÍv‡K Avb‡›` cwieZY K‡i w`‡eb|Ó (gmZv`iv‡K nv‡Kg 1877)

wkï‡`i e`bhi I Ab¨vb¨ ¶wZ †_‡K i¶vi `Av:

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّةِ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَهَامَّةٍ وَمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لاَمَّةٍ

D”PviY: ÒAvEh wewKwjgv-তিল্লা-wnZ Zv-¤§vwZ, মিন কুল্লি শাইত্বা-wbb, Iqv nv-¤§vwZb, Iqv wgb কুল্লি ‘আইনিন লা-¤§vwZb|Ó

“আমি আল্লাহর cY ¸bvejxi Kvwjgv Øviv Avkq cv_Yv KiwQ mKj kqZvb †_‡K, welai Rš I ¶wZi P¶ (e` bhi) †_‡K|Ó

**nv`xm:** ÒBe‡b Ave¨vm (iv:) †_‡K ewYZ, wZwb বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) হাসান ও হুসাইন (রাঃ) Gi Rb¨ Dc‡iv³ `AvwU c‡o cvbvn PvB‡Zb

Avi ej‡Zb, †Zvgv‡`i wcZv (Beivnxg Av.) Zvi `B cÎ BmgvCj I BmnvK (Av:) Gi Rb¨ GB `AvwU c‡o cvbvn PvB‡Zb|Ó (eLvix 3371)

bZb dj †`Lvi ci cwVZ `Av:

بَارِكْ لَنَا فِى ثَمَرِنَا وَبَارِكْ لَنَا فِى مَدِيْنَتِنَا وَبَارِكْ لَنَا فِى صَاعِنَا وَبَارِكْ لَنَا فِى مُدِّنَا

D”PviY: “আল্লা-û¤§v ev-wiK jvbv- dx Qvgvwibv- Iqv ev-wiK jvbv- dx gv`xbwZbv- Iqv ev-wiK jvbv- dx mv-ÕBbv Iqv ev-wiK jvbv dx gwÏbv- |Ó

Òহে আল্লাহ! আপনি আমাদের জন্য আমাদের ফল mg‡n eiKZ w`b| eiKZ w`b Avgv‡`i kn‡i| eiKZ w`b Avgv‡`i gvc mvgMx ÔmvÕ Gi g‡a¨ Ges Avgv‡`i Aci gvc mvgMx ÔgÏÕ (mvÕ Ges

gÏ Avie‡`i GKwU wbawiZ cwigvcK cvÎ) Gi g‡a¨|Ó

**nv`xm:** ÒAve ûivBiv (iv:) †_‡K ewYZ, †jv‡Kiv hLb bZb dj n‡Z †`LZ ZLb Zv wb‡q রাসূলুল্লাহ (সাঃ) এর নিকটে নিয়ে আসতেন। রাসূলুল্লাহ (সাঃ) তা হাতে নিয়ে উপরো³ `AwU cvV Ki‡Zb|Ó (gmwjg 3400)

†µva `gb Kivi `Av:

أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ

D"PviY: "আউযুবিল্লা-wn wgbvk kvBZv-wbi ivRxg|Ó

"আমি বিতারিত শয়তান থেকে আল্লাহর নিকট Avkq cv_Yv KiwQ|Ó

**nv`xm:** ÒmjvBgvb Be‡b miv` (iv:) n‡Z ewYZ, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) এর নিকটে দুইজন ব্যি³ SMov Ki‡jv| Zv‡`i GKR‡bi †Pnviv iv‡M jvj n‡q

গেল। রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বললেন আমি এমন একটি K_v Rwwb hw` †m GUv cvV K‡i Zvn‡j Zvi ivM cwwb n‡q hv‡e| Gici Dc‡iv³ `AwU cvV Ki‡jb|Ó (gmwjg 6813)

gRwj‡ki Kvddvivi `Av:

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ

D"PviY: Òmenv-নাকাল্লা-û¤§v Iqv wenvgw`Kv, আশ্হাদু আল্লা- Bjv-হা ইল্লা- AvšÍv, AvmZvMwdi"Kv Iqv AvZe BjvBK|Ó

"হে আল্লাহ! আমি তোমার প্রশংসার সাথে তোমার cweÎZv eYbv KiwQ| Awg mv¶¨ w`w"Q †h, Zwg Qvov Dcvmbvi †hvM¨ †Kvb cf †bB, Awg †Zvgvi wbKU ¶gv c_Yv KiwQ Ges †Zvgvi wbKU ZvIev KiwQ|Ó

**nv`xm:** ÒAve eviRv Avj Avmjvgx †_‡K ewYZ, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বললেন যখন কোন ব্যি³ †Kvb ˆeVK †_‡K DV‡Z Pvq ZLb †m †hb Dc‡iv³ `AvwU cvV K‡i| GK e¨w³ ck Ki‡jv †n আল্লাni ivmj! Avcwb Ggb GKwU K_v ej‡jb যা আগে কখনো বলেননি। রাসূলুল্লাহ (সাঃ) ej‡jb, GUv n‡"Q gRwj‡ki (†h mg¯ Ab_K K_v-evZv n‡q‡Q) Zvi Kvddvi ¯i/c|Ó (Ave `vD` 4861)

FY cwi‡kv‡ai mgq FY`vZvi Rb¨ `Av:

بَارَكَ اللَّهُ لَكَ فِي أَهْلِكَ وَمَالِكَ إِنَّمَا جَزَاءُ السَّلَفِ الْحَمْدُ وَالْأَدَاءُ

D"PviY: Òev-রাকাল্লা-û jvKv dx Avnwj Kv Iqv gv-wjK, Bbvgv- Rvhv-Dm mvjwd Avj nvg` Iqvj Av`v-D|Ó

“আল্লাহ আপনার সম্পদ ও পরিবারবর্গে বরকত `vb Ki“b| Avi FY`v‡bi webgq n‡”Q KZÁZv Ges mgqgZ wbawiZ welq Av`vq Kiv|Ó

**nv`xm:** ÒBmgvCj Be‡e Beivnxg Zvi wcZv †_‡K wZwb Zvi `v`v †_‡K eYbv K‡ib, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) আমার থেকে চল্লিশ হাজার †`invg FY wb‡qwQ‡jb| hLb Zvi wbKU gvj Avm‡jv Avgvi cvIbv Avgv‡K w`‡q w`‡jb Ges Avgvi Rb¨ Dc‡iv³ `Av Ki‡jb|Ó (bvmvqx 4697)

evRv‡i c‡e‡ki `Av:

لاَ إِلـه إِلاَّ اللهُ وَحْـدَهُ لاَ شَـرِيكَ لَـهُ، لَـهُ الْمُلْـكُ ، وَلَـهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ حَيٌّ لاَيَمُوتُ بِيَدِهِ الْخَيْـرُ ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

D"Pvib: Òjv-Bjv-হা ইল্লাল্লা-û Iqvn`vû jv-kvixKvjvû jvûj gjK Iqv jvûj nvg`, Bqnqx Iqv qgxZ, Iqvûqv nvBqb jv-BqvgZ, we Bqvw`wnj LvBi, Iqv ûqv ÔAvjv- কুল্লি শাইইন্ Kv`xi|Ó

"আল্লাহ ব্যতিত ইবাদতের যোগ্য †Kvb Bjvn †bB| wZwb GK, Zvi †Kvb kixK †bB, ivRZ ZviB, mg¯— cksmv ZviB, wZwb Rxeb `vb K‡ib Ges wZwbB gZ¨ `vb K‡ib, wZwb wPiÄxe, gZ¨ Zv‡K ¯úk Ki‡Z cv‡ibv| mKj cKvi Kj¨vY Zvi nv‡Z| wZwb mKj wKQi Dci ¶gZvevb|Ó

**nv`xm:** "সালেম ইবনে আবদুল্লাহ (রঃ) তার পিতা †_‡K wZwb Zvi wcZv (Igi iv.) †_‡K eYbv করেন, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বলেছেন, যে ব্যি³ evRv‡i c‡ek K‡i Dc‡iv³ `AwU cvV Ki‡jv আল্লাহ

(me:) Zvi Avgjbvgvq GK j¶ †bKx wj‡L †`b, GK j¶ ¸bvn g‡Q †`b Ges Zvi ghv`v GK j¶ ¯—i ewo‡q †`b|Ó (wZiwgwR 3428, nv`xmwU nvmvb chv‡qi)

Dc‡i DVvi mgq covi `Av:

للَّهُ أَكْبُر

D”PviY: “আল্লা-û AvKeviÓ|

“আল্লাহ সর্বাপেক্ষা মহান।”

wb‡Pi bvgvi mgq covi `Av:

سُبْحَانَ اللَّهِ

D”PviY: Òmenv-নাল্লা-nÓ|

“মহান আল্লাহর পবিত্রতা বর্ণনা করছি।”

nv`xm: “জাবের ইবনে আবদুল্লাহ (রাঃ) থেকে ewbZ, wZwb e‡jb Avgiv hLb Dc‡i DVZvg তখন ‘আল্লাহু আকবার’ বলতাম এবং যখন নীচে

নামতাম তখন ‘সুবহানাকাল্লাহুম্মা’ পড়তাম।” (eLvix 2993)

memgq cvV Kivi `Av:

سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ عَدَدَ خَلْقِهِ وَرِضَا نَفْسِهِ وَزِنَةَ عَرْشِهِ وَمِدَادَ كَلِمَاتِهِ

D"PviY: menv-নাল্লা-wn Iqv wenvgw`nx ÔAv`v`v LvjwKnx, Iqv wiØv- bvdwmnx, Iqv whbvZv ÔAviwknx, Iqv wg`v-`v Kwjgv-wZn|

ÒAwg Avল্লাহর এমন পবিত্রতা বর্ণনা করছি এবং cksmv KiwQ, hv Zvi mwói msL¨vi mgcwigvb, Zvi wb‡Ri mš'wói cwigvb, Zvi Avi‡ki IRb cwigvb Ges Zvi evYxmgn †jLvi Kvwj cwigvb|Ó

**nv`xm:** রাসূলুল্লাহ (সাঃ) তাঁর স্ত্রী জুয়াইরিয়া (রাঃ) †K Dc‡iv³ `AvwU wk¶v w`‡q‡Qb| Dc‡iv³ ZvmwenwU wZbevi cvV Ki‡j mviv w`‡bi mg¯

wKZve` `Av 127

whwKi-Zvmwe‡ni mgZj¨ n‡e| (gmwjg 7088; Ave `vD` 1505; Be‡b gvRvn 3808)

KvD‡K Mvwj w`‡q †dj‡j Zvi Rb¨ `Av:

فَأَيُّمَا مُؤْمِنٍ سَبَبْتُهُ فَاجْعَلْ ذَلِكَ لَهُ قُرْبَةً إِلَيْكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

D"PviY: "আল্লা-û¤§v dvAvBqgv- gÕwgwbb mveveZû, dvRÔAvj hv-wjKv jvû KievZvb BjvBKv Bqvlgvj wKqv-gvn|Ó

**A_© I nv`xm:** ÒAve ûivBiv (iv:) †\_‡K ewYZ তিনি বলেন, আমি রাসূলুল্লাহ (সাঃ) কে বলতে শুনেছি, হে আল্লাহ! যে কোন মুমিনকে আমি গালি w`‡qwQ IUv Zvi Rb¨ wKqvg‡Zi w`b Avcbvi wbKU ˆbK‡U¨i e¨e¯v K‡i w`b|Ó (eLvix 6361)

KvD‡K †Kvb kvw¯Í w`‡j ev Mvwj-MvjvR Ki‡j Zvi Rb¨ `Av:

اللَّهُمَّ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ فَأَيُّمَا رَجُلٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ سَبَبْتُهُ أَوْ لَعَنْتُهُ أَوْ جَلَدْتُهُ فَاجْعَلْهَا لَهُ زَكَاةً وَرَحْمَةً

D”PviY: “আল্লা-û¤§v Bbvgv- Avbv evkvi“b, dvAvBqgv- iRwjg wgbvj gmwjgxbv mveveZû Avl jvÔAvbZû Avl Rvjv`Zû, dvRÔAvjnv-jvû hvKv-Zvl Iqv ivngvn|Ó

Ò†হ আল্লাহ! আমি একজন মানুষ। আমি যদি কোন gmwjg e¨w³‡K Mvwj †`B A\_ev Awfkvc †`B A_ev kvw¯Í †`B Zwg Zv Zvi Rb¨ (Zvi ¸bv‡ni) cweÎZv I †Zvgvi ingZ wnmv‡e avh Ki|Ó

nv`xm: (gmwjg 6781)

†KD cksmv Ki‡j DË‡i wK ej‡e:

اَللُّهُمَّ لَا تُؤَاخِذْنِي بِمَا يَقُوْلُوْنَ وَاغْفِرْ لِي مَا لَا يَعْلَمُوْنَ

D"PviY: "আল্লা-û¤§v jv- ZAv-wLhbx wegv- BqvKjbv IqvM wdiijx gv-jv- BqvÕjvgb|Ó

Ò†হ আল্লাহ! যা বলা হচ্ছে তার জন্য আমাকে cvKovI Ki bv, Avgv‡K ¶gv Ki hv Zvi Rv‡b bv Zvi †_‡K|Ó

**nv`xm:** ÒAv`x Be‡b AviZvZ (i:) e‡jb, GKRb mvnvexi cksmv Kiv n‡j wZwb GB `Av cvV Ki‡jb|Ó (Av`vej gdiv` eLvix 761, nv`xmwU mnxn mb‡` ewYZ)

Avhv‡bi mgq Kibxq:

আবু হুরাইরা (রাঃ) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) e‡j‡Qb, hLb gAwh¾b Avhvb †`q ZLb †ZvgivI Zvi K_v¸‡jv ej| Z‡e ÔnvBq¨v Avjvm mvjvnÕ I ÔnvBq¨v Avjvj dvjvnÕ ejvi

সময় ‘লা হাওলা ওয়ালা কুউওয়াতা ইল্লা বিল্লাহী’ ej‡e|Ó (Be‡b gvRvn 718)

ÒAvbvm Be‡b gv‡jK (iv:) †_‡K ewYZ, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বলেছেন, আযান ও ইকামতের gv‡S †Kvb †`vqv wedj nq bv|Ó (mbv‡b Ave `vD` 521; mbv‡b wZiwgwR 212)

Avhv‡bi c‡ii †`vqv:

اللَّهُمَّ رَبَّ هَذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلاَةِ الْقَائِمَةِ آتِ مُحَمَّدًا

الْوَسِيلَةَ وَالْفَضِيلَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَحْمُودًا الَّذِى وَعَدْتَهُ

D”PviY: “আল্লা-û¤§v ieŸv nv-whwn` `vÕIqvwZZ Zv-¤§vn, Iqvm mvjv-wZj Kv-Bgvn, Av-wZ gnv¤§v`wbj IqvmxjvZv Iqvj dv`xjvn, Iqve ÔAvQû gvKv-মাম্ মাহমূদানিল্লাযী ও‘আদ্দাহ।”

“হে আল্লাহ! এই সার্বিক আহবান ও প্রতিষ্ঠিত mvjv‡Zi ie! gnv¤§` (mv:) †K Imxjv Ges dhxjZ Z_v D”PZg ghv`v `vb K‡iv| Avi,

Zv‡K gvKv‡g gvng‡` (cksmwZ ¯'v‡b) †cŠwQ‡q `vI, hvi cwZk"wZ Zwg Zv‡K w`‡q‡Qv| wbðq Zwg Iqv`v f½ K‡ivbv|Ó

nv`xm: "জাবের (রাঃ) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (mv:) e‡j‡Qb, †h e¨w³ gAvhwh‡bi Avhvb ï‡b Dc‡iv³ †`vqv cvV Ki‡e wKqvg‡Zi w`b †m Aek¨B kvdvAv‡Zi (mcvwi‡ki) nK`vi n‡e|Ó (mnxn eLvix 614; Ave `vD` 529; wZiwgwR 211; bvmvqx 680)

Av‡iKwU `Av:

أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَـهَ إِلاَّ اللَّـهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَـهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ رَضِيتُ بِاللَّـهِ رَبًّا وَبِمُحَمَّدٍ رَسُولاً وَبِالإِسْلاَمِ دِينًا

D"PviY: ÒAvknv` আল্লা- Bjv-হা ইল্লাল্লা-û Iqvn`vn jv- kvixKvjvn, Iqv Avbv gnv¤§v`vb 'আব্দুহূ ওয়া রাসূলুহ, রাদ্বীতু বিল্লা-wn ieŸvb,

Iqvwe gnv¤§vw`b ivmjvb Iqv wej Bmjvgx Øxbvb|Ó
“আমিও সাক্ষ্য দিচ্ছি আল্লাহ ছাড়া সত্যিকার কোন gvÕe` †bB, wZwb GK, Zvi †Kvb kixK †bB| gnv¤§v` (mv:) Zvi ev›`v Ges ivmj| Awg আল্লাহকে রব, মুহাম্মদ (সাঃ) কে রাসূল এবং Bmjvg‡K Øxb wn‡m‡e jvf K‡i cwiZó|Ó

**nv`xm:** ÒmvÕ` Be‡b Avex Iqv°vm (iv:) রাসূলুল্লাহ (সাঃ) থেকে বর্ণনা করেন, যে ব্যি³ Avhvb ï‡b Dc‡iv³ †`vqv cvV Ki‡e Zvi mg¯- ¸bvn ¶gv K‡i †`Iqv n‡e|Ó (gmwjg 877; Ave `vD` 525; Be‡b gvRvn 721; wZiwgwR 210)

‡Kvb Kv‡di mvjvg w`‡j DË‡i ej‡e:

وَعَلَيْكُمْ

D”PviY: IqvÔAvjvBKg|

‡Zvgv‡`i Dcil ewlZ †nvK|

**nv`xm:** Avbvm (iv:) e‡jb,hLb †Kvb Av‡j wKZve †Zvgv‡`i mvjvg †`q ZLb †Zvgiv ÔIqvÔjvBKgÕ ej‡e| (eLvix 6257)

`v¾v‡ji †dZbv †_‡K evPvi `Av:

আবু দারদা (রাঃ) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) Bikv` K‡i‡Qb, †h e¨w³ miv Kvnv‡di c_g `k AvqvZ gL¯Í Ki‡jv Zv‡K `v¾v‡ji †dZbv †_‡K i¶v Ki‡eb| (gmwjg 1919)

gnwig e¨w³i Zvjweqv:

gnwig e¨w³ n¾ Ges Dgiv‡Z wb‡æi Zvjweqv cvV Ki‡e:

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ

D”PviY: “লাব্বাঈক আল্লা-û¤§v jveŸvCK, jveŸvCK jv- kvixKvjvKv jveŸvCK, Bbvj nvg`v Iqvb wbÔgvZv jvKv Iqvj gjK jv- kvixKvjvK|Ó

“হে আল্লাহ! আমি তোমার দরবারে উপস্থিত, আমি †Zvgvi `iev‡i Dcw¯'Z, Awg †Zvgvi `iev‡i Dcw¯'Z, †Zvgvi †Kvb Aswk`vi †bB, †Zvgvi `iev‡i Dcw¯'Z n‡qwQ| me cKvi cksmv Ges †bqvg‡Zi mvgMx meB‡Zv †Zvgvi, meh‡M I meÎ †ZvgviB ivRZ, †Zvgvi †Kvb Askx`vi †bB|

**nv`xm:** আবদুল্লাহ ইবনে ওমর (রাঃ) রাসূলুল্লাহ (mv:) Gi GB Zvjweqv eYbv K‡i‡Qb| (eLvix 1549; gmwjg 2868; Ave `vD` 1814; Be‡b gvRvn 2918; wZiwgwR 826)

i“K‡b Bqvgvbx I nvR‡i Avm Iqv‡`i gv‡Si `Av:

رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

D”PviY: Òie¨vbv- Av-wZbv- wd` `bBqv- nvmvbvZvI Iqv wdj Av-wLiwZ nvmvbvn, Iqv wKbv- ÔAvhv-evb bv-i|Ó

Ò†n Avgv‡`i ie, Avgv‡`i‡K `wbqv‡Z Kj¨vY w`b| Avi AwLiv‡ZI Kj¨vY w`b Ges Avgv‡`i‡K Av¸‡bi Avhve †_‡K i¶v Ki“b|Ó (miv evKvi 2:201)

**nv`xm:** Avevদুল্লাহ ইবনে সায়েব (রাঃ) বলেন, আমি রাসূলুল্লাহ (সাঃ) কে উ³ ¯v‡b GB `Av cvV Ki‡Z ï‡bwQ| (Ave `vD` 1894)

mvdv-gvi Iqvq cvV Kivi `Av:

mvdv cvnv‡o Av‡ivnb K‡i cvV Kivi `Av:

إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ

D”PviY: ÒBbvm mvdv Iqvj gviIZv wgb শাআইরিল্লাহ।”

A_: Òwbðq mvdv-মারওয়া পাহাড় আল্লাহর wb`kYvejxi ga¨ †_‡K Ab¨Zg wb`kY|Ó (miv evKvi 2:158)

Gici ej‡e:

أَبْدَأُ بِمَا بَدَأَ اللَّهُ بِهِ

D”PviY: ÒAve`াউ বিমা বাদাআল্লাû wenxÓ|

অর্থ: “ আল্লাহ (সুব:) যেভাবে শুরু করেছেন Awg I †mfv‡e ïi“ KiwQ|Ó

mvdv cvnv‡o D‡V wKejvi w`‡K gL K‡i GB `ÕAv cvV Ki‡e:

لاإِلَهَ إِلاَّاللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَلَهُ لَهُ الْمُلْكُوَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كَلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ لاإِلَهَ إِلاَّاللَّهُ وَحْدَهُ أَنْجَزَ وَعْدَهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَهَزَمَ الأَحْزَابَ وَحْدَهُ

উচ্চারণ: “ লা ইলাহা ইল্লাû, An`vû jv kvixKv jvû, jvûj gjK, Iqv jvûj nvg`, Iqvûqv আলা কুল্লি শাই ইন কাদীর,। লা ইলাহা ইল্লাû, An`vû AvbRvhv IqvÕ`vû, Iqv bvmviv Ave`vû ,Iqv nvhvgvj Avnhvev Iqvn`vûÓ|

অর্থ: “ আল্লাহ ছাড়া কোন ইলাহ নেই। তিনি GKK| Zvi †Kvb kixK †bB| mKj ¶gZv Zvi, Ges mKj cksmvi Dch³ wZwbB, wZwb mKj কিছুর উপর ক্ষমতাবান। আল্লাহ ছাড়া কোন ইলাহ †bB, wZwb GKK, wZwb Zvi Iqv`v cY K‡ib, Zvi ev›`v‡`i mvnvh¨ K‡ib Ges GKvB mw¤§wjZ

`kgb ewwnbx‡K ciwRZ K‡ib|Ó GB `ÕAv wZbevi cvV Ki‡e| (gmwjg 3009)

Avivdv‡Zi gq`v‡bi m‡evËg `ÕAv:

لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

D"PviY: "লা ইলাহা ইল্লাû In`vû jv kvixKv jvû jvûj gjK Iqv jvûj nvg` Iqvûয়া আলা কুল্লি kvBBb Kv`xi|Ó

অর্থ: "আল্লাহ ব্যতিত আর কোন (হক্ব) ইলvn †bB| wZwb GK I GKK Zvi †Kvb kixK †bB| mKj ¶gZvi gvwj †Kej gvÎ wZwbB| mKj cksmvi gvwjK wZwbB| wZwb me wKQi Dci kw³kvjx|Ó

nv`xm: ÒAvgi Be‡b ïAvBe Zvi wcZv wZwb তাঁর দাদা সুত্রে বর্ণনা করেন, রাসূলুল্লাহ (সাঃ)

Bikv` K‡i‡Qb, me‡P‡q DËg `ÕAv Avivdv‡Zi gq`v‡bi `ÕAv, Ges me‡P‡q DËg K_v hv Awg e‡jwQ Ges Avgvi c‡ei mKj bvexMY e‡j‡Qb Zv n‡”Q GB (GB Dc‡iv³ `Av)| (wZiwgwR 3585)

cwZ Rvgivq cv_i gvivi mgq ZvKexi ev আল্লা-û AvKevi cvV Ki‡e| (gmwjg 3191)

ZZxq Aa¨vq

mKvj mÜ¨vi `Av

AvqvZj Kimx: mKv‡j, mÜ¨vq, wb`vi c‡e I c‡ZK diR mvjv‡Zi c‡i GKevi K‡i cvV Ki‡e|

اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ

D”PviY: আল্লা-û jv-Bjv-হা ইল্লা- ûIqvj nvBq¨j KvBq¨g, jv-ZvÕLhû wmbvZI Iqvjv-bvDg, jvû gv- wdm mvgv-Iqv-wZ I gv- wdj আরদ্, মান্ জাল্লাযী ইয়াশ্ফা‘উ ‘ইন্দাহু ইল্লা-

weBhwbn, BqvÔjvg gv- evBbv AvB`xwng Iqvgv-
Lvjdvûg, Iqvjv- BDnxZbv we kvBBg wgb
‘ইলমিহী ইল্লা- wegv- kv-, IqvwmÔAv Kiwmq¨ûm
mvgv-Iqv-wZ Iqvj AviØv Iqvjv- BqvE`û
হিফ্‌জুহুমা ওয়াহুয়াল ‘আল্লিয়্যুল ‘আজীম।

ÒAvjvn, wZwb Qvov †Kvb (mZ¨) Bjvn †bB,
wZwb wPiÄxe, mcwZwôZ aviK| Zv‡K Z›`v I
wb`v ¯úk K‡i bv| Zvi Rb¨B Avmgvbmg‡n hv
i‡q‡Q Zv Ges hgx‡b hv Av‡Q Zv| †K †m, †h
Zvi wbKU mcvwik Ki‡e Zvi AbgwZ Qvov?
wZwb Rv‡bb hv Av‡Q Zv‡`i mvg‡b Ges hv Av‡Q
Zv‡`i †cQ‡b| Avi Zviv Zvi Áv‡bi mvgvb¨
cwigvYI AvqZ Ki‡Z cv‡i bv, Z‡e wZwb hv
Pvb Zv Qvov| Zvi Kimx Avmgvbmgn I hgxb
cwie¨vß K‡i Av‡Q Ges G `Ô‡Uvi msi¶Y Zvi
Rb¨ †evSv nq bv| Avi wZwb mD”P, gnvb|Ó

dhxjZ: kqZvb Zvi wbKUeZx n‡e bv| Ges GB `Av Rvbv‡Zi c‡e‡ki Ab¨Zg gva¨g| (eLvix 3275)

miv evKvivi †kl wZb AvqvZ: wb`vq hvIqvi c‡e GKevi cvV Ki‡e|

﴿لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَإِنْ تُبْدُوا مَا فِي أَنْفُسِكُمْ أَوْ تُخْفُوهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللَّهُ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ **(284)** آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ كُلٌّ آمَنَ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْ رُسُلِهِ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ **(285)** لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا

وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا أَنْتَ مَوْلَانَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ

D"PviY: "লিল্লা-wn gv- wdm mvgv-Iqv-wZ Iqvgv-wdj AviØ, Iqv Bb Ze` gv- dx AvbdwmKg AvI ZLdû Bqnv-সিব্‌কুম বিহিল্লা-n, dvBqvMwdi" wjgvB Bqvkv-D Iqv BDAvh wheগvB Bqvkv-, ওয়াল্লাহু 'আলা- কুল্লি শাই ইন্‌ Kv`xi| Av-gvbvi ivmj wegv- Dbwhjv BjvBwn মির্‌ রব্বিহী ওয়াল মু'মিনূন, কুল্লুন আ-মানা বিল্লাহী Iqv gvjv-BKwZnx Iqv KZwenx Iqv i"mwjnx, jv- bdvwiK evBbv Avnw`g wgi i"mwjn, Iqv Kv-j mvwgÔbv- IAv ZvÔbv ¸div-bvKv ieŸvbv-Iqv BjvBKvj gvmxi, jv-ইয়ুকাল্লিফুল্লা-û bvdmvb ইল্লা উস্‌'আহা, লাহা- gv- KvmvevZ Iqv ÔAvjvBnv- gvK ZvmvevZ, ieŸvbv- jv ZAv-

wLhbv Bb bvmxbv AvI AvLZvÔbv-, ieŸvbv- Iqv jv- Zvnwgj ÔAvjvBbv- Bmivb Kvgv- nvgvjZvû ‘আলাল্লাযীনা মিন ক্বাবলিনা-, ieŸvbv- Iqv jv- Znwg¤§jbv- gv-jv- Zv-KvZvjvbv- wen, IqvÕd ÔAvbv IqvMwdi jvbv- Iqvi nvgbv-, Avšv gvIjv-bv dvbmibv- Avjvj KvIwgj Kv-wdixb|Ó

“আল্লvni Rb¨B hv i‡q‡Q Avmgvbmg‡n Ges hv i‡q‡Q hgx‡b| Avi †Zvgiv hw` cKvk Ki hv †Zvgv‡`i Aš‡i i‡q‡Q A_ev †Mvcb Ki, Avj-vn †m wel‡q †Zvgv‡`i wnmve †b‡eb| AZ:ci wZwb hv‡K Pvb ¶gv Ki‡eb, Avi hv‡K Pvb আযাব দেবেন। আর আল্লvn mewKQi Dci ¶gZvevb| ivmj Zvi wbKU Zvi i‡ei c¶ †_‡K bvwhjKZ wel‡qi cwZ Cgvb G‡b‡Q, Avi gwgbMYI| c‡Z¨‡ক ঈমান এনেছে আল্লvni Dci,

Zvi †d‡ikZvKj, wKZvemgn I Zvi ivmjM‡Yi Dci, Avgiv Zvi ivmjM‡Yi Kvil g‡a¨ ZviZg¨ Kwi bv| Avi Zviv e‡j, Avgiv ïbjvg Ges gvbjvg| †n Avgv‡`i ie! Avgiv AvcbviB ¶gv cv_bv Kwi, Avi Avcbvi w`‡KB প্রত্যাবর্তনস্থল। আল্লাহ কোন ব্যি³‡K Zvi mvg‡_¨i evB‡i `wqZ †`b bv| †m hv ARb K‡i Zv Zvi Rb¨B Ges †m hv KvgvB K‡i Zv Zvi DciB eZv‡e| †n Avgv‡`i ie! Avgiv hw` f‡j hvB, A_ev fj Kwi Zvn‡j Avcwb Avgv‡`i‡K cvKovI Ki‡eb bv| †n Avgv‡`i ie, Avgv‡`i Dci †evSv Pwc‡q †`‡eb bv, †hgb Avgv‡`i ceeZx‡`i Dci Pwc‡q w`‡q‡Qb| †n Avgv‡`i ie, Avcwb Avgv‡`i‡K Ggb wKQ enb Kiv‡eb bv, hvi mvg_¨ Avgv‡`i †bB| Avi Avcwb Avgv‡`i‡K gvRbv Ki“b Ges

Avgv‡`i‡K ¶gv Ki“b, Avi Avgv‡`i Dci `qv Ki“b| Avcwb Avgv‡`i Awffve K| AZGe Avcwb Kwdi m¤c`v‡qi wei“‡× Avgv‡`i‡K mvnvh¨ Ki“b|Ó (miv evKvivi 2:284-286)

dwhjZ: ÒBe‡b gvmD` (iv:) †_‡K ewYZ, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বলেছেন, যে ব্যক্তি iv‡Zi †ejv miv evKvivi †kl `B AvqvZ cvV Ki‡e iv‡Zi Awbó †_‡K GB AvqvZ`wUB Zvi Rb¨ h‡_ó n‡e|Ó (eLvix 4753)

miv BLjvm, dvjvK I bvm: mKv‡j, mÜ¨vq I cwZ mvjv‡Zi ci cvV Ki‡e|

miv BLjvm:

قُلْ هُوَ اللَّـهُ أَحَدٌ (1) اللَّـهُ الصَّمَدُ (2) لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ (3) وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ (4)

D"PviY: ÒKj হুয়াল্লা-û Avnv`, আল্লা-ûm mvgv`, jvg Bqwj` Iqv jvg ইঊলাদ, ওয়ালাম ইয়াকুল্লা-û Kd Iqvb Avnv`|Ó

"বল, তিনিই আল্লাহ, এক-অদ্বিতীয়। আল্লাহ কারো gLv‡c¶x bb, mK‡jB Zvi gLv‡c¶x| wZwb KvD‡K Rb¥ †`bwb Ges Zv‡K I Rb¥ †`qv nqwb| Avi Zvi †Kvb mgK¶ I †bB|Ó

miv dvjvK:

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ (1) مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ (2) وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ (3) وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ (4) وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ (5)

D"PviY: ÒKj AvÔEh weiweŸj dvjvK, wgb kviwi gv- LvjvK, Iqv wgb kviwi Mv-wQwKb Bhv-IqvKve, Iqv wgb kviwib bvddv-Qv-wZ

wdj ÔDKv`, Iqv wgb kviwi nv-wmw`b Bhv-nvmv`|Ó

Òej, ÔAvwg Avkq cv_bv KiwQ Elvi i‡ei Kv‡Q, wZwb hv mwó K‡i‡Qb Zvi Awbó †_‡K, Avi iv‡Zi AÜKv‡ii Awbó †_‡K hLb Zv Mfxi nq, Avi wMivq d-`vbKvix bvix‡`i Awbó †_‡K, Avi wnsm‡Ki Awbó †_‡K hLb †m wnsmv K‡iÕ|Ó

miv bvm:

{قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ (1) مَلِكِ النَّاسِ (2) إِلَهِ النَّاسِ (3) مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ (4) الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ (5) مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ (6) }

D”PviY: ÒKj AvÔDh we iwe¦b bvm, gwwjwKb bv-m, Bjv-wnb bv-m, wgb kviwij Iqvm Iqv-

wmj Lvbv-স, আল্লাযী ইউওয়াস্ ভিসু ফী ছুদূরিন্ bv-m, wgbvj wRbwZ Iqvb bv-m|Ó

Òej, ÔAwg Avkq PvB gvb‡li ie, gvb‡li AwacwZ, gvb‡li Bjvn-Gi Kv‡Q, KgšYv`vZvi Awbó †_‡K, †h `"Z AvZ¥ †Mvcb K‡i| †h gvb‡li g‡b KgšYv †`q wRb I gvbl †_‡K|Ó

**nv`xm:** "আয়েশা (রাঃ) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (mv:) cwZw`b iv‡Z Ngv‡bvi mgq Dc‡iv³ wZbwU miv c‡o nv‡Z d w`‡q kwi‡ii hZUK ¯vb m¤e gvmvn Ki‡Zb|Ó (eLvix 5017; Ave `vD` 5057; wZiwgwR 3402)

mh †Wvevi c‡i gvMix‡ei Avhv‡bi mgq cvV Kivi `Av:

اللَّهُمَّ إِنَّ هَذَا إِقْبَالُ لَيْلِكَ وَإِدْبَارُ نَهَارِكَ وَأَصْوَاتُ دُعَاتِكَ فَاغْفِرْ لِي

D"PviY: "আল্লা-û¤§v Bbv nv-hv- BKev-j

jvBwjKv Iqv B`ev-i“ bvnv-wiKv Iqv Avm Iqv-Z `ÔAv-wZKv dvMwdi jx|Ó
“হে আল্লাহ! এটা হচ্ছে রাত্রির আগমন ও দিনের c¯v‡bi mgq Avi GB AvIqvR n‡”Q †Zvgvi cwZ Avnev‡bi AvIqvR Kv‡RB Zwg Avgv‡K ¶gv Kiv|

**nv`xm:** ÒD‡¤§ mvjvg (iv:) †_‡K ewYZ, রাসূলুল্লাহ (সা:) তাকে মাগরিবের আযানের সময় Dc‡iv³ `AwU cvV Kivi Rb¨ e‡j‡Qb|Ó (Ave `vD` 530)

mKv‡j wZbevi, mÜ¨vq wZbevi cvV Kivi `Av:

بِسْمِ اللَّهِ الَّذِى لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَىْءٌ فِى الْأَرْضِ وَلَا فِى السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

D”PviY: “বিস্মিল্লা-হিল্লাযি লা-BqvØi i“ gvÔAvmwgnx kvBDb wdj AviwØ Iqvjv- wdm mvgv-B, Iqv û Iqvm mvgxÔDj ÔAvjxg|Ó

“শুরু করছি সেই আল্লাহর bv‡g, hvi bv‡gi mv‡_ Avmgvb I hwg‡bi †Kvb e¯B †Kvb ¶wZ Ki‡Z cv‡i bv, wZwb gnv‡kvZv gnvÁvbx|Ó

**nv`xm:** “ওসমান (রাঃ) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (mv:) e‡j‡Qb, †h e¨w³ Dc‡iv³ `AvwU mKv‡j wZb evi cvV Ki‡e mÜ¨v chš— †m †Kvb AvKw¯§K wec‡`i m¤§wLb n‡e bv| Avevi †h e¨w³ mÜ¨vq Zv wZb evi cvV Ki‡e mKvj chš— †m AvKw¯§K †Kvb wec‡`i m¤§Lxb n‡e bv|Ó (Ave `vD` 5090)

mÜ¨vq cvV Kivi `Av:

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

D”PviY: AvÔEhwe Kwjgv-তিল্লা-wnZ Zv-¤§vwZ wgb kvi wi gv- LvjvK|

“আশ্রয় প্রার্থণা করছি আল্লাহর পরিপূর্ণ বাণী mg‡ni gva¨‡g Zvi mwói mKj cKvi Awbó †_‡K|Ó

**nv`xm:** ÒAve ûivBiv (iv:) †_‡K ewYZ, GK e¨w³ রাসূলুল্লাহ (সাঃ) এর নিকটে এসে বললো হে আল্লাহর রাসূল (সাঃ) আমাকে বিচ্ছু দংশন করেছে। রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বললেন, যদি তুমি mÜ¨v‡ejv Dc‡iv³ `AvwU cvV Ki‡Z Zvn‡j †Kvb wKQB †Zvgvi †Kvb ¶wZ Ki‡Z cvi‡Zv bv|Ó (gmwjg 7055)

mÜ¨vq GKevi cvV Kivi `Av:

رَضِيتُ بِاللَّهِ رَبًّا وَبِالإِسْلاَمِ دِينًا وَبِمُحَمَّدٍ رَسُولاً

D”PviY: “রাদ্বিতু বিল্লা-wn ieŸvI IqvwejBmjv-wg Øxbv I Iqvwe gnv¤§vw`b ivmjv|Ó

“আমি সন্তুষ্টচিত্তে গ্রহণ করছি আল্লাহ (সুবঃ) কে ie wnmv‡e Bmjvg‡K Rxeb e¨e¯’v wnmv‡e Ges gnv¤§` (mv:) †K ivmj wnmv‡e|Ó

**nv`xm:** ÒAve mvB` L`ix (iv:) †_‡K ewYZ, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বলেছেন, যে ব্যক্তি GB `AvwU পাঠ করবে আল্লাহর (সুবঃ) উপর আবশ্যক হয়ে hvq Zv‡K Rvbv‡Z c‡ek Kiv‡bv|Ó (Ave `vD` 1531, Kvbhj D¤§vj 3565)

mKv‡j I mÜ¨vq 1 evi cvV Kivi `Av:

اللَّهُمَّ بِكَ أَصْبَحْنَا وَبِكَ أَمْسَيْنَا وَبِكَ نَحْيَا وَبِكَ نَمُوتُ وَإِلَيْكَ النُّشُورُ

D”PviY: “আল্লা-û¤§v weKv Avmevnbv- Iqv weKv AvgmvBbv- Iqv weKv bvnBqv- Iqv weKv bvgZ Iqv BjvBKvb bki|Ó

“হে আল্লাহ! তোমার অনুগ্রহে সকাল করেছি এবং †Zvgvi AbM‡n mÜ¨v K‡iwQ, †Zvgvi Ki“Yvq

Rxeb jvf Kwi Ges †Zvgvi B”Qvq Avgiv gZ¨ eiY Kie, Avi wKqvgZ w`e‡m †Zvgvi Kv‡QB cYi“wÌZ n‡Z n‡e|Ó

**nv`xm:** ÒAve ûivBiv (iv:) †_‡K ewYZ, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) সকালে একবার এই দুআটি পাঠ Ki‡Zb|Ó (Ave `vD` 5070)

mKv‡j 1 evi cvV Kivi `Av:

أَصْبَحْنَا عَلَى فِطْرَةِ الْإِسْلَامِ وَكَلِمَةِ الْإِخْلَاصِ وَدِينِ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمِلَّةِ أَبِينَا إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ

D”PviY: ÒAvmevnbv ÔAvjv wdZiwZj Bmjv-g Iqv Kwjgv-wZj BLjv-wm Iqv Øxwb bwewq¨bv- মুহাম্মাদিন সাল্লাল্লা-হু ‘আলাইহি ওয়া সাল্লাম, ওয়া মিল্লাতি আবীনা- Beiv-nxgv nvbxdvI Iqvgv- Kv-bv wgbvj gkwiKxb|Ó

ÒmKvj KiwQ Bmjv‡gi wdZiv‡Zi Dci, GKwbô evbxi Dci, Avgv‡`i bex gnv¤§` (mv:) Gi a‡gi Dci Ges Avg‡`i wcZv Beivnxg (Av:) এর মিল্লাতের উপর, তিনি একনিষ্ঠ মুসলিম Ges wZwb gkwiK‡`i Aš—f³ wQ‡jb bv|Ó (gmbv‡` Avng` 15367| mbvbj Keiv bvmvqx 9829)

mKv‡j wZbevi mÜ¨vq wZbevi cvV Kivi `Av:

اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي بَدَنِي اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي سَمْعِي اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي بَصَرِي لاَإِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ

D"PviY: "আল্লা-হুম্মা 'আফিনী ফী বাদানী, আল্লা-হুম্মা 'আফিনী ফী সাম্'ঈ, আল্লা-û¤§v ÔAvwdbx dx evmvix jv-Bjv-হা ইল্লা- AvšÍv|Ó

"হে আল্লাহ! অvcwb Avgvi †`‡ni m¯Zv `vb Ki"b, keb kw³ I `wó kw³‡K wbivc` ivLb| Avcwb Qvov Bev`‡Zi †hvM¨ †KD †bB|Ó

**nv`xm:** ÒAve`i ingvb Be‡b Avex evKivn (রা:)তার পিতা থেকে বর্ণানা করেন: রাসূলুল্লাহ Dc‡iv³ `AvwU mKv‡j wZbevi Ges mÜ¨vq wZbevi cvV Ki‡Zb|Ó (Ave `vD` 5092)

mKv‡j 1 evi cvV Kivi `Av:

اللَّهُمَّ إِنِّى أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِى الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ اللَّهُمَّ إِنِّى أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِى دِينِى وَدُنْيَاىَ وَأَهْلِى وَمَالِى اللَّهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِى وَآمِنْ رَوْعَاتِى اللَّهُمَّ احْفَظْنِى مِنْ بَيْنِ يَدَىَّ وَمِنْ خَلْفِى وَعَنْ يَمِينِى وَعَنْ شِمَالِى وَمِنْ فَوْقِى وَأَعُوذُ بِعَظَمَتِكَ أَنْ أُغْتَالَ مِنْ تَحْتِى

D"PviY: "আল্লা-û¤§v Bbx AvmAvjKvj ÔAwdqvZv wd` `bBqv- Iqvj Av-খিরাতি, আল্লা-û¤§v Bbx AvmAvjKvj ÔAvdIqv Iqvj ÔAwdqvZv dx Øxwb Iqv `bBqv-qv Iqv Avnjx Iqv gv-লী, আল্লা-û¤§vmZi ÔAvIiv-Zx Iqv Av-

wgb ivIÔAv-তী, আল্লা-û¤§vndvRbx wgb evBwb Bqv`vBq¨v Iqv wgb Lvjdx, Iqv ÔAvb Bqvwgbx Iqv ÔAvb wkgv-jx, Iqv wgb dvIKx, Iqv AvÔEh weÔAvhgvwZKv Avb DMZv-jv wgb ZvnZx|Ó

“হে আল্লাহ! আমি Avcbvi Kv‡Q `wbqv I আখিরাতের নিরাপত্তা কামনা করছি, হে আল্লাহ! Avwg cv_Yv KiwQ Avcbvi KvQ ¶gvi Ges Avgvi Øxb, `wbqv, cwievi-cwiRb Ges m¤ú‡`i নিরাপত্তা। হে আল্লাহ! আমার গোপন বিষয় সমূহ (†`vI-Î“wU) †X‡K ivLb Ges Avgv‡K fq-fxwZ থেকে নিরাপদ রাখুন। হে আল্লাহ! Avcwb Avgv‡K †ndvhZ Ki“b Avgvi m¤§L †_‡K, wcQb †_‡K, Wvb w`K †_‡K, evg w`K †_‡K Ges Dci w`K †_‡K| Avi Avcbvi gn‡Zi DwQjv w`‡q Avcbvi wbKU Avkq cv_Yv KiwQ wb‡Pi w`K

†_‡K gwwU a‡m Avgvi AvKwk®§K gZ¨ nIqv †_‡K|Ó

**nv`xm:** “আবদুল্লাহ ইবনে ওমর (রাঃ) থেকে বYZ, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) সর্বদাই সকাল সন্ধ্যায় উপরো3 `AwwU cvV Ki‡Zb|Ó (Ave `vD` 5076)

PZ_ Aa¨vq

mvjv‡Zi `Av

mvjv‡Zi wfZ‡ii wewfb `Av mgn:

ZvKex‡i Zvnixgvi c‡ii `Av:

اللَّهُمَّ بَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ اللَّهُمَّ نَقِّنِي مِنَ الْخَطَايَا كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الْأَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ اللَّهُمَّ اغْسِلْ خَطَايَايَ بِالْمَاءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرَدِ

D”PviY: আল্লা-û¤§v ev-Ôwq` evBbx Iqv evBbv LvZv-Bqv-qv Kvgv- ev-ÔAv`Zv evBbvj gvkwiwK ওয়াল মাগ্‌রিবি, আল্লা-û¤§v bvK wKbx wgbvj LvZv-Bqv- Kvgv- BDbvK KvQ Qvlej AveBqv` মিনাদ্ দানাসি, আল্লা-û¤§vMwmj LvZv-Bqv-qv wej gv-B, IqvQ Qvj wR, Iqvj evivw`|

A_: Òহে আল্লাহ! তুমি আমার এবs Avgvi cvc mg‡ni gv‡S Ggb `iZ mwó Ki“b †hgb `iZ mwó K‡i‡Qb পূর্ব ও পশ্চিমের মাঝে। হে আল্লাহ! Avcwb Avgv‡K Ggbfv‡e cvcvPvi †_‡K cwi®‹vi Ki“b †hgb mv`v Kvco‡K gqjv †_‡K †aŠZ করে পরিচ্ছন্ন করা হয়। হে আল্লাহ! তুমি আমার ¸bvn mgn cwb, eid I wkwki Øviv †aŠZ K‡i `vI|

nv`xm: "রাসূলুল্লাহ (সাঃ) তাকex‡i Zvnixgv Ges wKiv‡Zi gvSLv‡b GB `Av cvV Ki‡Zb|Ó (eLvix 844)

Av‡iKwU `Av:

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ

D”PviY: menv-নাকাল্লা-û¤§v Iqv wenvgw`Kv Iqv Zvev-iv KvmgKv Iqv ZvÔAv-jv- RvÏKv Iqv jv-Bjv-nv MvBi“K|

“হে আল্লাহ! তুমি পাক পবিত্র, সকল প্রশংসা †ZvgviB Rb¨| †Zvgvi bvg gwngvwšZ, †Zvgvi mËv AwZ D‡”P cwZwôZ Ges Zwg Qvov Bev`‡Zi †hvM¨ †Kvb Bjvn †bB|Ó

**nv`xm:** Ave mাইদ খুদরী (রাঃ) বলেন, রাসূলুল্লাহ (mv:) mvjvZ ïi“i ci GB `AvwU cvV Ki‡Zb|

(bvmvqx 899; wZiwgwR 243; Ave `vD` 776)

Av‡iKwU `Av:

وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَوَاتِ وَالأَرْضَ حَنِيفًا مُسْلِمًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ إِنَّ صَلاَتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ لاَ شَرِيكَ لَهُ وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ

D”PviY: “অজ্জাহ্তু অজ্হিয়া লিল্লাযী ফাত্বারাস mvgv-Iqv-wZ Iqvj AviØv nvbxdvg gmwjgv, Iqvgv- Avbv wgbvj gkwiKxb, Bbv mvjv-Zx Iqv bmKx Iqv gvnBqv-Bqv Iqv gvgv-তী লিল্লা-wn iwweŸj ÔAvjvgxb, jv- kvixKvjvn Iqv wehvwjKv DwgiZ Iqv Avbv AvDqvjj gmwjgxb|Ó

ÒAwg †mB gnvb mËvi w`‡K GKwbófv‡e Avgvi gL wdiw”Q whwb mwó K‡i‡Qb AvKvk I cw_ex Ges Awg gkwiK‡`i Aš—f³ bB| wbðqB Avgvi mvjvZ, Avgvi Kievbx, Avgvi Rxeb I আমার মরণ একমাত্র বিশ্বজগতের রব আল্লাহর Rb¨| Zvi †Kvb kixK †bB, Avi GB Rb¨B Awg Aw`ó n‡qwQ Ges Awg gmwjg‡`i Aš—f³|Ó

nv`xm: Avjx Be‡b Avex Zv‡je (iv:) e‡jb, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) যখন সালাতে দvov‡Zb ZLb

ZvKex‡i Zvnixgvi ci Dc‡iv³ `AvwU cvV Ki‡Zb| (gmwjg 1848; Ave `vD` 760; wZiwgwR 3421; bvmvqx 897)

i“Ki Zvmexn:

سُبْحَانَ رَبِّىَ الْعَظِيمِ

D”PviY: menv-bv iwweŸÔAvj ÔAvhxg|

ÒAvgvi gnvb i‡ei cwe Î Zv eYbv KiwQ|Ó

**nv`xm:** হুযাইফা (রাঃ) বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) i“K‡Z GB ZvmexnwU wZbevi cvV Ki‡Zb| (gmwjg 1850; Ave `vD` 781; Be‡b gvRvn 888; wZiwgwR 261; bvmvqx 1069)

Av‡iKwU Zvmexn:

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِى

D”PviY: Òmenv-নাকাল্লা-û¤§v ieŸvbv- Iqv বিহাম্দিকা, আল্লা-û¤§vM wdijx|Ó

“হে আল্লাহ! আমাদের রব! আপনার পূত পবিত্রতা ঘোষণা করি (আপনার প্রশংসা সহ) হে আল্লাহ! Avcwb Avgv‡K gvd Ki“b|Ó

**nv`xm:** Av‡qkv (iv:) †_‡K ewY©ত, রাসূলুল্লাহ (mv:) i“K‡Z Ges wmR`vq GB `AvwU cvV Ki‡Zb|Ó (eLvix 794; gmwjg 1113; Ave `vD` 877; bvmvC 1046)

Av‡iKwU Zvmexn:

سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ رَبُّ الْمَلاَئِكَةِ وَالرُّوحِ

D”PviY: ÒmeŸûb KÏmb ieŸj gvjv-BKwZ Iqvi iƒn|Ó

Ògvjv‡qKe›` Ges i“ûj K`m (wReivBj Av.) Gi ie ¯^xq mËvq Ges ¸Yvejx‡Z cweÎ|Ó

**nv`xm:** আয়েশা (রাঃ) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (mv:) i“K‡Z Ges wmR`vq GB `AvwU cvV Ki‡Zb|Ó (Ave `vD` 872; bvmvC 1047; gmwjg 1119)

Av‡iKwU Zvmexn:

سُبْحَانَ ذِي الْجَبَرُوتِ وَالْمَلَكُوتِ وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْعَظَمَةِ

D"PviY: menv-bv whj Rvevi~fwZ Iqvj gvjvKwZ Iqvj wKiwiqv-wq Iqvj ÔAvhgwZ|

"পাক পবিত্র সেই মহান আল্লাহ, whwb wecj kw³i AwaKvix, wekvj mvgvR¨, weivU †MŠie, Mwigv Ges AZj¨ gn‡Zi AwaKvix|Ó

**nv`xm:** AvId Be‡b gv‡jK Avj AvkRvC e‡jb, GK iv‡Z আমি রাসূলুল্লাহ (সাঃ) এর সাথে mvjvZ Av`vq Ki‡Z `vovjvg| mvjv‡Z রাসূলুল্লাহ (সাঃ) দীর্ঘ রুকু করলেন এবং উপরো³ `AwU cvV Ki‡jb| (Ave `vD` 873; bvmvqx 1049)

i"K n‡Z `vov‡bvi `Av:

سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ

D"PviY: সামি'আল্লা-û wjgvb nwg`vn|

“আল্লাn †mB e¨w³i K_v ï‡bb †h Zvi cksmv K‡i|Ó

**nv`xm:** আবদুল্লাহ ইবনে ওমর (রাঃ) বলেন, আমি রাসূলুল্লাহ (সাঃ) কে সালাত পড়তে দেখলাম; mvjv‡Zi ïi“‡Z, i“Ki Zvmex‡ni mgq Ges i“K n‡Z gv_v DVv‡bvi mgq wZwb Dfq nvZ Kva eivei DVv‡jb Ges i“K n‡Z DVvi mgq Dc‡iv³ ZvmexnwU cvV Ki‡Zb| (eLvix 735; Ave `vD` 722)

i“K †_‡K †mvRv `wo‡q covi `Av:

رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ

D”PviY: ieŸvbv- Iqv jvKvj nvg`, nvg`vb KvQxivb ZvBwq¨evb gev-ivKvb dxwn|

Ò‡n Avgv‡`i ie! Avcbvi Rb¨ A‡bK †ekx cksmv| cweÎ I eiKZgq cksmv|Ó

**nv`xm:** widvAvÕ Be‡b iv‡dÕ (iv:) e‡jb, GK`v রাসূলুল্লাহ (সাঃ) সালাত পড়ানো অবস্থায় এক ব্যি³ i“K †_‡K D‡V Dc‡iv³ `AvwU cvV Ki‡jv| সালাত শেষে রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বললেন, তোমাদের g‡a¨ †K GB `AvwU co‡jv? †jvKwU ej‡jv, আমি! রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বললেন, আমি দেখলাম cvq †ZwÎk Rb †d‡ikZv GB `AvwU Av‡M wjLvi Rb¨ cwZ‡hvMxZv Ki‡Q| (eLvix 799; gmwjg 1385; Ave `vD` 770; bvmvqx 1062)

‡mR`vi Zvmexn:

سُبْحَانَ رَبِّىَ الأَعْلَى

D”PviY: menv-bv iwe¨Avj AvÕjv-|

ÒAvgvi m‡ev”P i‡ei cweÎZv eYbv KiwQ|Ó

**nv`xm:** হুযাইফা (রাঃ) বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) †mR`v‡Z GB ZvmexnwU wZbevi cvV Ki‡Zb|

(gmwjg 1850; Ave `vD` 781; Be‡b gvRvn 888; wZiwgwR 261; bvmvqx 1069)

Av‡iKwU Zvmexn:

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِى

D”PviY: Òmenv-নাকাল্লা-û¤§v ieŸvbv- Iqv বিহাম্‌দিকা, আল্লা-û¤§vM wdijx|Ó

“হে আল্লাহ! আমাদের রব! আপনার পূত পwelZv †NvlYv Kwi (Avcbvi cksmv সহ) হে আল্লাহ! Avcwb Avgv‡K gvd Ki“b|Ó

**nv`xm:** আয়েশা (রাঃ) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (mv:) i“K‡Z Ges wmR`vq GB `AvwU cvV Ki‡Zb|Ó (eLvix 794; gmwjg 1113; Ave `vD` 877; bvmvC 1046)

Av‡iKwU Zvmexn:

سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ رَبُّ الْمَلائِكَةِ وَالرُّوحِ

D"PviY: Òme¨ûb KÏmb ie¨j gvjv-BKwZ Iqvi i/û|Ó
Ògvjv‡qKe› ` Ges i"ûj K`m (wReivBj Av.) Gi ie ¯xq mËvq Ges ¸Yvejx‡Z cweÎ|Ó
**nv`xm:** আয়েশা (রাঃ) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (mv:) i"K‡Z Ges wmR`vq GB `AvwU cvV Ki‡Zb|Ó (Ave `vD` 872; bvmvC 1047; gmwjg 1119)
Av‡iKwU Zvmexn:

اللَّهُمَّ لَكَ سَجَدْتُ وَبِكَ آمَنْتُ وَلَكَ أَسْلَمْتُ سَجَدَ وَجْهِيَ لِلَّذِي خَلَقَهُ وَصَوَّرَهُ وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ تَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ

D"PviY: আল্লা-û¤§v jvKv mvRv`Z, Iqv weKv Av-gvbZ, Iqv jvKv AvmjvgZ, mvRv`v ARnx লিল্লাযী খালাক্বাহু, ওয়া mvIIqvivû, Iqv kv°v

mvgÔAvû Iqv evmvivû, Zvev-রাকাল্লা-û Avnmvbj Lv-wjKxb|Ó

“হে আল্লাহ! আমি আপনারই জন্য সিজদা করেছি, Avcbvi cwZB Cgvb G‡bwQ, Avcbvi Rb¨B wb‡R‡K m‡c w`‡qwQ, Avgvi gL gÛj (Avgvi mgM †`n) wmR`vq AebwgZ †mB gnvb mËvi Rb¨ whwb Dnv‡K mwó K‡i‡Qb Ges mmgwšZ AvKwZ w`‡q‡Qb Ges Dnvi KY I Dnvi P¶ উদ্ভিন্ন করেছেন, মহামহিমান্বিত আল্লাহ সর্বোত্তম móv|Ó

nv`xm: ÒAvjx Be‡b Avex Zv‡je (iv:) †_‡K বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) সিজদার সময় এই দুআটি cvV Ki‡Zb| (gmwjg 1848; bvmvC 1125; wZiwgwR 3423; Be‡b gvRvn 1054)

Av‡iKwU Zvmexn:

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذَنْبِي كُلَّهُ دِقَّهُ وَجِلَّهُ وَأَوَّلَهُ وَآخِرَهُ وَعَلاَنِيَتَهُ وَسِرَّهُ

D"PviY: "আল্লা-হুম্মাগ ফিরলী যামবী কুল্লাহু, দিক্কাহু ওয়া জিল্লাহু, ওয়া আওওলাহু ওয়া আ-wLivû, Iqv ÔAvjv-wbqvZvû Iqv wmiivû|Ó

"হে আল্লাহ! আমার সমস ¸bvn ¶gv K‡i w`b, †QvU ¸bvn, eo ¸bvn, Av‡Mi ¸bvn, c‡ii ¸bvn, cKvk¨ Ges †Mvcb ¸bvn|Ó (gmwjg 1112)

`B †mR`vi gvSLv‡b covi `Av:

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَارْحَمْنِي وَاجْبُرْنِي وَاهْدِنِي وَعَافِنِي وَارْزُقْنِي

D"PviY: "আল্লা-û¤§vM wdij× Iqvi nvgb× IqvR eib× Iqvi dvÔb× Iqvn w`b× IÔAv-wdb× Iqvi hKb×|Ó

“হে আল্লাহ! আপনি আমাকে ক্ষমা করুন, আমার cwZ `qv Ki“b, m”QjZv `vb Ki“b, D”P ghv`v `vb Ki“b, †n`v‡qZ `vb Ki“b, m¯Zv `vb Ki“b Ges wiwRK c`vb Ki“b|Ó

**nv`xm:** Be‡b AveŸvm (iv:) †_‡K ewYZ, ivmjল্লাহ (সাঃ) দুই wmR`vi gvSLv‡b Dc‡iv³ `AwU cvV Ki‡Zb| (Ave `vD` 850; wZiwgwR 284)

†ZjvIqv‡Zi wmR`vq covi `Av:

سَجَدَ وَجْهِي لِلَّذِي خَلَقَهُ وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ بِحَوْلِهِ وَقُوَّتِهِ

D”PviY: “সাজাদা ওয়াজ্হী লিল্লাযী খালাক্বাহু ওয়া kv°v mvgÔAvû Iqv evmvivû wenvIwjnx Iqv KDIqvwZnx|Ó

ÒAvgvi mËv †mB mËvi mvg‡b bZ n‡jv whwb Zv‡K mwó K‡i‡Qb, Zvi keY kw³ I `wó kw³ `vb K‡i‡Qb wbR ¶gZv I kw³‡Z|Ó

**nv`xm:** “রাসূলুল্লাহ (সাঃ) রাতের বেলায় †Zjvlqv‡Zi wmR`vq Dc‡iv³ `AvwU evi evi cvV Ki‡Zb|Ó (Ave `vD` 1416; Be‡b bvmvC 1128; wZiwgwR 3425)

‡bvU: i“K-‡mR`v Ae¯’vq KiAvb †ZjvlqvZ Ki‡eb bv| (gmwjg 1102; Ave `vD` 876; bvmvqx 1045)

Zvkvnû`:

التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

D”PviY: ÒAvËwnq¨v-তু লিল্লা-nx, Iqvm mvjvIqv-Z IqvZ ZvBwq¨ev-Z, Avm mvjv-g ‘আলাইকা আইয়্যুহান্ নাবিয়্যু ওয়া রাহমাতুল্লাহী

Iqv evivKv-Zn, Avm mvjv-g ÔAvjvBbv- Iqv ÔAvjv ÔBev-দিল্লাহিস সা-লেহীন, আশ্‌হাদু আল্লা-Bjv-হা ইল্লাল্লা-û Iqv Avknv` Avbv gnv¤§v`vb ÔAve`n Iqv ivmjn|Ó

ÒhveZxq †gŠwLK, ˆ`wnK I Aw_K Bev`Z আল্লাহর জন্য। হে (মহান) নবী! আপনার প্রতি সালাম এবং আল্লাহর রহমত ও বরকত (বর্ষিত) হোক। সালাম আমাদের প্রতি এবং আল্লাহর †bKKvi ev›`v‡`i cwZ, Awg mv¶¨ w`w”Q †h, এক আল্লাহ ব্যতিত অb¨ †Kvb Bjvn †bB| Ges Awg Avil mv¶¨ w`w”Q †h, gnv¤§` (mv:) Zvi ev›`v I ivmj|Ó

**nv`xm:** আবদুল্লাহ ইবনে মাসউদ (রাঃ) বলেন Avgiv mvjv‡Zi (ˆeV‡K) AvËwnq¨vZ ......ejZvg, ZLb Avgv‡`i G‡K Aci‡K সালামও করতাম। রাসূলুল্লাহ (সাঃ) তা শুনে

Avgv‡`i Dc‡iv³ `AvwU wk¶v w`‡jb Ges ej‡jb †Zvgiv Gi/c Ki‡j Avmgvb I hgx‡b আল্লাহর সকল নেককার বান্দাকে যেন তোমরা mvjvg Ki‡j| (mnxn eLvix 1202; Be‡b gvRvn 902; wZiwgwR 289; bvmvqx 1162)

mvjvZ ÔAvjvb bvex (`i“`):

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ

D"PviY: "আল্লা-হুম্মা সাল্লি 'আলা- gnv¤§vw`I Iqv ÔAvjv Av-wj gnv¤§v` Kvgv- সাল্লাইতা ÔAvjv- Beiv-nxgv Iqv ÔAvjv- Awj Beiv-nxg ইন্নাকা হামীদুম্ মাজীদ। আল্লা-û¤§v ev-wiK ÔAvjv gnv¤§vw`I Iqv ÔAvjv Av-wj gnv¤§v` Kvgv- ev-

ivKZv ÔAvjv- Beiv-nxgv Iqv ÔAvjv- Awwj Beiv-nxg BbvKv nvgx`g gvRx`|Ó

Ò‡n আল্লাহ! আপনি মুহাম্মদ (সাঃ) এর উপর এবং gnv¤§` (mv:) Gi eskai‡`i Dci ingZ elY Ki"b, †hi¨c Avcwb Beivnxg (Av:) Ges Zvi eskai‡`i Dci ingZ elY K‡i‡Qb| wbðq Avcwb AwZ cksmwmZ, AZ¨š— ghv`vi AwaKvix|

হে আল্লাহ! মুহাম্মদ (mv:) Ges gnv¤§` (mv:) Gi eskai‡`i Dci †Zgwb eiKZ `vb Ki"b †hgwb Avcwb eiKZ `vb K‡i‡Qb Beivnxg (Av:) Ges Zvi eskai‡`i Dci| wbðq Avcwb AwZ cksmwmZ, AwZ ghv`vi AwaKvix|Ó

**nv`xm:** Kve Be‡b Ôউজরা আল্লাহর রাসূল (সাঃ) †\_‡K mvjvZ (`i"`) wkL‡Z PvB‡j wZwb GB `AvwU wk¶v †`b| (eLvix 3370)

`Av gvÔQiv:

mvjv‡Zi †klvs‡k `i“‡`i c‡i covi `Av:

اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ظُلْمًا كَثِيرًا وَلَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ فَاغْفِرْ لِي مَغْفِرَةً مِنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِي إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ

D”PviY: “আল্লা-û¤§v Bbx hvjvgZ bvdmx hjgvb KvQxiv-, Iqvjv- ইয়াগ্ফিরুয্ যুনূবা ইল্লা আন্তা, dvMwdi jx gvMwdivZvg wgb ÔBbw`Kv Iqvi nvgbx BbvKv AvbZvj Mvdi“i ivnxg|Ó

“হে আল্লাহ! আমি নিজের উপর অনেক যুলুম K‡iwQ| Zwg Qvov †KD ¸bvn gvd Ki‡Z cvi‡e bv| AZGe †Zvgvi c¶ †_‡K Avgv‡K m¤úYi“‡c ¶gv K‡i `vI| Avgv‡K `qv Ki| wbðq Zwg ¶gvkxj `qvevb|Ó

**nv`xm:** “আবু বকর (রাঃ) রাসূলুল্লাহ (সাঃ) এর wbKU Av‡e`b Ki‡jb, Avgv‡K Ggb GKwU `Av

wk¶v w`b hv Awg mvjv‡Zi wfZ‡i cvV Ki‡Z cvwi| ZLb ivmjল্লাহ (সাঃ) তাকে উপরো³ `AvwU wk¶v †`b|Ó (eLvix 834)

`Av‡q KbZ:

اللَّهُمَّ اهْدِنِى فِيمَنْ هَدَيْتَ وَعَافِنِى فِيمَنْ عَافَيْتَ وَتَوَلَّنِى فِيمَنْ تَوَلَّيْتَ وَبَارِكْ لِى فِيمَا أَعْطَيْتَ وَقِنِى شَرَّ مَا قَضَيْتَ فَإِنَّكَ تَقْضِى وَلاَ يُقْضَى عَلَيْكَ وَإِنَّهُ لاَ يَذِلُّ مَنْ وَالَيْتَ وَلاَ يَعِزُّ مَنْ عَادَيْتَ تَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَيْتَ

D”PviY: “আল্লা-û¤§vnw`bx dxgvb nv`vCZ, Iqv ÔAv-wdbx dxgvb ÔAv-ফাঈত, ওয়া তাওয়াল্লানী ফীমান তাওয়াল্লাঈত, ওয়া বা-wiKjx dxgv AvÔZvCZ, Iqv wKbx kvtiv gv- KvhvCZ, dvBbvKv ZvKhx Iqv jv- BqKhv- ÔAvjvCK, Bbvn jv- ইয়াযিল্লু মাওঁ ওয়া-jvCZ, Iqv jv-

BqvÔBhh gvb ÔAv-`vCZ, Zvev-ivKZv iveŸvbv Iqv ZvÔAv-jvCZ|Ó

“হে আল্লাহ! তুমি যাদের সুপথ দেখিয়েছ, আমাকে Zv‡`i g‡a¨ MY¨ K‡i mc_ †`LvI| hv‡`i‡K Zwg gvd K‡iQ, Avgv‡K Zv‡`i g‡a¨ MY¨ K‡i gvd K‡i `vI| Zwg hv‡`i AwffveK n‡qQ, Zv‡`i g‡a¨ MY¨ K‡i Avgvi AwffveK n‡q hvI| Zwg Avgv‡K hv `vb K‡iQ, Zv‡Z eiKZ `vI| Zwg †h dqmvjv K‡i †i‡LQ, Zvi Awbó n‡Z Avgv‡K evPvI| †Kbbv Zwg †h wm×všÍ w`‡q _vK, Zvi wei{‡× †KD wm×všÍ w`‡Z cv‡i bv| Zwg hvi mv‡_ eÜZ ivL, †m †Kvbw`b m¤§vwbZ n‡Z cv‡i bv| †n Avgv‡`i cwZcvjK! Zwg eiKZgq I m‡ev”P|Ó

`jxj: Ònvmvb Be‡b Avjx (iv:) †_‡K ewYZ, রাসূলুল্লাহ (সা:) আমাকে বিতরের সালাতে পড়ার

Rb¨ D³ `AvwU wk¶v w`‡q‡Qb|Ó (Ave `vD` 1427; wZiwgwR 464; Be‡b gvRvn 1178; bvmvC 1744)

Kb‡Zi Av‡iv GKwU `Av:

اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْتَعِينُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ ، وَنُؤْمِنُ بِكَ وَنُثْنِي عَلَيْكَ الْخَيْرَ ، وَلاَ نَكْفُرُكَ ، وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَفْجُرُكَ ، اللَّهُمَّ إِيَّاكَ نَعْبُدُ ، وَلَكَ نُصَلِّي وَنَسْجُدُ ، وَإِلَيْكَ نَسْعَى وَنَحْفِدُ ، نَرْجُو رَحْمَتَكَ وَنَخْشَى عَذَابَكَ ، إِنَّ عَذَابَكَ الْجِدَّ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ.

**nv`xm:** “আব্দুল্লাহ ইবনে মাসউদ (রা:) কুনুত wnmv‡e Dc‡iv³ `AvwU wk¶v w`‡Zb|Ó (gmvbv‡d Be‡b Avex kvqev 6893)

Kb‡Zi Av‡iKwU `Av:

اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْتَعِينُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنُثْنِي عَلَيْكَ الْخَيْرَ ، وَلاَ نَكْفُرُكَ ، وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَفْجُرُكَ ، اللَّهُمَّ إِيَّاكَ نَعْبُدُ ،

وَلَكَ نُصَلِّي وَنَسْجُدُ ،وَإِلَيْكَ نَسْعَى وَنَحْفِدُ ، نَرْجُو رَحْمَتَكَ وَنَخْشَى عَذَابَكَ ،إِنَّ عَذَابَكَ الْجِدَّ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ.

**nv`xm:** ÒAve Avãi ingvb e‡jb Avgv‡`i‡K Be‡b gvmD` (iv:) weZ‡ii Kb‡Zi Rb¨ Dc‡iv³ `AvwU wk¶v w`‡q‡Qb|Ó (gmvbv‡d Be‡b Avex kvqev 6965)

‡bvU: ÒweZ‡ii mvjv‡Z `Av‡q KbZ wn‡m‡e Avgiv GZw`b †hB `AvwU c‡o G‡mwQ, c‡iv `AvwU ûeû GKwU mnxn nv`x‡mi g‡a¨ cvIqv hvq wb| Z‡e wewfbœ nv`x‡m wewQbœfv‡e wewfbœ অংশ উল্লেখ রয়েছে। তাছাড়া বিতরের কুনুত m¤ú‡K nv`x‡m A‡bK¸‡jv `Av ewY©Z n‡q‡Q| Zv‡Z eSv hvq †h, gjZ: †e‡Z‡ii Rb¨ wbaw©iZ †Kvb `Av †bB| nv`x‡m ewY©Z †h †Kvb `Av

co‡jB Pj‡e| G m¤ú‡K nv`x‡mi cwm× wKZve gmvbvd Be‡b Avex kvqev‡Z GKwU Aa¨v‡qi wk‡ivbvg †`Iqv n‡q‡Q:

مَن قَالَ : لَيْسَ فِي قُنُوتِ الْوِتْرِ شَيْءٌ مُؤَقَّتٌ

A_vr: Òhviv e‡j weZ‡ii Kb‡Zi wbawiZ †Kvb `Av †bBÓ| AZ:ci wZwb Beivnxg (i:) †_‡K mb` mn eYbv K‡ib:

حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ ، قَالَ : أَخْبَرَنَا مُغِيرَةُ ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ ، قَالَ : لَيْسَ فِي قُنُوتِ الْوِتْرِ شَيْءٌ مُؤَقَّتٌ ، إِنَّمَا هُوَ دُعَاءٌ وَاسْتِغْفَارٌ.

ÒweZ‡ii Kb‡Zi Rb¨ wbw`ó †Kvb wKQ †bB, IUv †Zv †Kej gvÎ `Av I Bw¯Mdvi (ZvB †h †Kvb `Av co‡jB Pj‡e| g°v-gw`bvi BgvgMYmn mKj Avie BgvgMY weZ‡ii Kb‡Zi `Avq nv`x‡m eWYZ A‡bK¸‡jv `Av

GKÎ K‡i c‡o _v‡Kb| GgbwK KL‡bv AvavN›Uv-†cŠ‡b GKN›Uv chš— `Av K‡i _v‡Kb|) (gmvbv‡d Be‡b Avex kvqev 6966)

mvjv‡Z Iqvm Iqvmv n‡j cvV Kivi `Av:

أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ

D"PviY: ÔAvÔEhwবল্লাহি মিনাশ্ শায়ত্বা-wbi ivRxg|Ó

"আমি বিতাড়িত শয়তান থেকে আল্লাহর নিকট Avkq cv_Yv KiwQ|Ó

**nv`xm:** Dmgvb Be‡b Avej Avm (iv:) †\_‡K বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বলেছেন, mvjv‡Z Iqvm Iqvmv mwóKvix kqZv‡bi bvg n‡"Q ÔwLbwheÕ hLb †m †Zvgv‡`i g‡a¨ Iqvm Iqvmv mwó Kivi †Póv Ki‡e ZLb Dc‡iv³ `AwU cvV Ki‡e|Ó (gmwjg 5868)

bdj mvjv‡Z wmR`vi g‡a¨ cvV Kivi `Av:

اللَّهُمَّ أَعُوذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوبَتِكَ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْكَ لاَ أُحْصِى ثَنَاءً عَلَيْكَ أَنْتَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلَى نَفْسِكَ

D"PviY: "আল্লা-û¤§v AvÔEh wewiØv-Kv wgb mvLwZKv Iqv wegÔAv-dv-wZKv wgb ÔDKewZK, Iqv AvÔEhweKv wgbKv jv- Dnmx Qvbv-Avb ÔAvjvBKv, AvbZv Kvgv- AvQbvBZv ÔAvjv-bvdwmK|

"হে আল্লাহ! আমি আশ্রয় চাই আপনার AmšwÓ †_‡K Avcbvi mšwói gva¨‡g, Avi Awg Avcbvi wbKU Avkq PvB Avcbvi Mhe †_‡K ¶gvi gva¨‡g| Avcbvi cksmv Mbbv †kl Kiv hv‡e bv| Avcwb †mB cksmvi †hvM¨, †hB cksmv Avcwb wb‡Ri Rb¨ wb‡R K‡i‡Qb|Ó

**nv`xm:** ÒAv‡qkv (iv:) e‡jb, GKw`b iv‡Z Awg রাসূলুল্লাহ (সাঃ) ‹K †mR`viZ Ae¯'vq Dc‡iv³ `AvwU cvV Ki‡Z †`Ljvg|Ó (gmwjg 1118; Ave `vD` 879; wZiwgwR 3493)

B‡¯ÍLvivi mvjv‡Zi `Av:

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْتَخِيرُكَ بِعِلْمِكَ وَأَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ وَأَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيمِ فَإِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَا أَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَلَا أَعْلَمُ وَأَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هَذَا الْأَمْرَ خَيْرٌ لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أَمْرِي فَاقْدُرْهُ لِي وَيَسِّرْهُ لِي ثُمَّ بَارِكْ لِي فِيهِ وَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هَذَا الْأَمْرَ شَرٌّ لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أَمْرِي فَاصْرِفْهُ عَنِّي وَاصْرِفْنِي عَنْهُ وَاقْدُرْ لِي الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ ثُمَّ أَرْضِنِي

D"PviY: "আল্লা-û¤§v Bbx AvmZvLxi"Kv weÔBjwgK, Iqv Av¯ÍvKw`i"Kv we K`ivwZK, Iqv

AvmAvjKv wgb dvØwjKvj ÔAvhxg, dvBbvKv ZvKw`i“ Iqvjv- AvKw`i“, Iqv ZvÔjvg Iqvjv- আ‘লামু, ওয়া আন্‌তা ‘আল্লা-মূল গুয়ূব, আল্লা-û¤§v Bb KbZv ZvÔjvg Avbv nv-hvj Avgiv Lvqi“b jx dx Øxbx Iqv gvÔAv-kx Iqv ÔAv-wKewZ Avgix dvK`iû jx Iqv Bqvm wmiû jx, Q¤§v ev-wiK jx dxn, Iqv Bb KbZv ZvÔjvg Avbv nv-hvj Avgiv kvii“b jx dx Øxbx Iqv gvÔAv-kx Iqv ÔAv-wKewZ Avgix dvmwidû ÔAvbx Iqvmwidbx ÔAvbû, IqvK`iv jxq¨vj Lvqiv nvBQ Kv-bv, Q¤§v AviwØbx |Ó

“হে আল্লাহ! আমি তোমার জ্ঞানের উছিলায় তোমার Kv‡Q Kj¨vY Ges †Zvgvi kw³i e‡`Š j‡Z †Zvgvi Kv‡Q kw³ Kvgbv KiwQ| Avi †Zvgvi Kv‡QB †Zvgvi gnv`vb Kvgbv KiwQ| KviY Zwg kw³i AwaKvix Avi Awg †gv‡Ul kw³ ivwLbv,

Avi Zwg meB Rvb A_P Avwg wKQB Rwbbv, আর তুমি তো অদৃশ্যেরও জ্ঞানী। তাই হে আল্লাহ! Zwg hw` Rvb †h Avgvi GB KvRUv Avgvi `wbqv I Av‡Liv‡Zi Dfq RM‡Zi Rb¨ Ges cwiYv‡g g½j n‡e Zvn‡j H Kv‡Ri kw³ Avgv‡K `vb Ki Ges Zv Avgvi Rb¨ mnR K‡i `vI| AZ:ci Zv‡Z Avgvi Rb¨ eiKZ `vI| Avi hw` Zwg Rvb †h Avgvi GB KvRUv Avgvi Rb¨ g›` n‡e Avgvi Øx‡bi I `wbqvex Rxe‡bi Ges †kl cwiYv‡g Zvn‡j Zv Avgvi †_‡K `‡i mwi‡q `vI Ges Avgv‡KI Zv †_‡K `‡i ivL| Avi Avgv‡K fvj Kv‡Ri Dci ¶gZvevb Ki, Zv †hLv‡bB _vKK bv †Kb| AZ:ci Zv Øviv Avgv‡K mšó K‡i `vI|Ó

‡bvU: GB `Avő covi mgq Ônvhvj Avgivő k‡ãi স্থানে ঐ কাজটির নাম উল্লেখ করতে হবে যার জন্য Bw¯Lviv Kiv n‡e|

**nv`xm:** “জাবের (রাঃ) বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) যে †Kvb wec‡` co‡j Avgv‡`i `B ivKvAvZ mvjvZ Av`vq K‡i Dc‡iv³ `AvwU co‡Z e‡j‡Qb|Ó (eLvix 6382; Ave `vD` 1540; Be‡b gvRvn 1383; wZiwgwR 480)

mvjvg wdiv‡bvi c‡ii `Av mgn:

diR mvjv‡Zi c‡i Bgvg-g³vw` wg‡j mw¤§wjZ fv‡e `ÕnvZ Z‡j cPwjZ gbvRvZ GKwU ¯xKZ we`AvÕZ| KiAvb I mnxn nv`x‡m Gi †Kvb Aw¯Z নেই। রাসূলুল্লাহ (সাঃ) নিজে বা তvi †Kvb mvnvex diR mvjv‡Zi c‡i G ai‡bi †Kvb gbvRvZ K‡ib bvB| eZgv‡bI g°v-g`xbvmn Avie we‡k GB gbvRv‡Zi †Kvb cPjb †bB| GwU fviZ e‡li GK †kYxi we`AvÕZx Av‡jg‡`i ‰Zix Kiv GKwU gbMov we`AvÕZx Avgj| Avi †hLv‡bB †Kvb we`AvÕZ Abc‡ek K‡i †mLvb †_‡KB H cwigvb mbvZ D‡V hvq| hv Avi KL‡bv wd‡i Av‡m bv| KiAvb-mbvni Abmvix mKj Zv I nx`ev`x gmwjg fvB-†evb‡`i DwPZ mKj cKvi we`AvÕZ‡K eRY K‡i mbvZ‡K cwZôv Kivi msMv‡g wb‡qvwRZ nIqv|

ZvB Avmb! diR mvjv‡Zi c‡i gbvRvZ bvgK বিদআ’তকে বর্জণ করে রাসূলুল্লাহ (সাঃ) এর সুন্নাত Avgj‡K cwZôv Kwi| diR mvjv‡Zi c‡i রাসূলুল্লাহ (সাঃ) থেকে বর্ণিত সহীহ আমল ও দুআ mgn wb‡g c`Ë n‡jv:

GK: mvjvZ †kl K‡i mv‡_ mv‡_ GKevi cvV Ki‡e:

اَللّٰهُ اَكْبَرْ

D”PviY: “আল্লা-û AvKevi|

“আল্লাহ সর্বপেক্ষা মহান।”

nv`xm: ÒBe‡b AveŸvm (iv:) †_‡K ewYZ, Avgiv তাকবির বা ‘আল্লাহু আকবার’ ধ্বণি শুনে বুঝতাম যে রাসূলুল্লাহ (সাঃ) এর সালাত শেষ হয়েছে।”
(eLvix 842; Ave `vD` 1004; gmwjg 1344)

GB nv`x‡mi Dci wfwË K‡i RvgvÔAv‡Zi mv‡_ সালাত আদায় করা শেষে ইমাম ও মুসল্লী সকলেই উচ্চস্বরে একবার ‘আল্লাহু আকবার’ পাঠ করবে।

`B:

أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

D”PviY: “আস্‌তাগফিরুল্লা-হ, আস্‌তাগফিরুল্লা-n, আস্‌তাগফিরুল্লv-n|

“আমি আল্লাহর নিকট ক্ষমা প্রার্থণা করছি।”

**nv`xm:** সাওবান (রাঃ) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (mv:) mvjvZ †k‡l Dc‡iv³ `AvwU co‡Zb| (gmwjg 1362; Be‡b gvRvn 924; wZiwgwR 298; bvmvC 1336)

wZb:

اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلاَمُ وَمِنْكَ السَّلاَمُ تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجَلاَلِ وَالإِكْرَامِ

D"PviY: "আল্লা-û¤§v AvbZvm mvjv-g Iqv wgbKvm mvjv-g, Zvev-ivKZv Bqv- hvj Rvjv-wj Iqvj BKiv-g|Ó

"হে আল্লাহ! আপনিই শান্তি, Avcbvi †_‡KB Av‡m kvwš—| eiKZgq Avcwb, †n ghv`v I m¤§v‡bi gvwjK!Ó (gmwjg 1362; Be‡b gvRvn 924; wZiwgwR 298; bvmvC 1336)

**nv`xm:** সাওবান (রা:) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (mv:) mvjvZ †k‡l Dc‡iv³ `AvwU co‡Zb| (gmwjg 1362; Be‡b gvRvn 924; wZiwgwR 298; bvmvC 1336)

mnxn nv`x‡m `AvwU GZUKB| KiAvb I mnxn nv`x‡m ewYZ `Av mgn cvV Kivi mgq †hfv‡e ewYZ n‡q‡Q †mfv‡eB Kiv DwPZ| wb‡Ri c¶ †_‡K evov‡bv Kgv‡bv DwPZ bv| eû gmwR‡`i Bgvg mv‡ne‡`i‡K mnxn nv`x‡m ewYZ GB `AvwUi mv‡_ A‡bK wKQ ms‡hvRb Ki‡Z †kvbv

hvq †h¸‡jv eRY Kiv DwPZ| diR mvjv‡Zi c‡i GB `AwU chš— c‡o Bgvg mv‡ne D‡V †h‡Z cv‡ib|

Pvi:

اللَّهُمَّ أَعِنِّى عَلَى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ

D"PviY: "আল্লা-û¤§v AvÔBbx ÔAvjv- whKwiKv Iqv ïKwiKv Iqv ûmwb ÔBev-`wZK|Ó

"হে আল্লাহ! আপনাকে স্বরণ করার জন্য, আপনার ïKwiqv Av`vq Kivi Rb¨ Ges Avcbvi Bev`Z m›`ifv‡e Av`vq Kivi Rb¨ Avgv‡K mvnvh¨ Ki"b|Ó

**nv`xm:** ÒgAvR Be‡b Rvevj (iv:) †\_‡K ewYZ, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বললেন, হে মুআজ! আল্লাহর Kmg Awg †Zvgv‡K fvjevwm| Gici Zv‡K Dc‡iv³ `AwU wk¶v w`‡jb Ges ej‡jb Zwg

c‡Z¨K mvjv‡Zi ci GB `AwU co‡e|Ó (Ave `vD` 1524; bvmvC 1302)

cvP:

لاَإِلَهَ إِلاَّاللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ اللَّهُمَّ لاَمَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلاَ مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ وَلاَ يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ

D"PviY: Òjv- Bjv-হা ইল্লাল্লা-û Iqvn`vû jv-kvixKv jvn, jvûj gjK Iqv jvûj nvg` Iqv ûqv ÔAvjv- কুল্লি শাইয়িন Kv`xi, আল্লা-û¤§v jv gv-wbÔAv wjgv- AvÔZvBZv Ijv- gÔwZqv wjgv-gvbvÔZv Ijv- BqvbdvÔD hvj RwÏ wgbKvj RvÏ|

"আল্লাহ ব্যতিত ইবাদতের যোগ্য কোন ইলাহ †bB| wZwb GKK| Zvi †Kvb kixK †bB| mKj ivRZ ZviB| mg¯— cksmvi AwaKvix wZwbB|

তিনি সব কিছুর উপর ক্ষমতাশালী। হে আল্লাহ! Avcwb hv w`‡Z Pvb Zv †iva Kivi †KD †bB Ges Avcwb hv †iva K‡ib Zv †`qvi †KD †bB| †Kvb m¤ú`kvjx e¨w³i m¤ú` †Kvb DcKvi Ki‡Z cv‡i bv Avcbvi ingZ e¨ZxZ|Ó

**nv`xm:** ÒgAvweqv Be‡b mwdqvb (iv:) †_‡K বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (সা:) প্রত্যেক সালাতে সালাম wdiv‡bvi ci GB `AvwU cvV Ki‡Zb|Ó (eLvix 6330)

Qq:

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْبُخْلِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ أَنْ أُرَدَّ إِلَى أَرْذَلِ الْعُمُرِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ

D”PviY: “আল্লা-û¤§v Bbx AvÔEhweKv wgjvb eLwj, Iqv AvÔEhweKv wgbvj Rewb Iqv

AvôEhweKv wgb Avb DivÏv Bjv- Avihwjjl Dgi, Iqv AvôEhweKv wgb ôAvhv-wej Kei|Ó

“হে আল্লাহ! আমি আপনার নিকট Avkq cv_Yv KiwQ KcbZv, Kvci“lZv Ges AwaK evaK¨ †_‡K| Awg Avcbvi Avkq cv_Yv KiwQ Ke‡ii Avhve †_‡K|Ó

**nv`xm:** “সা‘আদ (রাঃ) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (mv:) c‡Z¨K mvjv‡Zi ci GB `AwU cvV Ki‡Zb|Ó (wZiwgwR 3567)

mvZ:

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ

D”PviY: “আল্লা-û¤§v Bbx AvôEhweKv wgbvj Kdwi Iqvj dvKwi Iqv ôAvhv-wej Kvewi|Ó

“হে আল্লাহ! আমি আপনার কাছে কুফুরি, দারিদ্রতা I Ke‡ii Avhve †_‡K Avkq Kvgbv Kwi|Ó

**nv`xm:** “রাসূলুল্লাহ (সাঃ) প্রতি সালাতের পরে wbqwgZ fv‡e Dc‡ii `Av wU cvV Ki‡Zb|Ó (bvmvC 5480)

AvU:

لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَلاَ نَعْبُدُ إِلاَّ إِيَّاهُ لَهُ النِّعْمَةُ وَلَهُ الْفَضْلُ وَلَهُ الثَّنَاءُ الْحَسَنُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ

D”PviY: Òjv- Bjv-হা ইল্লাল্লা-û Iqvn`vû jv-kv-ixKv jvû, jvûj gjK Iqv jvûj nvg` Iqv ûqv ÔAvjv- কুল্লি শাইয়িন ক্বাদীর, jv- nvIjv Iqvjv- KDওয়াতা ইল্লা বিল্লাহি, লা-Bjv-nv ইল্লাল্লা-û Iqv jv- না‘বুদু ইল্লা- Bq¨v-û, jvûb wbÔgvZ, Iqv jvûj dvØj, Iqv jvûm Qvbv-Dj

nvmvb, jv-Bjv-হা ইল্লাল্লা-û gLwjQxbv jvû`ì Øxb, Iqv jvI Kwinvj Kv-wdiƒb|Ó
“আল্লাহ ব্যতিত ইবাদতের যোগ্য কোন ইলাহ †bB| wZwb GKK| Zvi †Kvb kixK †bB| mKj ivRZ¡ ZviB| mg¯Í cksmvi AwaKvix wZwbB| wZwb me wKQi Dci ¶gZvkvjx| ¸bv‡ni †_‡K wdiv‡bvi I Bev`‡Zi Dci kw³ c`vb Kivi ক্ষমতা আল্লাহ ব্যতিত অন্য কারো নেই। আল্লাহ Qvov †Kvb mZ¨ gvÕe` †bB| wZwb e¨wZZ Ab¨ Kv‡iv AvbMZ¨ Avgiv Kwi bv| mKj wbqvgZ, mKj AbMn †Kej gvÎ ZviB, mKj DËg প্রশংসা কেবল মাত্র তারই অধিকার। আল্লাহ ছাড়া †Kvb mZ¨ gvÕe` †bB Avgiv Zvi Rb¨B Øxb‡K LvwU Kwi hw`I Kv‡diMY Zv AcQ›` K‡i|Ó

nv`xm: Ave hev‡qi (i:) †_‡K ewYZ Be‡b hev‡qi (iv:) cwZ mvjv‡Zi mvjvg wdiv‡bvi ci

Dc‡iv³ `AvwU cvV Ki‡Zb Ges wZwb ej‡Zb যে, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) প্রত্যেক সালাতের পর Dc‡iv³ `AvwU D”P¯^‡i cvV Ki‡Z|Ó (gmwjg 1371; bvmvqx 1339)

bq:

لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

D”PviY: Òjv- Bjv-হা ইল্লাল্লা-û Iqvn`vû jv- kvixKv jvû, jvûj gjK Iqv jvûj nvg` Iqv ûqv ÔAv jv- কুল্লি শাইয়িন ক্বাদীর ।Ó

“আল্লাহ ব্যতিত ইবাদতের যোগ্য কোন ইলাহ †bB| wZwb GKK| Zvi †Kvb kixK †bB| mKj ivRZ ZviB| mg¯— cksmvi AwaKvix wZwbB| wZwb me wKQz Dci ¶gZvkvjx|Ó

nv`xm: ÒAve ûivBiv (iv:) †_‡K ewY©Z, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বলেছেন, যে ব্য³ cwZ mvjv‡Zi

ci 33 evi menv-নাল্লাহ ৩৩ আলহামদুলিল্লাহি ৩৩ বার আল্লাহু আকবার এবং শেষে উপরো³ `AwU 1 evi co‡e Zvi Avgj bvgvq mg‡`i ফেনা পরিমান গুনাহ থাকলেও আল্লাহ (সুবঃ) তা ¶gv K‡i w`‡eb|Ó (gmwjg 1380)

`k:

اللَّهُمَّ إني أسألُكَ عِلْماًنافعاً ، وَرِزْقاًطَيِّباً ، وَعَمَلاً مُتَقَبَّلاً

D”PviY: “আল্লা-û¤§v Bbx AvmAvjKv ÔBjgvb bv-wdÔAv-, Iqv wihKvb Zwq¨ev-, Iqv ÔAvgvjvb gZvKveevjv-|Ó

“হে আল্লাহ! আমি আপনার নিকট উপকারী ইলম, nvjvj wiwhK Ges MnY‡hvM¨ Avgj cv_Yv KiwQ|Ó

**nv`xm:** “রাসূলুল্লাহ (সাঃ) ফজরের সালাতের mvjvg wdiv‡bvi ci Dc‡iv³ `AwU cvV Ki‡Zb|Ó (Be‡b gvRvn 925)

GMvi: Kve Be‡b DRivn (iv:) †_‡K ewYZ, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বলেছেন, কিছু মুআক্কিবাত (কোন wKQi c‡i hv cvV Kiv nq) i‡q‡Q †h G¸‡jv co‡e ev Avgj Ki‡e †m KL‡bv ewÂZ n‡e bv| Avi †m gAvw°evZ¸‡jv n‡jv, cwZ diR সালাতের পরে ৩৩ বার তাসবীহ (সুবহানাল্লাহ) ৩৩ বার তাহমীদ (আলহামদুলিল্লাহ) ৩৪ বার তাকবীর (আল্লাহু আকবার)। (gmwjg 1377)

evi: আবু উমামা (রাঃ) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (mv:) e‡j‡Qb, c‡Z¨i diR mvjv‡Zi ci AvqvZj Kimx cvV Kvixi Rvbv‡Z c‡ek Kivi Rb¨ Avi †Kvb evav _v‡K bv gZ¨ e¨ZxZ| (bvmvC Keiv 9928)

‡Zi: ÒDKev Be‡b Av‡gi (iv:) †_‡K ewYZ, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) আমাদেরকে প্রত্যেক সালাতের

ci Ômiv dvjvKÕ Ges Ômiv bvmÕ covi Av‡`k w`‡Zb|Ó **(Ave `vD` 1525)**

‡PŠÏ: †e‡Z‡ii mvjv‡Z mvjvg wdiv‡bvi ci wZb evi cvV Ki‡e:

سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ

D”PviY: menv-bvj gwwjwKj KÏm|

ÒAwWg cweÎZv eYbv KiwQ gnvb ivRwaivR I cweÎZg mËvi|Ó GB `Avi ci wZb evi D”P¯‡i wb‡æi `AwU cvV Ki‡e:

رَبِّ الْمَلاَئِكَةِ وَالرُّوحِ

D”PviY: Òiwe¦j gvjv-BKwZ Iqvi i|n|Ó

Ò‡n gvjv‡qKv Ges wReixj (Av:) Gi ie|Ó

**nv`xm:** উবাই ইবনে কা'ব (রাঃ) বলেন, রাসূলুল্লাহ (mv:) weZ‡ii mvjv‡Z mvjvg wdiv‡bvi ci D³ `Av `wU wZbevi K‡i cvV Ki‡Zb| (Ave `vD` 1432; bvmvqx 1700; mbv‡b `vivKZbx 1679)

cÂg Aa¨vq

لاستعاذة wewfbœ wec‡`-আপদে আল্লাহর নিকট cvbvn PvIqv

wec‡`, gwme‡Z, `:†L, K‡ó আল্লাহর কাছে Avkªq PvIqvi `Av:

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكَسَلِ وَالْهَرَمِ وَالْمَغْرَمِ وَالْمَأْثَمِ اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ النَّارِ وَفِتْنَةِ النَّارِ وَفِتْنَةِ الْقَبْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ وَشَرِّ فِتْنَةِ الْغِنَى وَشَرِّ فِتْنَةِ الْفَقْرِ وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ اللَّهُمَّ اغْسِلْ خَطَايَايَ بِمَاءِ الثَّلْجِ وَالْبَرَدِ وَنَقِّ قَلْبِي مِنَ الْخَطَايَا كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الْأَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ وَبَاعِدْ بَيْنِي وَبَيْنَ خَطَايَايَ كَمَا بَاعَدْتَ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ

D”PviY: “আল্লা-û¤§v Bbx AvÔEhweKv wgbvj Kvmwj Iqvj nviwg Iqvj gvMiwg Iqvj gvAvছামি। আল্লা-û¤§v Bbx AvÔEhweKv wgb ÔAvhv-web bv-i, Iqv wdZbwZb bvi, Iqv wdZbwZj Kvewi, Iqv Avhv-wej Kvewi| Iqv kviwi wdZbwZj wMbv-, Iqv kviwi wdZbwZj dvKwi, Iqv wgb kviwi wdZbwZj gvmxwn` দাজ্জাল। আল্লা-û¤§vMwmj LvZv-Bqv-qv wegv-Bm mvjwR, Iqvj evivw`, Iqv bwš° Kvjwe wgbvj LvZv-Bqv- Kvgv BDbvš°vQ Qvlej AveBqv` wgbv` `vbvm| Iqv ev-ÔB` evBbx Iqv evBbv LvZv-Bqv-qv Kvgv- ev-ÔAv`Zv evBbvj gvkwiwK Iqvj gvMwie|Ó

“হে আল্লাহ! আমি আপনার নিকট আশ্রয় চাই AjmZv, AwZ evaK¨, F‡Yi †evSv Ges ¸bv‡ni থেকে। হে আল্লাহ! আমি আপনার নিকট আশ্রয়

PvB Rvnvbv‡gi Avhve, Rvnvbv‡gi wec`, Ke‡ii cwi¶v, Ke‡ii Avhve, abvX¨Zvi †drbv, `wi‡`i †dZbv Ges gvmx‡n `v¾v‡ji Awbó থেকে। হে আল্লাহ! আপনি আমার গুনাহগুলোকে eid Ges wkwk‡ii cwb w`‡q a‡q w`b| Avgvi Kje‡K ¸bvn †_‡K cwi®vi K‡i w`b †hfv‡e mv`v Kvco‡K gqjv †_‡K cwi®vi Kiv nq| Avgvi Ges Avgvi ¸bvn ¸‡jvi gv‡S GB cwigvb `iZ mwó K‡i w`b †hiKg `iZ Avmgvb I Rwg‡bi gv‡S|Ó

dwhjZ: আয়েশা রাঃ বলেন, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) এই `AwU †ekx †ekx co‡Zb| (eLvix 6375; bvmvqx 5492)

AvZ¥ïw×i `Av:

للَّهُمَّ إِنِّى أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَالْجُبْنِ وَالْبُخْلِ

وَالْهَرَمِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ اللَّهُمَّ آتِ نَفْسِى تَقْوَاهَا وَزَكِّهَا أَنْتَ

خَيْرُ مَنْ زَكَّاهَا أَنْتَ وَلِيُّهَا وَمَوْلاَهَا اللَّهُمَّ إِنِّيْ أَعُوذُ بِكَ مِنْ عِلْمٍ لاَ يَنْفَعُ وَمِنْ قَلْبٍ لاَ يَخْشَعُ وَمِنْ نَفْسٍ لاَ تَشْبَعُ وَمِنْ دَعْوَةٍ لاَ يُسْتَجَابُ لَهَا

D”PviY: “আল্লা-û¤§v Bbx AvôEhweKv wgbvj ôAvRwh, Iqvj Kvmwj, Iqvj Rewb, Iqvj eLwj, Iqvj nvivg, Iqv ôAvhv-wej Kewi| Avল্লা-û¤§v Av-wZ bvdmx ZvKIqv-nv-, Iqv hw°nv-, Avšv LvBi“ gvb hv°v-nv-, Avšv Iwjq¨nv Iqv gvIjv-nv-, আল্লা-û¤§v Bwb AvôEhweKv wgb ôBjwgb jv- BqvbdvôD, Iqv wgb Kvjweb jv BqvLkvôD, Iqv wgb bvdwmb jv ZvkevôD, Iqv wgb `vôAvIqwZb jv BqmZvRv-e|Ó

Ò‡n আল্লাহ! আমি আপনার নিকট আশ্রয় চাইছি A¶gZv, AjmZv, Kvci“lZv, KcYZv, AwZ

বার্ধক্য এবং কবরের আযাব থেকে। হে আল্লাহ! Avgvi Aš—i‡K ZvKIqv `vb Ki“b Ges Zv cwiï× K‡i w`b KviY AvcwbB DËg cwiï×Kvix| AvcwbB bd‡mi AwffveK I মাওলা। হে আল্লাহ! আমি আপনার নিকট আশ্রয় cv_Yv KiwQ Ggb Bjg †_‡K hv †Kvb DcKvi †cŠQvq bv, Ggb Aš—র থেকে যা আল্লাহর ভয়ে fxZ nq bv, Ggb bdm †_‡K hv cwiZß nq bv Ges Ggb `Av †_‡K hvi cwZ mvov †`Iqv nq bv|Ó

dwhjZ: hv‡q` Be‡b AviKvg (iv:) †_‡K ewYZ wZwb e‡jb, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) এই `AwU cvV Ki‡Zb| (gmwjg 7081)

e` Avg‡ji Awbó n‡Z evPvi `Av:

اللَّهُمَّ إِنِّى أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا عَمِلْتُ وَمِنْ شَرِّ مَا لَمْ أَعْمَلْ

D"PviY: "আল্লা-û¤§v Bbx AvôEhweKv wgb kviwi gv-ôAwgjZ IqwgbkvIwi gv-jvg Avôgvj|Ó

"হে আল্লাহ! আমি আপনার নিকট Avkq Pvw"Q hv Avgj K‡iwQ Zvi Awbó †_‡K Ges hv Avgj Kwiwb Zvi Awbó †_‡K|Ó

dwhjZ: আয়েশা (রাঃ) বলেন রাসূলুল্লাহ (সাঃ) GB `AwU †ekx †ekx cvV Ki‡Zb| (Ave `vD` 1552)

PviwU ¶wZ †_‡K gyw³i `Av:

اللَّهُمَّ إِنِّى أَعُوذُ بِكَ مِنَ الأَرْبَعِ مِنْ عِلْمٍ لاَ يَنْفَعُ وَمِنْ قَلْبٍ لاَ يَخْشَعُ وَمِنْ نَفْسٍ لاَ تَشْبَعُ وَمِنْ دُعَاءٍ لاَ يُسْمَعُ

D"PviY: "আল্লা-û¤§v Bbx AvÔEhweKv wgbvj Avievwq, wgb ÔBjwgb jv-BqvbdvÔq, Iqv wgb Kvjweb jv- BqvLkvÔq Iqv wgb bvdwmb jv-ZvkevÔq Iqwgb `ÔAv-Bb jv-qmgvÔq|Ó

"হে আল্লাহ! আমি আপনার নিকট চারটি জিনিষ †_‡K Avkq cv_Yv KiwQ: Ggb Bjg †_‡K hv উপকার পৌঁছায় না, এমন ক্বলব থেকে যা আল্লাহর f‡q fxZ nq bv, Ggb gb †_‡K hv Zwß nq bv Ges Ggb `Av †_‡K hv Kej Kiv nq bv|Ó

**nv`xm:** ÒAve ûivBiv (iv:) †\_‡K ewYZ wZwb e‡jb, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) এই দুআটি পাঠ Ki‡Zb|Ó (Ave `vD` 1550)

¶avi Kó †_‡K gyw³i `Av:

اللَّهُمَّ إِنِّى أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْجُوعِ فَإِنَّهُ بِئْسَ الضَّجِيعُ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْخِيَانَةِ فَإِنَّهَا بِئْسَتِ الْبِطَانَةُ

D”PviY: আল্লা-û¤§v Bwb AvôEhweKv wgbvj Rôwq, dvBbvû weÕQvØ ØvRxôq, Iqv AvôEhweKv wgbvj wLqv-bwZ, dvBbvnv- weÕQwZj weZv-bvn|Ó

“হে আল্লাহ! আমি আপনার কাছে ক্ষুধা থেকে cvbvn PvB, †Kbbv Dnv gvivZ¥K ¶wZKi aivkqKvix Ges Awg †Zvgvi Kv‡Q †LqvbZ †_‡K cvbvn PvB, †Kbbv Dnv eo gvivZ¥K †Mvcb †ivM|Ó

**nv`xm:** “রাসূলুল্লাহ (সাঃ) মাঝে মধ্যে এই দুআটি co‡Zb|Ó (Ave `vD` 1549; bvmvqx 5473; Be‡b gvRvn 3354)

K‡qKwU KwVb †ivM †_‡K gw³i `Av:

اللَّهُمَّ إِنِّى أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْبَرَصِ وَالْجُنُونِ وَالْجُذَامِ وَمِنْ سَيِّئِ الأَسْقَامِ

D”PviY: “আল্লা-û¤§v Bbx AvôEhweKv wgbvj

evivwm Iqvj Rbwb Iqvj Rhv-wg Iqv wgb mvwq¨Bj AvmKv-wg|Ó

“হে আল্লাহ! আমি আপনার নিকট আশ্রয় প্রার্থণা KiwQ †kZ‡ivM, D¤§v`bv †ivM, Kô‡ivM I mKj cKvi †ivM-e¨vwa †_‡K|Ó

nv`xm: Òivmলুল্লাহ (সাঃ) এই দুআটি পড়তেন।”

(Ave `vD` 1556)

`:PwiÎ †_‡K gyw³i `Av:

اللَّهُـمَّ إنـيأعُـوذُ بـكَ مِـنْ مُنْكَـرَاتِ الأَخْـلاقِ وَالأَعْمـالِ وَالأَهْوَاءِ

D"PviY: “আল্লা-û¤§v Bbx AvÔEhweKv wgb gbKviv-wZj AvLjv-K Iqvj AvÔgv-wj Iqvj Avn I-qv|Ó

“হে আল্লাহ! আমি আপনার নিকট আশ্রয় প্রার্থণা KiwQ mKj cKvi g› ` PwiÎ, g› ` KvR Ges g› ` cewË †_‡K|Ó

nv`xm: “রাসূলুল্লাহ (সাঃ) এই দুআটি পড়তেন।” (wZiwgwh 3591)

wewfb A‡½i ¶wZ †_‡K gw³i `Av:

اللَّهُمَّ إِنِّى أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ سَمْعِى وَمِنْ شَرِّ بَصَرِى وَمِنْ شَرِّ لِسَانِى وَمِنْ شَرِّ قَلْبِى وَمِنْ شَرِّ مَنِيِّى

D”PviY: “আল্লা-û¤§v Bbx AvôEhweKv wgb kviwi mvgôqx, Iqv wgb kviwi evmvix, Iqv wgb kviwi wjmv-bx, Iqv wgb kviwi Kjex, Iqv wgb kviwi gwbq¨x|Ó

“হে আল্লাহ! আমি আপনার কাছে আশ্রয় চাই Avgvi Kv‡bi Awbó, †Pv‡Li Awbó, wRnevi Awbó, g‡bi Awbó Ges we‡hi Awbó †_‡K|Ó

**nv`xm:** ÒmvKvj Be‡b ûgvB` (iv:) e‡jb, Awg রাসূলুল্লাহ (সাঃ) এর নিকট একটি দুআ শিখানোর Av‡e`b Ki‡j wZwb GB `AvwU wk¶v †`b|Ó (Ave `vD` 1553; wZiwgwh 3492; bvmvqx 5459)

AbvKvswLZ wec` n‡Z gw³i `Av:

اللَّهُمَّ إِنِّى أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَدْمِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ التَّرَدِّى وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْغَرَقِ وَالْحَرَقِ وَالْهَرَمِ وَأَعُوذُ بِكَ أَنْ يَتَخَبَّطَنِى الشَّيْطَانُ عِنْدَ الْمَوْتِ وَأَعُوذُ بِكَ أَنْ أُموتَ فِى سَبِيلِكَ مُدْبِرًا وَأَعُوذُ بِكَ أَنْ أُموتَ لَدِيغاً

D"PviY: "আল্লা-û¤§v Bbx AvÔEhweKv wgbvj nv`wg, Iqv AvÔEhweKv wgbvZ ZviväÏx, Iqv AvÔEhweKv wgbvj MviwK Iqvj nviwK Iqvj nviwg, Iqv AvÔEhweKv AvB BqvZvLveŸvZvbxqvk kvBZv-b ÔBb`vj gvIwZ, Iqv AvÔEhweKv Avb AvgZv dx mvexwjKv g`weivb Iqv AvÔEhweKv Avb AvgZv jv`xMvb|Ó

"হে আল্লাহ! আমি আপনার নিকট আশ্রয় প্রার্থণা KiwQ Ni Pvcv co †_‡K, Avkq cv_Yv KiwQ

Dci †_‡K Mwo‡q cov †_‡K, Avkq cv_Yv KiwQ W‡e hvIqv, c‡o hvIqv Ges Pig evaK¨ †_‡K, Avkq cv_Yv KiwQ gZ¨i mgq kqZv‡bi ¯úk Kiv †_‡K, Avkq cv_Yv KiwQ Avcbvi iv¯vq côc`kY K‡i cjvqYiZ Ae¯vq gZ¨eiY Kiv †_‡K Ges Avkq cv_Yv KiwQ mc `swkZ n‡q gZ¨ eiY Kiv †_‡K|Ó

nv`xm: "রাসূলূল্লাহ (সাঃ) এই দুআটি পড়তেন।"

(Ave `vD` 1554; bvmvqx 5546)

hv`-†Uvbv †_‡K gw³i `Av:

أَعُوذُ بِوَجْهِ اللَّهِ الْعَظِيمِ، الَّذِي لَيْسَ شَيْءٌ أَعْظَمَ مِنْهُ،

وَبِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ، الَّتِي لاَ يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَلاَ فَاجِرٌ،

وَبِأَسْمَاءِ اللَّهِ الْحُسْنَى كُلِّهَا, مَا عَلِمْتُ مِنْهَا وَمَا لَمْ أَعْلَمْ

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَبَرَأَ وَذَرَأَ

D”PviY: “আ‘ঊযু বিওয়াজহিল্লাহিল ‘আজীম, আল্লাযী লাইসা শাইয়ুন আ‘জমা মিনহু, ওয়া weKwjgv-তিল্লা-wnZ Zv-ggv-ত, আল্লাতি লা-BDRv-wehûbv evii“b Iqv jv- dv-wRi“b, Iqv weAvmgv-ইল্লা-wnj ûmbv- কুল্লিহা-, gv-ÔAwjgZ wgbnv- Iqv gv-jvg AvÔjvg, wgb kviwi gv-LvjvKv, Iqv evivAvÕ, Iqv hvivAv|

“আমি পানাহ চাচ্ছি ঐ আল্লাহর জাতের অসিলায়! যার থেকে বড় আর কিছু নেই এবং আল্লাহর cwicY Kwjgvi Awmjvq hvi fvj g›` †KD অতিক্রম করতে পারে না এবং আল্লাহর আসমাউল ûmbv ev mKj m›`i bv‡gi Awmjvq hvi wKQ Awg Rwb Avi wKQ Rwb bv| Awg Zvi Kv‡Q cvbvn PvB Zvi mwói Awbó †_‡K|Ó

**nv`xm:** ÒKvÕe Avnevi (iv:) e‡jb, K‡qKwU evK¨ A_vr `Av hw` Awg wbqwgZ Avgj bv

KiZvg Zvn‡j Bqvû`xiv Avgv‡K (hv`gšYv w`‡q) Mvav evwb‡q †djZ| Zv‡K ck Kiv n‡jv †mB Kwjgv¸‡jv wK? wZwb DË‡i Dc‡iv³ `AvwU †ck Ki‡jb|Ó (gAvËv‡q gv‡jK 2763)

FY gw³i `Av:

أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ الْكُفْرِ وَالدَّيْنِ

D"PviY: "আ'উযুবিল্লা-wn wgbvj Kdwi Iqv` `vCb|Ó

"আমি আল্লাহর কাছে কুফুর এবং ঋণ থেকে পানাহ PvB|Ó GKRb †jvK ck Ki‡jb, ইয়া রাসূলুল্লাহ! Avcwb FY Ges Kdi‡K GK cvল্লায় দvo করালেন? রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বললেন, হ¨v! (†Kbbv FYM¯ n‡j gvbl ax‡i ax‡i Kdwi‡Z wjß n‡q c‡i)|

**nv`xm:** "রাসূলুল্লাহ (সাঃ) উপরো³ `AvwU co‡Zb|Ó (bvmvqx 5489)

Dfq RM‡Zi Kj¨v‡bi `Av:

اللَّهُمَّ أَصْلِحْ لِي دِينِي الَّذِي هُوَ عِصْمَةُ أَمْرِي وَأَصْلِحْ لِي دُنْيَايَ الَّتِي فِيهَا مَعَاشِي وَأَصْلِحْ لِي آخِرَتِي الَّتِي فِيهَا مَعَادِي وَاجْعَلِ الْحَيَاةَ زِيَادَةً لِي فِي كُلِّ خَيْرٍ وَاجْعَلِ الْمَوْتَ رَاحَةً لِي مِنْ كُلِّ شَرٍّ

D"PviY: "আল্লা-হুম্মা আস্‌লিহ্‌লী দ্বীনী আল্লাযী û Iqv ÔBmgvZ Avgix, Iqv Avmwjnjx `bBqv-ইয়া আল্লাতী ফীহা- gvÔAv-kx, Iqv Avmwjnjx Av-খিরাতিয়াল্লাতী ফীহা- gvÔAv-`x, IqvRÔAwjj nvqv-Zv whqv-দাতান লী, ফী কুল্লি খাইরিন, IqvRÔAwjj gvIZv iv-হাতান লী মিন কুল্লি kviwib|Ó

"হে আল্লাহ! তুমি আমার দীনকে বিশুদ্ধ করে দাও hv Avgvi Kv‡Ri wbivcËv, Avgvi BnKvj‡K weï× K‡i `vI hv Avgvi RxweKv, Avgvi

ciKvj‡K weï× K‡i `vI hv Avgvi cZ¨veZY ¯’j, Avgvi Rxeb‡K mKj cKvi Kj¨vYgq Kv‡Ri Rb¨ AwZwi³ (†evbvm) wnmv‡e `vb Ki“b Ges Avgvi gZ¨‡K mKj cKvi AKj¨vYKi Kv‡Ri †_‡K gw³ wnmv‡e `vb Ki“b|Ó

nv`xm: Òরাসূলুল্লাহ (সাঃ) এই দুআটি পড়তেন।”
(gmwjg 7078)

‡n`vqv‡Zi Dci _vKvi Rb¨ `Av:

اللَّهُمَّ اهْدِنِي وَسَدِّدْنِي وَاذْكُرْ بِالْهُدَى هِدَايَتَكَ الطَّرِيقَ وَالسَّدَادِ سَدَادَ السَّهْمِ

D"PviY: "আল্লা-û¤§vnw`bx, Iqv mvwÏ`bx, IqvhKzi wejû`v wn`v-qvZvKvZ ZvixK, Iqvm mv`v-w` mv`v-`vm mvnwg|Ó

"হে আল্লাহ! তুমি আমাকে হেদায়াত দান Ki Ges Avgv‡K †mvRv K‡iv| †n`vqvZ Øviv †Zvgvi iv¯'

vi †n`vqvZ D‡Ïk¨ Avi †mvRv Kivi Øviv D‡Ïk¨ aY‡Ki gva¨‡g Zxi †mvRv Kivi gZ|Ó

**nv`xm:** “রাসূলুল্লাহ (সাঃ) আলী (রাঃ) কে এই `AwwU cvV Kwi‡q‡Qb|Ó (gmwjg 7086)

lô Aa¨vq

ZvIev-BmwZMdvi

ZvIev k‡ãi A_© Òi“R Kiv, wd‡i Avmv, cZ¨veZY Kiv, AvZ¥mgcY KivÓ|

Bmjv‡gi cwifvlvq ZvIev ejv nq: ÒB”Qvq-Awb”Qvq, †R‡b-bv †R‡b, cKv‡k¨-†Mvc‡b আল্লাহ (সুবঃ) ও রাসূলুল্লাহ (সাঃ) এর কোন Av‡`k ev wb‡la Agvb¨ Kivi ci wb‡Ri KZKv‡hi Rb¨ jw¾Z n‡q fwel¨‡Z Avi †Kvb অন্যায় না করার দৃঢ় সংকল্প করে আল্লাহর কাছে ফিরে আসা”। আর এভাবে আল্লাহর কাছে AvZ¥mgcY K‡i wbR KZKv‡hi Rb¨ web‡qi mv‡_ ¶gv cv_Yv Kiv‡K ÔBw¯MdviÕ e‡j|

¸bv‡ni Kv‡R wjß nIqv gvb‡li ¯fve| রাসূলুল্লvn (mv:) e‡jb: كُلُّ بَنِي آدَمَ خَطَّاءٌ وَخَيْرُ

الخَطّائِينَ التَوَّابُونَ ÒAv`g mšvb mevB Aciva K‡i| Z‡e Acivax‡`i g‡a¨ DËg ZvivB hviv ZvIev K‡i|Ó (wZiwgwh 2499; Be‡b gvRvn 4251; Avbvm (iv:) †_‡K ewYZ)

পবিত্র কুরআনে আল্লাহ (সুব:) ইরশাদ করেন:

يَعْمَلْ سُوءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهُ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللَّهَ يَجِدِ اللَّهَ غَفُورًا رَحِيمًا

ÒAvi †h e¨w³ g›` KvR Ki‡e wKsev wb‡Ri cwZ hjম করবে তারপর আল্লাহর কাছে ক্ষমা চাইবে, সে আল্লাহকে পাবে ক্ষমাশীল, পরম `qvj|Ó (miv wbmv 4:110)

GRb¨ †Kvb cvi-eRM ev Ab¨‡Kvb fvqv-gva¨g c‡qvRb †bB| আল্লাহ (m:) Avi I Bikv` K‡ib:

قُلْ يَا عِبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَى أَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَحْمَةِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ

Òej, Ô†n Avgvi ev›`vMY! hviv wb‡R‡`i Dci evovevwo K‡iQ (AmsL¨ ¸bvn K‡i‡Qv) †Zvgiv আল্লvni ingZ †_‡K wbivk n‡qv bv| Aek¨B আল্লvn mKj cvc ¶gv K‡i †`‡eb| wbðq wZwb ¶gvkxj, cig `qvj|Ó (miv hgvi 39:53)

আল্লাহর একটি গুনবাচক নাম হচ্ছে اَلْغَفَّارُ (AZ¨waK ¶gvKvix) Av‡iKwU bvg n‡"Q اَلْغَفُوْرُ (gnv ¶gvkxj)| ¸bvnMvi ev›`v ¶gv cv_Yv Ki‡j wZwb Zv‡K ¶gv K‡i †`b| Avi Gfv‡eB Zvi H bvg ¸‡jvi ev¯evqb N‡U| †KD hw` অন্যায় না করতো এবং আল্লাহর কাছে ক্ষমা প্রার্থণা bv Ki‡Zv Zvn‡j Zvi H bvg¸‡jv Aev¯e †_‡K যেত। আর এজন্যই রাসূলুল্লাহ (mv:) e‡j‡Qb:

وَالَّذِى نَفْسِى بِيَدِهِ لَوْ لَمْ تُذْنِبُوا لَذَهَبَ اللَّهُ بِكُمْ وَلَجَاءَ بِقَوْمٍ يُذْنِبُونَ فَيَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ فَيَغْفِرُ لَهُمْ Ò†Zvgiv hw`

¸bvn না কর, তবে আল্লাহ তোমাদের সরিয়ে w`‡eb Ges †m ¯v‡b Ggb RwZ mwó Ki‡eb hvi v ¸নাহ করবে অত:পর আল্লাহর কাছে ক্ষমা PvB‡e| ZLb wZwb I Zv‡`i ¶gv K‡i w`‡eb|Ó (gmwjg 7141; wZiwgwh 2526)

¸bvnMvi e¨w³ তাওবা করলে আল্লাহ (সুব:) AZ¨š Lwk nb| cweÎ nv`x‡m ewYZ n‡q‡Q:

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صلى الله عليه
وسلم لَلَّهُ أَشَدُّ فَرَحًا بِتَوْبَةِ عَبْدِهِ حِينَ يَتُوبُ إِلَيْهِ مِنْ
أَحَدِكُمْ كَانَ عَلَى رَاحِلَتِهِ بِأَرْضِ فَلاَةٍ فَانْفَلَتَتْ مِنْهُ وَعَلَيْهَا
طَعَامُهُ وَشَرَابُهُ فَأَيِسَ مِنْهَا فَأَتَى شَجَرَةً فَاضْطَجَعَ فِى ظِلِّهَا
قَدْ أَيِسَ مِنْ رَاحِلَتِهِ فَبَيْنَا هُوَ كَذَلِكَ إِذَا هُوَ بِهَا قَائِمَةً
عِنْدَهُ فَأَخَذَ بِخِطَامِهَا ثُمَّ قَالَ مِنْ شِدَّةِ الْفَرَحِ اللَّهُمَّ أَنْتَ
عَبْدِى وَأَنَا رَبُّكَ أَخْطَأَ مِنْ شِدَّةِ الْفَرَحِ

ÒAvbvm Be‡b gv‡jK (iv:) †_‡K ewYZ, wZwb e‡jb, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) Bikv` K‡i‡Qb, আল্লাহ (me:) Zvi ev›`vi ZvIevq †Zvgv‡`i H e¨w³ A‡c¶v I AwaK Avbw›`Z nb hvi Lv`¨ I cvbxq `e¨ wb‡q Zvi DU Rbgvbekb¨ cvš‡i nvwi‡q †M‡Q| AZ:ci †m wbivk n‡q †Kvb GK Mv‡Qi Qvqvq ï‡q coj| Ggb wbivk Ae¯vq nVvr Zvi Kv‡Q †m DUwU‡K `vovb‡bv Ae¯vq †`L‡Z †c‡q †m Gi jvMvg a‡i Avb‡›` AvZ¥nviv n‡q ejj, হে আল্লাহ! তুমি আমার বান্দা Avi Awg †Zvgvi ie| A_vr †m AwZ Avb‡›` AvZ¥nviv n‡q G ai‡Yi fj K‡i †d‡j‡Q|Ó (gmwjg 7136)

kqZv‡bi †Kškj:

ZvIev Ki‡Z †`ix Kiv Ges ¸bv‡ni Kv‡R AUj _vKv g¯eo Ab¨vq| kqZvb mvZ ai‡Yi evav-cwZeÜKZv mwói gva¨‡g gvb‡li Dci weRqx

nIqvi †Póv K‡i| GKwU evavq AcviM n‡j c‡iiwU Øviv †Póv Pvjvq| evav¸‡jv n‡”Q: (1) me‡P‡q eo evav n‡”Q: wkiK I Kdix| (2) G‡Z mdj bv n‡j, we`AvZ Z_v wekv‡mi †¶‡Î Ges bex (mv:) I Zvi mvnvex‡`i Abmi‡Yi †¶‡Î bZb bxwZ mwó Kivi gva¨‡g| (3) G‡Z I hw` mdj bv nq, ZLb Kvexiv ¸bv‡n wjß Kivi †Póv K‡i| (4) G †¶‡Î m¶g bv n‡j QwMiv ¸bv‡n wjß K‡i| (5) G‡Z I mdj bv n‡j, `wbqvex ˆea KvR †ekx cwigv‡Y Kivq| (6) GLv‡bI AcviM n‡j, AwaK dhxjZ I †ekx †bKx Av‡Q Ggb Kv‡Ri Zjbvq Kg †bKxi Kv‡Ri Øviv| (7) G‡Z I mdj bv n‡j c_åó Kivi Rb¨ Rxb I gvbli/cx kqZvb‡K Zvi wei“‡× wb‡qvM K‡i †`q|

¸bv‡ni KvR `ÕfvM wef³:

(1) Kvexiv (eo) ¸bvn| †h mg¯— Kv‡R `wbqv‡Z `Û-wewa wbavwiY Kiv Av‡Q A_ev Av‡Liv‡Z kvw¯—i agK †`qv n‡q‡Q A_ev আল্লাহর Mhe, jvÕbZ ev Cgvb _vK‡e bv Ggb K_v ejv n‡q‡Q Zv‡K Kvexiv ¸bvn e‡j| (2) mMxiv (†QvU) ¸bvn: Dnv n‡”Q Kvexivi wbg chv‡qi cvc| wewfbœ Kvi‡Y mMxiv ¸bvn Kvexiv ¸bv‡n cwiYZ n‡Z cv‡i| †hgb: †QvU ¸bv‡ni Kv‡R AUj _vKv A_ev Zv evievi Kiv ev Zv Z”Q g‡b Kiv ev ¸bv‡ni Kv‡R wjß n‡Z †c‡i Me© Kiv A_ev ¸bv‡ni KvR cKv‡k¨ Kiv|

me ai‡Yi cvc †_‡KB ZvIev Kiv Ri“ix| wKqvg‡Zi me‡kl j¶Y: cwðgvKv‡k mh© D`Z nIqv A_ev ggl Ae¯’vq gZ¨i MiMiv Avmvi ce© chš— ZvIevi `iRv Db¥³| ZvIevKvix hw`

wbR ZvIevq mZ¨ev`x nq, Z‡e Zvi cvcivkx‡K cY¨ Øviv cwieZb Kiv n‡e hw`I Zv AvKv‡ki †gNgvjvi msL¨v eivei AwaK nq|

ZvIev Kej nIqvi kZvejx:

(১) সংশ্লিষ্ট গুনাহের কাজটিেK m¤úYi‡c cwiZ¨vM Kiv| (2) KZ Aciv‡ai Kvi‡Y jw¾Z nIqv| (3) fwel¨‡Z cYivq D³ Aciv‡a wjß n‡e bv G K_vi Dci `p A½xKvi Kiv| (4) অন্যায় কাজটি যদি মানুষের অধিকার সংশ্লিষ্ট হয়, Z‡e D³ AwaKvi Zv‡`i wbKU wdwi‡q †`qv|

ZvIevi †¶‡Î gvbIPvi ¯‡i wef³:

(1) Ggb e¨w³ †h Rxe‡bi †kl wb:kvm chš— ZvIevi Dci cwZwôZ _vK‡e (†m mg¯— †QvUÑLvU gvbexq fj-åvwš— †_‡K †KD g³ bq †m¸‡jv Qvov)| ZvQvov cvcPv‡i wjß nIqvi Kíbv I KL‡bv Zvi Aš—‡i mwó n‡e bv| GUv‡KB

ejv nq Zvlevq `p _vKv| G ai‡Yi ZvlevKvix Kj¨v‡Y AMMvgx| Zvi Zvlev‡K e‡j ÔZvlev‡q bvmnvÕ ev GKwbô `p Zvlev| cweÎ KiAv‡b Bikv` n‡q‡Q:

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تُوبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَصُوحًا

Ò†n Cgvb`viMY! তোমরা আল্লাহর কাছে তাওবা Ki, LvwU Zvlev|Ó (miv Zvnixg 66:8)

যারা আল্লাহর কাছে খাঁটি তাওবা করে তারা m`¨fwgó wkïi b¨vq wb®úvc n‡q hvq| ïa ZvB bq eis Zv‡`i ¸bvn ¸‡jv‡K †bKxi Øviv cwieZY K‡i †`Iqv nq| cweÎ KiAv‡b Bikv` n‡q‡Q:

إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولَئِكَ يُبَدِّلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ إِلَى اللَّهِ مَتَابًا

ÒZ‡e †h ZvIev K‡i, Cgvb Av‡b Ges mrKg করে। পরিণামে আল্লাহ তাদের পাপগুলোকে পূণ্য Øviv cwieZb K‡i wদবেন। আল্লাহ অতীব ¶gvkxj, cig `qvjy| Avi †h ZvIev K‡i Ges সৎকাজ করে নিশ্চয় সে পরিপূর্ণভাবে আল্লাহর দিকে cZ¨veZb K‡i|Ó (miv diKvb 25:70-71)

Avi Gfv‡e hviv ZvIev K‡i cwicYfv‡e আল্লাহর দিকে প্রZ¨veZY K‡i Zv‡`i †Kvb fq-fxwZ, wPš-fvebv _v‡K bv| Zv‡`i Aši ckwš jvf K‡i| G RvZxq †jvK‡`i AvZ¥v‡K اَلنَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ (Avb bvdmyj gZgvBbvn) ev ckwšgq AvZ¥v ejv nq| G‡`i m¤ú‡K cweÎ KziAv‡b Bikv` n‡q‡Q:

يَا أَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ارْجِعِي إِلَى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَرْضِيَّةً

فَادْخُلِي فِي عِبَادِي وَادْخُلِي جَنَّتِي

Ò†n ckvš AvZ¥v! Zwg wd‡i G‡mv, †Zvgvi i‡ei cwZ mšówP‡Ë, m‡šÍvl fvRb n‡q| AZ:ci Avgvi ev›`v‡`i g‡a¨ kvwgj n‡q hvI Avi c‡ek Ki Avgvi Rvbv‡Z|Ó (miv dvRi 89:27-30)
(2) Ggb e¨w³ †h ZvIev Kivi ci †gŠwjK Avgj¸‡jv‡Z `p _v‡K| wKš cvcvPvi †_‡K g³ n‡Z cv‡i bv| Aciv‡a wjß nIqvi R‡b¨ m`p B”Qv wb‡q AMmi n‡e bv; wKš Zvicil †drbv †_‡K evP‡Z cv‡i bv wjß n‡qB hvq| hLbB G ai‡Yi wKQ N‡U hv‡e Acivaxi gZ wb‡R‡K jvÂbv w`‡e, jw¾Z n‡e Ges Ab¨v‡q wjß nIqvi hveZxq DcKiY †_‡K †e‡P _vKvi Rb¨ A½xKvi Ki‡e| G‡KB ejv nq اَلنَّفْسُ اللَّوَّامَةُ (Avb bvdmj jvDIqv-gvn) ev wZi¯‹viKvix AvZ¥v|

(3) Ggb e¨w³ †h Zvlev K‡i wKQKvj `p _v‡K| AZ:ci nVvr †Kvb ¸bv‡ni Kv‡R cewË ZwoZ n‡q wjß n‡q c‡o| A_P †m wbqwgZ fv‡e †bKKvR K‡iB Pj‡Q| hveZxq Aciv‡a Rov‡Z gb PvB‡jI Ges nv‡Zi bvMv‡j †c‡jI Zv cwiZ¨vM K‡i| wKš` /GKwU welq cewË‡K `gb Ki‡Z cv‡i bv| d‡j Zv‡Z wjß n‡q c‡o, †k‡l jw¾Z nq Ges D³ Ab¨vq AwP‡iB †Q‡o w`‡q Zvlev Kivi A½xKvi K‡i| G‡K ejv nq اَلنَّفْسُ الُمْسْئُ ُولَةُ (Avb bvdmyj gvmEjvn) wRÁwmZ AvZ¥v| Gi cwigvb fqven| †Kbbv †m AvR bq Kvj e‡j Zvlev Ki‡Z †`ix Ki‡Q| n‡Z cv‡i †m Zvlevi m‡hvM bv †c‡qB gZ¨ eiY Ki‡e| gvb‡li †kl AvgjB Zvi cwigvb wbavviY K‡i|

(4) Ggb e¨w³ †h ZvIev K‡i wKQ mgq `p _v‡K| wKš‘ cbivq `"Z Ab¨v‡q wjß n‡q c‡o, AZ:ci Ab¨vq K‡i Avd‡mvmI K‡i bv Ges ZvIev Kivi K_v g‡bI Av‡b bv| G‡KB ejv nq اَلنَّفْسُ الْاَمَّارَةُ بِالسُّوْءِ (Avb bvdmj Av¤§v-ivZ wem m-wq) ev Ab¨v‡q DØ×Kvix AvZ¥v| G সম্পর্কে আল্লাহ (সুব:) e‡jb: إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌ بِالسُّوءِ Òwbðq bvdm g›` K‡Ri wb‡`k w`‡q _v‡KÓ| Gi cwiYvg LeB fqvbK| Gi †kl cwiYwZ Lvivc nIqvi AvksKv Av‡Q| A_vr gZ¨i c‡e Zvi bmx‡e ZvIev bvI RU‡Z cv‡i| d‡j aYsm n‡q hv‡e Ges Rvnvbv‡g c‡ek Ki‡e|

Zv I ev-Bw¯Mdvi m¤úKxq wKQ `Av:

mvB‡q¨`j Bw¯Mdvi:

ـمَّ أَللَّهُ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ خَلَقْتَنِي وَأَنَا عَبْدُكَ وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ أَبُوءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَأَبُوءُ لَكَ بِذَنْبِي فَاغْفِرْ لِي فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ

D"PviY: আল্লা-û¤§v AvbZv iveŸx, jv-Bjv-nv ইল্লা- AvbZv, LvjvKZvbx, Iqv Avbv ÔAve`Kv, Iqv Avbv ÔAvjv ÔAvnw`Kv Iqv IqvÔw`Kv gvmZvZvÔZ, AvÔEh weKv wgb kviwi gv- mvbvÔZ, AveD jvKv wewbÔgwZKv ÔAvjvBq¨v, Iqv AveD jvKv wehvgex, dvMwdijx dv Bbvû jv- ইয়াগ্ফীরুয জুনূবা ইল্লা-AvbZv|Ó

"হে আল্লাহ! আপনি আমার রব, আপনি ব্যতিত Bev`‡Zi †hvM¨ †Kvb Bjvn †bB, Avcwb Avgv‡K

mwó K‡i‡Qb Ges Awg Avcbvi ev›`v| Awg mva¨vbhvqx Avcbvi mv‡_ KZ Iqv`v Aw½Kvi i¶v KiwQ| Avgvi KZ K‡gi Awbó †_‡K Avcbvi Kv‡Q Avkq Kvgbv KiwQ, Avgvi cwZ Avcbvi †bqvgZ ¯xKvi KiwQ Ges Avcbvi `iev‡i Avgvi cvcK‡gi I ¯xKv‡iw³ w`w"Q| mZivs Avcwb Avgv‡K ¶gv Ki"b, †Kbbv Avcwb Qvov cvcivkx †KnB ¶gv Ki‡Z cvi‡e bv Ges Awg Avgvi KZK‡gi mKj cKvi Awbó †_‡K Avcbvi `iev‡i Avkq wbw"Q|Ó

**nv`xm:** ÒkvÏv` Be‡b AvDm (iv:) †_‡K ewYZ রাসূলুল্লাহ (সাঃ) ইরশাদ করেছেনঃ যে ব্যি³ cY Av¯v I AvšwiK wekvm wb‡q mKv‡j GB `Av cvV Ki‡e, †m hw` H w`b mÜ¨vi Av‡M gvix hvq Zvn‡j RvbvZevmx n‡e| Avi †h e¨w³ cY Av¯v I AvšwiK wekvm wb‡q mÜ¨vq G `Av cvV Ki‡e

†m hw` H iv‡Z gviv hvq Zvn‡j †m RvbvZevmx n‡e|Ó (eLvix 6306; bvmvqx 5537; Ave `vD` 5072)

Zv I ev-Bw¯Mdv‡ii Av‡iKwU `Av:

أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ الَّذِى لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ الْحَىُّ الْقَيُّومُ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ

D"PviY: "আস্তাগ্ফিরুল্লা-হাল্লাযী লা- Bjv-nv ইল্লা হুয়াল হাইয়্যুল ক্বাইয়্যূম ওয়া আতূবু ইলাঈহ।"

"আমি ক্ষমা প্রার্থণা করছি ঐ আল্লাহর নিকট যিনি e¨wZZ Bev`‡Zi †hvM¨ †Kvb Bjvn †bB, wZwb wPiÄxe, mcwZwôZ mËv| Awg Zvi w`‡KB cZ¨veZY KiwQ|Ó

dwRjZ: †ejvj Be‡b Bqvmvi Be‡b hv‡q` (iv:) Zvi wcZv †_‡K wZwb Zvi `v`v †_‡K eYbv Kরেনঃ "রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বলেছেনঃ ‡h e¨w³ GB `Av co‡e Zvi mKj ¸bvn ¶gv K‡i †`Iqv n‡e hw`I †m h‡×i gq`vb †_‡K cjvqb K‡i _v‡K|Ó (Ave `vD` 1519; wZiwgwR 3577)

mßg Aa¨vq
i“KBqv (Svo-dK)

mv‡ci `skb:

mvc ev we”Q `skb Ki‡j miv dwZnv cvV K‡i ¶Z¯'v‡b d uw`‡e|

`jxj: eLvix 2276; wZiwgwR 2064|

Am¯'Zv:

kixi Am¯'‡eva n‡j miv BLjvm, miv bvm Ges miv dvjvK c‡o `B nv‡Zi Zvj‡Z d uw`‡q Zv g‡L gvmvn K‡i wb‡e|

**`jxj:** eLvix 5748; gmwjg 5844; Ave `vD` 3904; Be‡b gvRvn 3529|

‡dvov ev hLg:

kix‡ii †Kvb ¯'v‡b cR n‡j (†dvov n‡j) ev AvNv‡Zi Kvi‡Y ¶Z n‡j kvnv`vZ Av½wj‡Z

gwwU jwwM‡q wb‡æi `AwwU c‡o d w`‡e Ges ¶Z¯v‡b ewj‡q w`‡e| `AwwU n‡jv:

بِاسْمِ اللَّهِ تُرْبَةُ أَرْضِنَا بِرِيقَةِ بَعْضِنَا لِيُشْفَى بِهِ سَقِيمُنَا بِإِذْنِ رَبِّنَا

D"PviY: বিস্‌মিল্লা-wn ZievZ AviwØbv- weixKwZ evÔw`bv- wjqkdv- wenx mvKxgbv- weBhwb iweŸbv-|

"আল্লাহর নামে আমাদের মাটি, আমাদের মুখের থু-_ Avgv‡`i i‡ei Av‡`‡k Avgv‡`i Am¯ e¨w³‡`i m¯Zv `vb K‡i _v‡K|Ó

**`jxj:** eLvix 5745; gmwjg 5848; Ave `vD` 3897; Be‡b gvRvn 3521|

kixi e¨v_v:

kix‡ii †Kvb ¯v‡b e¨v_v n‡j †mLv‡b nvZ †i‡L তিনবার 'বিসমিল্লাহ' পাঠ করে নিম্নের দুআটি co‡e:

أَعُوذُ بِاللَّهِ وَقُدْرَتِهِ مِنْ شَرِّ مَا أَجِدُ وَأُحَاذِرُ

D"PviY: আ'ঊযুবিল্লা-wn Iqv K`iwZnx wgb kviwi gv- AwR` Iqv Dnv-whi"|

"আমি আল্লাহর নিকট এবং তাঁর শক্তির নিকট Avkq Pvw"Q Awg †hB e¨v_v Ges fq Abfe KiwQ Zvi †_‡K|Ó

`jxj: gmwjg 5867|

যেই দুআ পড়ে রাসূলুল্লাহ (সাঃ) ঝাঁড়-dK Ki‡Zb:

اللَّهُمَّ رَبَّ النَّاسِ مُذْهِبَ الْبَاسِ اشْفِ أَنْتَ الشَّافِي لَا شَافِيَ إِلَّا أَنْتَ شِفَاءً لَا يُغَادِرُ سَقَمًا

D"PviY: আল্লা-û¤§v ieŸvb bv-m, ghwnevj evÕwm, Bkwd AvbZvk kv-dx, jv- kv-ফিআ ইল্লা আন্তা wkdv-Avb, jv- BqMv-w`i" mvKvgvb|

“হে আল্লাহ! তুমি মানুষের ie, e¨wa wbeviYKvix, m¯Zv `vb K‡iv, ZwgB m¯Zv `vbKvix| Zwg e¨ZxZ Avi †KD m¯Zv `vbKvix †bB| Ggb m¯Zv `vI, hv †Kvb †ivM Aewkó iv‡L bv|Ó
**`jxj:** eLvix 5742; Ave `vD` 3892; wZiwgwR 973|

gv_v e¨v_v I Ab¨vb¨ Am¯Zv:

بِاسْمِ اللَّهِ أَرْقِيكَ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ يُؤْذِيكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ نَفْسٍ أَوْ عَيْنِ حَاسِدٍ اللَّهُ يَشْفِيكَ بِاسْمِ اللَّهِ أَرْقِيكَ.

D”PviY: বিসমিল্লা-হি আর্‌ক্বীকা মিন্‌ কুল্লি শাইয়িন ইউযীকা মিন শার্‌রি কুল্লি নাফসিন আও ‘আইনি nv-সিদিন, আল্লাহু ইয়াশফীকা বিসমিল্লা-wn AviKxKv|Ó

ÒAvj্লাহর নামে তোমাকে আমি ঝাঁড়-dK KiwQ, mKj cKvi Kó`vqK e¯ †_‡K, mKj cvYxi

অনিষ্ট থেকে অথবা হিংসুকের কুদৃষ্টি থেকে আল্লাহ †Zvgv‡K g³ করুন। আমি তোমাকে আল্লাহর bv‡g Svo-dK KiwQ|Ó

`jxj: gmwjg 5829|

Kv‡jwRiv:

আবু হুরাইরা (রাঃ) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (সা:) Bikv` K‡i‡Qb, Avj nveÿvZm mvI`vDb (Kv‡jwRiv) gZ¨ Qvov mKj †iv‡Mi wPwKrmv| (eLvix 5687, 5688; gmwjg 5896, 5899; wZiwgwR 2041)

wk½v:

আনাস ইবনে মালেক (রাঃ) বলেন, রাসূলুল্লাহ (mv:) Bikv` K‡i‡Qb, †gÔivR iRbx‡Z Awg gvjv‡qKv‡`i hZ¸‡jv gRwjk AwZµg K‡iwQ mK‡jB Avgv‡K civgk w`‡q‡Q, †n gnv¤§`! Avcwb Avcbvi D¤§Z‡K wnRvgvZ (wk½v)

jvMv‡Z Av‡`k Ki‡eb| (wZiwgwR 5052; Be‡b gvRvn 3479)
জাবের ইবনে আবদুল্লাহ (রাঃ) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বলেছেন, নিশ্চয় fk½vi g‡a¨ wPwKrmv i‡q‡Q| (eLvix 5697)

ga:

gai g‡a¨ wewfb †iv‡Mi wPwKrmv i‡q‡Q| cwe Î কুরআনে আল্লাহ (সুবঃ) ইরশাদ করেছেনঃ
ÒZvi (†gŠgwwQi) †cU †_‡K wewfb i‡Oi cvbxq (ga) wbMZ nq| Zv‡Z gvb‡li Rb¨ i‡q‡Q †iv‡Mi cwZKvi|Ó (mivbvnvj 16:69)
eû nv`x‡m ga m¤ú‡K Av‡jvPbv i‡q‡Q| রাসূলুল্লাহ (সাঃ) মধু পছন্দ করতেন Ges e‡j‡Qb DËg Jl‡ai g‡a¨ ga Ab¨Zg| (eLvix 5683)

AvÕRIqv †LRi:

রাসূলুল্লাহ (সাঃ) ইরশাদ করেছেন, যে ব্যি³ cwZw`b mKvj †ejv mvZwU AvÕRIqv †LRi (gw`bvi we‡kl GK cKvi †LRi) †Lj Zv‡K H w`b †Kvb Rv` A_ev wel ¶wZ Ki‡Z cvi‡e bv| (eLvix 5769; gmwjg 5460; Ave `vD` 3878)

hgh‡gi cwb:

Bnv mKj cwbi cavb, m‡evrKó me‡P‡q gj¨evb I AvZ¥vi wbKU me‡P‡q wcq cwb| mnxn nv`x‡m ewYZ n‡q‡Q: ÒRv‡ei (iv:) †_‡K ewYZ, wZwb e‡jb: ivmলুল্লাহ (সাঃ) ইরশাদ K‡i‡Qb, hgh‡gi cwb †h †iv‡Mi Rb¨ cvb Kiv nq Zvi Rb¨ wPwKrmv|Ó (Be‡b gvRvn 3062, gmbv‡` Avngv` 14849)

ewói cwb:

বৃষ্টির পানি আল্লাহর রহমতের পানি। পবিত্র

KiAv‡b ejv n‡q‡Q: ÒAvi Avwg Avmgvb †_‡K eiKZgq cvwb bvhxj K‡iwQ|Ó (miv Kvd 50:9)
GB আয়াতে আল্লাহ (সুবঃ) বৃষ্টির পানিকে একটি AbMহ হিসাবে উল্লেখ করেছেন। আর নিশ্চq AbMn cKvk Ki‡v nq †Kv‡bv gj¨evb wRwbm Øviv| ivmলুল্লাহ (সাঃ) বৃষ্টির পানি শরীরে gvL‡Zb| nv`x‡m ewYZ n‡q‡Q: ÒAvbvm (iv:) n‡Z ewYZ, wZwb e‡jb: Avgiv GK`v ivmলুল্লাহ (mv:) Gi m‡½ wQjvg| Avgv‡`i Mv‡q ewói cvwb co‡Z jvM‡jv| ivmলুল্লাহ (সাঃ) হাতের থেকে Kvco ¸wU‡q †dj‡jb, hv‡Z ewói cvwb Mv‡q jv‡M| Avgiv ejjvg, Bqv ivmলুল্লাহ! Avcwb GB কাজটি কেনো করলেন? রাসূলুল্লাহ (সাঃ) বললেন, †h‡nZ GwU Zvi i‡ei KvQ †_‡K m`¨ AvMgb K‡i‡Q|Ó (gmwjg 2120)

hvBZ‡bi †Zj:

hvBZ‡bi †Zj I DcKvix| nv`x‡m ewYZ n‡q‡Q: ÒAve Avmx` (iv:) n‡Z ewYZ, wZwb e‡jb: ivmলুল্লাহ (সাঃ) বলেছেনঃ 'তোমরা যাইতুনের তেল Lvl I Dnv Øviv (ki‡i) †Zj g`b Ki, wbðq Dnv eiKZgq e¶ n‡Z|Ó (gmbv‡` Avngv` 16055, 16054, Be‡b gvRvn 3319, wZiwghx 1852)

Aóg Aa¨vq

KiAvb gvRx‡` ewYZ KwZcq ¸i“ZcY `Av

¸i“ZcY †Kvb †bK Avgj Kivi mgq covi `Av:

Beivnxg (Av:) Kvev wbgvb Ae¯vq GB `Av K‡i‡Qb|

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

Ò†n Avgv‡`i ie! Avgv‡`i c¶ †_‡K Kej Ki“b| wbðq Avcwb me‡kvZv, meÁvbx|Ó (miv evKvi 2:127)

gmwR` gv`ivmv ev †Kvb cwZôvb Kivi mgq cvV Kivi `Av:

Beivnxg (Av:) Kvev wbgv‡bi mgq GB `Av c‡owQ‡jb|

رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا أُمَّةً مُسْلِمَةً لَكَ وَأَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ

Ò†n Avgv‡`i ie! Avgv‡`i‡K Avcbvi AbMZ Ki“b Ges Avgv‡`i eska‡ii ga¨ †_‡K Avcbvi AbMZ KIg evbvb| Avi Avgv‡`i‡K Avgv‡`i Bev`v‡Zi wewa-weavb †`wL‡q w`b Ges Avgv‡`i‡K ¶gv Ki“b| wbðq Avcwb ¶gvkxj, cig `qvj|Ó (m~iv evKviv 2:128)

`wbqv I Av‡LivZ Dfq Rvnv‡b Kj¨vb Kvgbvi `Av:

বায়তুল্লাহ তওয়াফ করার সময় রুকনে ইয়ামানী ও nvR‡i AvmIqv` Gi gvSLv‡bI GB `AvwU co‡Z nq|

رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

Ò†n Avgv‡`i ie! Avgv‡`i‡K `wbqv‡Z Kj¨vY `vb| Avi AvwLiv‡ZI Kj¨vY `vb Ges Avgv‡`i‡K Av¸‡bi Avhve †_‡K i¶v Ki“b|Ó (myiv evKviv 2:201)

wec`vc` I KwVb gû‡Z AUj _vKvi `Av:
RvjZ evwnbxi wei“‡× ZvjZ GB `Av K‡iwQ‡jb|

رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ

Ò†n Avgv‡`i ie! Avgv‡`i Dci ˆah †X‡j `vb, Avgv‡`i cv ̄’i ivLb Ges Avgv‡`i‡K Kv‡di RvwZi wei“‡× mvnvh¨ Ki“bÓ| (myiv evKviv 2:250)

Av‡iKwU `Av:

رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَتَوَفَّنَا مُسْلِمِينَ